This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक
हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M 1970 विषय
नाव. शुक्ल यजुर्वेद काण्वपद पाठ (अध्याय ११ - २०)
लेखक/लिपीकार —
पृष्ठ 75 काळ पूर्ण/अपूर्ण

M-1970

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

स ॥श्रीगणेशाय नमः॥श्रीसरस्वत्यै नमः॥ हरिः ॐ रायः। ते। निर्ऋत्या इति निः
नः ऋत्यै। ते। भागः। तं। जुषस्व। स्वाहा। अग्निनेत्रेभ्य इत्यग्निऽनेत्रेभ्यः। पुरःसद्भ्य देवेभ्यः।
इति पुरःसद्भ्यः। यमनेत्रेभ्य इति यमऽनेत्रेभ्यः। दक्षिणासद्भ्य इति दक्षिणास नः
भ्यः। विश्वदेवनेत्रेभ्य इति विश्वदेवऽनेत्रेभ्यः। पश्चात्सद्भ्य इति पश्चात्सः नः
भ्यः। मित्रावरुणनेत्रेभ्य इति मित्रावरुणऽनेत्रेभ्यः। वा। मरुन्नेत्रेभ्य इति
मरुत्ऽनेत्रेभ्यः। वा। उत्तरसद्भ्य इत्युत्तरसत्ऽभ्यः। सोमनेत्रेभ्य इति सोमऽने
त्रेभ्यः। देवेभ्यः। उपरिसद्भ्य इत्युपरिसत्ऽभ्यः। दुवस्वद्भ्य इति दुवस्वत्ऽभ्यः।
स्वाहा॥१॥ ये। देवाः। अग्निनेत्रा इत्यग्निऽनेत्राः। पुरःसद इति पुरःऽसदः।
यमनेत्रा इति यमऽनेत्राः। दक्षिणासद इति

दक्षिणासदः। विश्वदेवनेत्रा इति विश्वदेवऽनेत्राः। पश्चात्सद इति पश्चात्ऽस
दः। मित्रावरुणनेत्रा इति मित्रावरुणऽनेत्राः। वा। मरुन्नेत्रा इति मरुत्ऽनेत्राः।
वा। उत्तरसद इत्युत्तरऽसदः। सोमनेत्रा इति सोमऽनेत्राः। उपरिसद इत्युपरिऽस
दः। दुवस्वन्तः। तेभ्यः। स्वाहा॥२॥ अग्ने। सहस्व। पृतनाः। अभिमातीरित्य
भिऽमातीः। अप। अस्य। दुष्टरः। दुस्तर इति दुःऽतरः। तरन्। अरातीः। वर्चः। धाः।
यज्ञवाहसीति यज्ञऽवाहसि॥३॥ उपांशोरित्युपाऽअंशोः। वीर्येण। जु
होमि। हतम्। रक्षः। स्वाहा। रक्षसां। त्वा। वधाय। अवधिष्म। रक्षः। अमुष्य। त्वा।
वधाय। अमुम्। अवधिष्म। जुषाणः। अप्तुः। आज्यस्य। वेतु। स्वाहा॥४॥ अ
णा पः। देवाः। मधुमतीरिति मधुऽमतीः। अगृभ्णन्। ऊर्जस्वतीः। राजस्व इति राजः

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

दक्षाः। ऊर्मिः। असि। राष्ट्रदा इति राष्ट्रदाः। राष्ट्रं। मे। देहि। स्वाहा। २

स्वः। चितानाः। याभिः। मित्रावरुणौ। अभि। असिंचन्। याभिः। इन्द्रम्। अनयन्। अ
ति। अरातीः॥५॥ वृष्णः। ऊर्मिः। असि। राष्ट्रदा इति राष्ट्रदाः। राष्ट्रम्। मे। देहि।
स्वाहा। वृषसेन इति वृषऽसेनः॥६॥ अर्थेत इत्यर्थऽइतः। ओजस्वतीः। आपः। परिवा
हिणीः। परिवाहिनीरिति परिऽवाहिनीः। अपां। पतिः। अपाम्। गर्भः। सूर्यवर्चस
इति सूर्यऽवर्चसः। सूर्यत्वचस इति सूर्यऽत्वचः। व्रजक्षित इति व्रजऽक्षितः। वाशाः।
मांदाः। शक्वरीः। जनभृत इति जनऽभृतः। विश्वभृत इति विश्वऽभृतः। [illegible]। आ
पः। स्वाराज्ञीः। स्वराज्ञीरिति स्वऽराज्ञीः। राष्ट्रदा इति राष्ट्रऽदाः। राष्ट्रं। अमुष्मै।
दत्त॥७॥ सं। मधुमतीरिति मधुऽमतीः। मधुमतीभिरिति मधुऽमतीभिः। पृच्यं
ताम्। महि। क्षत्रं। क्षत्रियाय। वन्वानाः। अनाधृष्टाः। सीदत। सह। ओजसा। म

हि। क्षत्रं। क्षत्रियाय। दधतीः॥८॥ सविता। त्वा। प्रसवानामिति प्रऽसवानाम्। सुवताम्।
अग्निः। गृहपतीनामिति गृहऽपतीनाम्। सोमः। वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिः। वाचे। इन्द्रः।
ज्यैष्ठ्याय। रुद्रः। पशूनां। मित्रः। सत्याय। वरुणः। धर्मपतीनामिति धर्मऽपतीनाम्॥९॥
इमं। देवाः। असपत्नं। सुवध्वं। महते। क्षत्राय। महते। ज्यैष्ठ्याय। इमम्। अमुम्। अमुष्य।
पुत्रं। अमुष्याः। पुत्रं। अस्यै। विशे॥१०॥ एषः। वः। कुरवः। राजा। एषः। वः। पंचालाः। राजा।
सोमः। अस्माकं। ब्राह्मणानाम्। राजा॥११॥७॥ सोमस्य। त्विषिः। असि। अग्नये। स्वा
हा। सोमाय। सवित्रे। सरस्वत्यै। पूष्णे। बृहस्पतये॥१२॥ इन्द्राय। अंशाय। श्लोकाय।
घोषाय। भगाय। अर्यम्णे। अनिभृष्टमित्यनिऽभृष्टम्। असि। वाचः। बंधुः। तपोजा इ
ति तपःऽजाः। सोमस्य। दात्रम्। असि। स्वाहा। राजस्व इति राजऽस्वः॥१३॥ सधमादं इ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तिसधऽमादः। शुष्मिणीः। आपः। एताः। अनाधृष्टाः। अपस्यः। वसानाः। पस्त्यासु। चक्रे।
वरुणः। सधस्थमिति सधऽस्थम्। अपाम्। शिशुः। मातृतमास्विति मातृऽतमासु। अं
तरित्यन्तः ॥१४॥ क्षत्रस्य। उल्बम्। जरायु। नाभिः। योनिः। इन्द्रस्य। वार्त्रघ्नमिति वार्त्र-
घ्नम्। असि। त्वया। अयम्। वृत्रम्। वध्यात्। मित्रस्य। असि। वरुणस्य। असि ॥१५
रुजा। दृबा। क्षुपा। पात। एनम्। प्राञ्चम्। प्रत्यञ्चम्। तिर्यञ्चम्। दिग्भ्य इति दिक्ऽभ्यः। पा
ता ॥१६॥ आविः। मर्याः। आवित्त इत्याऽवित्तः। अग्निः। गृहपतिरिति गृहऽपतिः। इन्द्रः।
वृद्धश्रवा इति वृद्धऽश्रवाः। पूषा। विश्ववेदा इति विश्वऽवेदाः। आवित्तावित्याऽवित्तौ। मि
त्रावरुणौ। धृतव्रताविति धृतऽव्रतौ। आवित्ते इत्याऽवित्ते। द्यावापृथिवी इति द्यावापृथि
वी। विश्वशम्भू इति विश्वऽशम्भू। आवित्ता इत्याऽवित्ता। अदितिः। उरुशर्मेत्युरुऽशर्मा ॥१८

अवेष्टा इत्यवऽइष्टाः। दन्दशूकाः। प्राचीम्। आ। रोह। गायत्री। त्वा। अवतु। रथंतरमि
ति रथंऽतरम्। साम। त्रिवृदिति त्रिऽवृत्। स्तोमः। वसन्तः। ऋतुः। ब्रह्म। द्रविणम् ॥१७॥
दक्षिणाम्। आ। रोह। त्रिष्टुप्। त्रिस्तुबिति त्रिऽस्तुप्। त्वा। अवतु। बृहत्। साम। पंच
दश इति पंचऽदशः। स्तोमः। ग्रीष्मः। ऋतुः। क्षत्रम्। द्रविणम् ॥१८॥ प्रतीचीम्। आ। रोह।
जगती। त्वा। अवतु। वैरूपम्। साम। सप्तदश इति सप्तऽदशः। स्तोमः। वर्षाः। ऋतुः।
विट्। द्रविणम् ॥१९॥ उदीचीम्। आ। रोह। अनुष्टुप्। अनुस्तुबित्यनुऽस्तुप्। त्वा।
अवतु। वैराजम्। साम। एकविंश इत्येकऽविंशः। स्तोमः। शरत्। ऋतुः। फलम्।
द्रविणम् ॥२०॥ ऊर्ध्वाम्। आ। रोह। पङ्क्तिः। त्वा। अवतु। शाक्वररैवते इति शाक्वररैवते। २
सामनी इति सामनी। त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ। त्रिणवत्रयस्त्रिंशाविति त्रिणवत्रयस्त्रि

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ऽस्मौ। स्तोमौ। हेमन्तशिशिरौ। ऋतूइत्यृतू। वर्च्चः। द्रविणम्। प्रत्यस्तमितिप्रतिऽअस्तम्।
नमुचेः। शिरः॥२१॥ सोमस्य। त्विषिः। असि। तवेवेतितवऽइव। मे। त्विषिः। भूयात्। मृ
त्योः। पाहि। ओजः। असि। सहः। अमृतम्। असि॥२२॥ हिरण्यरूपाइतिहिरण्यऽरूपौ।
उषसः। विरोकइतिविऽरोके। उभौ। इन्द्रौ। उत्। इतः। सूर्यः। च। आ। रोहतं। वरुण।
४ मित्र। गर्त्तम्। ततः। चक्षाथाम्। अदितिम्। दि। तिं। च। मित्रः। असि। वरुणः। ४
असि। सोमस्य। त्वा। द्युम्नेन। अभि। सिंचामि। अग्नेः। भ्राजसा। सूर्यस्य। वर्चसा।
इन्द्रस्य। इन्द्रियेण। मरुताम्। ओजसा। क्षत्राणाम्। क्षत्रपतिरितिक्षत्रऽपतिः।
एधि। अति। दिद्यून्। पाहि। जानराज्यायेतिजानऽराज्याय॥२४॥ इमन्देवाः।ऽ
एषवः।ऽ।गणान्ते। प्र। पर्वतस्य। वृषभस्य। पृष्ठात्। नावः। चरन्ति। स्वसिचऽ

तिस्वऽसिचः। इयानाः। ताः। आ। अववृत्रन्। अधराक्। उदक्। ताः। अहिम्।
बुध्न्यं। अनु। रीयमाणाः। विष्णोः। विक्रमणमितिविऽक्रमणम्। विक्रान्तमिति
विऽक्रान्तम्। क्रान्तम्। असि॥२५॥ प्रजापतइतिप्रजाऽपते। न। त्वत्। एतानि। अ
न्यः। विश्वा। रूपाणि। परि। ता। बभूव। यत्कामाइतियत्ऽकामाः। ते। जुहुमः। तत्।
नः। अस्तु। वयं। स्याम। पतयः। रयीणाम्॥२६॥ रुद्र। यत्। ते। क्रिवि। परम्। ना
म। तस्मै। हुतम्। असि। अमेष्टमित्यमाऽइष्टम्। असि। स्वाहा॥२७॥ इन्द्रस्य।
वज्रः। असि। मित्रावरुणयोः। त्वा। प्रशास्त्रोरितिप्रऽशास्त्रोः। प्रशिषेतिप्र
ऽशिषा। युनज्मि। अव्यथायै। त्वा। स्वधायै। त्वा। अरिष्टः। फल्गुनः। मरुताम्। प्र
सवेनेतिप्रऽसवेन। जय। आपाम। मनसा। सम्। इन्द्रियेण॥२८॥ मा। ते। इन्द्र

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ते।वयं।तुरासाट्।अयुक्तासः।अत्रस्वना।वि।इसाम्।तिष्ठ।रथम्।अधि।यत्।वज्र
हस्तेतिवज्रऽहस्तः।आ।रश्मीन्।देव।युवसे।स्वश्वानितिसुऽअश्वान्॥२९॥अग्न
ये।गृहपतयइतिगृहऽपतये।स्वाहा।सोमाय।वनस्पतये।इन्द्रस्य।इन्द्रियाय।म
रुताम्।ओजसे।पृथिवि।मातः।मा।मा।हिंसीः।मोइतिमो।अहं।त्वाम्॥३०॥
हंसः।शुचिषत्।शुचिसदितिशुचिऽसत्।वसुः।अन्तरिक्षसदित्यन्तरिक्षऽसत्।
५ होता।वेदिषत्।वेदिसदितिवेदिऽसत्।अतिथिः।दुरोणसदितिदुरोणऽसत्। ५
नृषत्।नृसदितिनृऽसत्।वरसदितिवरऽसत्।ऋतसदित्यृतऽसत्।व्योमस
दितिव्योमऽसत्।अब्जाइत्यप्ऽजाः।गोजाइतिगोऽजाः।ऋतजाइत्यृतऽजाः।अ
द्रिजाइत्यद्रिऽजाः।ऋतं।बृहत्॥३१॥इयत्।असि।आयुः।असि।आयुः।मे।दे

हि।युङ्।असि।वर्चः।असि।वर्चः।मे।देहि।ऊर्क्।असि।ऊर्जं।मयि।धेहि।इन्द्रस्य।
वाम्।बाहूइतिबाहू।वीर्यकृताइतिवीर्यऽकृतौ।उपावहरामीत्युपऽअवहरामि॥३२॥
स्योना।असि।सुषदा।सुसदेतिसुऽसदा।क्षत्रस्य।योनिः।असि।स्योनाम्।आ।
सीद।सुषदाम्।सुसदामितिसुऽसदाम्।क्षत्रस्य।योनिम्।आ।सीद॥३२॥नि।स
साद।धृतव्रतइतिधृतऽव्रतः।वरुणः।पस्त्यासु।आ।साम्राज्यायेतिसाम्ऽराज्या
य।सुक्रतुरितिसुऽक्रतुः॥३३॥अभिभूरित्यभिऽभूः।असि।अयानाम्।एताः।
ते।पंच।दिशः।कल्पंताम्।ब्रह्मन्।त्वम्।ब्रह्मा।असि॥३४॥सविता।असि।स
त्यप्रसवइतिसत्यऽप्रसवः।वरुणः।सत्यौजाइतिसत्यऽओजाः।इन्द्रः।विशौजाः।
रुद्रः।सुशेवइतिसुऽशेवः॥३५॥प्रियंकरेतिप्रियंऽकर।श्रेयस्कर।श्रेयःऽकरेतिश्रे

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

यः ऽ कर। मयस्कर। मयः करेति मयः ऽ कर। इन्द्रस्य। वज्रः। असि। तेन। मे। रध्य॥ ३६॥
अग्निः। पृथुः। धर्मणः। पतिः। जुषाणः। अग्निः। पृथुः। धर्मणः। पतिः। आज्यस्य।
हविषः। वेतु। स्वाहा। स्वाहाकृता इति स्वाहाऽकृताः। सूर्यस्य। रश्मिभिरिति रश्मि
भिः। यतध्वम्। सज्ञातानामिति सऽज्ञातानाम्। मध्यमेस्थ्याय। मध्यमेस्थ्यायेति
मध्यमेःस्थ्याये॥ ३७॥ सवित्रा। प्रसवित्रेति प्रऽसवित्रा। सरस्वत्या। वाचा। त्वष्ट्रा।
रूपैः। पूष्णा। पशुभिरिति पशुऽभिः। इन्द्रेण। अस्मे॥ ३८॥ बृहस्पतिना। ब्रह्म
णा। वरुणेन। ओजसा। अग्निना। तेजसा। सोमेन। राज्ञा। विष्णुना। देवतया। द
शम्या। इमम्। यज्ञम्। विष्णुम्। आ। भवानि॥ ३९॥ अश्विभ्यामित्यश्विऽभ्याम्।
पच्यस्व। सरस्वत्यै। इन्द्राय। सुत्राम्णे इति सुऽत्राम्णे। पच्यस्व। वायोः। पूतः। पवि

त्रेण। प्रत्यङ्। सोमः। अतिस्रुत इत्यतिऽस्रुतः। इन्द्रस्य। युज्यः। सखा॥ ४०॥ कुवित्। अङ्ग।
यवमन्त इति यवऽमन्तः। यवम्। चित्। यथा। दान्ति। अनुपूर्वमित्यनुऽपूर्वम्। वियूयेति विऽ
यूय। इहेहेति इहऽइह। एषाम्। कृणुहि। भोजनानि। ये। बर्हिषः। नमउक्तिमिति नमःऽउक्ति
म्। न। जग्मुः। अश्विभ्यामित्यश्विऽभ्याम्। त्वा। सरस्वत्यै। इन्द्राय। सुत्राम्ण इति सुऽत्राम्णे॥
म ॥ ४१॥ युवम्। सुरामम्। अश्विना। नमुचौ। आसुरे। सचा। विपिपानेति विऽपिपाना। शुभः
पती इति पती। इन्द्रम्। कर्मस्विति कर्मऽसु। आवतम्॥ ४२॥ पुत्रमिवेति पुत्रम्ऽइव। पितरौ।
अश्विना। उभा। इन्द्र। आवथुः। काव्यैः। दंसनाभिः। यत्। सुरामम्। वि। अपिबः। शची
भिः। सरस्वती। त्वा। मघवन्निति मघऽवन्। अभिष्णक्॥ इति शुक्लयजुः काण्वपदसं
हितायामेकादशोऽध्यायः॥ ११॥ ११॥ ११॥ ॥ ॐ॥ युञ्जानः। प्रथमम्। मनः। तत्त्वाय।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सविता। धियः। अग्नेः। ज्योतिः। निचाय्येतिनिऽचाय्य। पृथिव्याः। अधि। आ। अभरत्।
॥१॥ युक्तेन। मनसा। वयम्। देवस्य। सवितुः। सवे। स्वर्ग्यायेतिस्वःऽगेयाय। शक्त्या॥२
युक्त्वाय। सविता। देवान्। स्वः। यतः। धिया। दिवम्। बृहत्। ज्योतिः। करिष्यतः। सवि
ता। प्र। सुवाति। तान्॥३॥ युजे। वाम्। ब्रह्म। पूर्व्यम्। नमोभिरितिनमःऽभिः। वि। श्लो
८ कः। एतु। पथ्येवेतिपथ्याऽइव। सूरेः। शृण्वंतु। विश्वे। अमृतस्य। पुत्राः। आ। ये। धामा ८
नि। दिव्यानि। तस्थुः॥४॥ यस्य। प्रयाणं। प्रयानमितिप्रऽयानम्। अनु। अन्ये। इ
त्। ययुः। देवाः। देवस्य। महिमानम्। ओजसा। यः। पार्थिवानि। विममइतिविऽममे।
सः। एतशः। रजांसि। देवः। सविता। महित्वनेतिमहिऽत्वना॥५॥ देव। स
वितरितिसवितः। प्र। सुव। यज्ञं। प्र। सुव। यज्ञपतिमितियज्ञऽपतिं। भगाय। दिव्यः।

गंधर्वः। केतपूरितिकेतऽपूः। केतम्। नः। पुनातु। वाचः। पतिः। वाचम्। नः। स्वदतु॥६
इमम्। नः। देव। सवितः। यज्ञम्। प्र। नय। देवाव्यमितिदेवऽअव्यम्। सखिविदमितिस
खिऽविदम्। सत्राजितमितिसत्राऽजितं। धनजितमितिधनऽजितम्। स्वर्जितमिति
स्वःऽजितं। ऋचा। स्तोमम्। सम्। अर्धय। गायत्रेण। रथंतरमितिरथंऽतरं। बृहत्। गा
यत्रवर्त्तनीतिगायत्रऽवर्त्तनि। स्वाहा॥७॥ आ। ददे। गायत्रेण। छंदसा। अंगिर
स्वत्। पृथिव्याः। सधस्थादितिसधऽस्थात्। अग्निम्। पुरीष्यम्। अंगिरस्वत्।
आ। भर। त्रैष्टुभेन। त्रैस्तुभेनेतित्रैऽस्तुभेन। छंदसा। अंगिरस्वत्॥९॥ अभ्रिः।
असि। नारी। असि। त्वया। वयम्। अग्निम्। शकेम। खनितुं। सधस्थ इतिसधऽ
स्थे। आ। जागतेन। छंदसा। अंगिरस्वत्॥१०॥ हस्ते। आधायेत्याऽधाय। सविता॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

बिभ्रत्। अग्निम्। हिरण्ययीम्। अग्नेः। ज्योतिः। निचाय्येति निऽचाय्य। पृथिव्याः। अधि।
आ। अभरत्। आनुष्टुभेन। आनुस्तुभेनेत्यानुऽस्तुभेन। छंदसा। अंगिरस्वत्॥ ११॥
प्रतूर्त्तमिति प्रऽतूर्त्तम्। वाजिन्। आ। द्रव। वरिष्ठाम्। अनु। संवतमिति सम्ऽवतम्।
दिवि। ते। जन्म। परमम्। अंतरिक्षे। तव। नाभिः। पृथिव्याम्। अधि। योनिः। इत्।
६ ॥ १२॥ युंजाथां। रासभं। युवम्। अस्मिन्। यामे। वृषण्वसू इति वृषण्ऽवसू। अग्निं।
भरंतम्। अस्मयुमित्यस्मऽयुम्॥ १३॥ योगेयोग इति योगेऽयोगे। तवस्तरमिति ६
तवःऽतरम्। वाजेवाज इति वाजेऽवाजे। हवामहे। सखायः। इंद्रम्। ऊतये॥ १४॥ प्र
तूर्वन्निति प्रऽतूर्वन्। आ। इहि। अवक्रामन्नित्यवऽक्रामन्। अशस्तीः। रुद्रस्य। गा
णपत्यमिति गाणऽपत्यम्। मयोभूरिति मयःऽभूः। आ। इहि। उरु। अंतरिक्षं। वि

इहि। स्वस्तिगव्यूतिरिति स्वस्तिऽगव्यूतिः। अभयानि। कृण्वन्। पूष्णा। सयुजेति सऽयुजा।
सह॥ १५॥ पृथिव्याः। सधस्थादिति सधऽस्थात्। अग्निम्। पुरीष्यम्। अंगिरस्व
त्। आ। भर। अच्छ। इमः। भरिष्यामः॥ १६॥ अनु। अग्निः। उषसाम्। अग्रम्। अ
ख्यत्। अनु। अहानि। प्रथमः। जातवेदा इति जातऽवेदाः। अनु। सूर्यस्य। पुरुत्रेति
पुरुऽत्रा। च। रश्मीन्। अनु। द्यावापृथिवी इति द्यावापृथिवी। आ। ततंथ॥ १७॥
आगत्येत्याऽगत्य। वाजी। अध्वानं। सर्वाः। मृधः। वि। धूनुते। अग्निं। सधस्थ इति
सधऽस्थे। महति। चक्षुषा। नि। चिकीषते॥ १८॥ आक्रम्येत्याऽक्रम्य। वाजिन्। पृ
थिवीम्। अग्निं। इच्छ। रुचा। त्वं। भूम्याः। वृत्वाय। नः। ब्रूहि। यतः। खनेम। तं। वयं॥ १९॥
द्यौः। ते। पृष्ठं। पृथिवी। सधस्थमिति सधऽस्थम्। आत्मा। अंतरिक्षं। समुद्रः। यो

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

निः। विख्येति विऽख्याय। चक्षुषा। त्वं। अभि। तिष्ठ। पृतन्यतः ॥२०॥ उत्। क्रा
मा। महते। सौभगाय। अस्मात्। आस्थानादित्याऽस्थानात्। द्रविणोदा इति
द्रविणःऽदाः। वाजिन्। आ। वयं। स्याम। सुमताविति सुऽमतौ। पृथिव्याः। अग्निं। ख
नंतः। उपस्थ इत्युपऽस्थे। अस्याः ॥२१॥ उत्। अक्रमीत्। द्रविणोदा इति द्रवि
णःऽदाः। वाजी। अर्वा। अकः। सः। लोकं। सुकृतमिति सुऽकृतं। पृथिव्याम्।
१ ततः। खनेम। सुप्रतीकमिति सुऽप्रतीकं। अग्निं। स्वरिति स्वः। रुहाणाः। अधि १
नाकं। उत्तममित्युत्ऽतमम् ॥२२॥ आ। त्वा। जिघर्मि। मनसा। घृतेन। प्रतिक्षि
यंतमिति प्रतिऽक्षियंतम्। भुवनानि। विश्वा। पृथुम्। तिरश्चा। वयसा। बृहंत
म्। व्यचिष्ठम्। अन्नैः। रभसं। दृशानम् ॥२३॥ आ। विश्वतः। प्रत्यंचम्।

जिघर्मि। अरक्षसा। मनसा। तत्। जुषेत। मर्यश्रीरिति मर्यऽश्रीः। स्पृहयद्वर्ण इ
ति स्पृहयत्ऽवर्णः। अग्निः। न। अभिमृश इत्यभिऽमृशे। तन्वा। जर्भुराणः ॥२४
परि। वाजपतिरिति वाजऽपतिः। कविः। अग्निः। हव्यानि। अक्रमीत्। दधत्।
रत्नानि। दाशुषे ॥२५॥ परि। त्वा। अग्ने। पुरम्। वयं। विप्रम्। सहस्य। धीमहि। धृ
षद्वर्णमिति धृषत्ऽवर्णम्। दिवेदिव इति दिवेऽदिवे। हंतारं। भङ्गुरावतां। भङ्गुर
वतामिति भङ्गुरऽवतां ॥२६॥ त्वं। अग्ने। द्युभिरिति द्युऽभिः। आ। सुसुक्षणिः।
अद्भ्य इत्यत्ऽभ्यः। अश्मनः। परि। वनेभ्यः। ओषधीभ्यः। नृणां। नृपत इति नृऽप
ते। जायते। शुचिः ॥२७॥ पृथिव्याः। सधस्थादिति सधऽस्थात्। अग्निम्। पुरी
ष्यम्। अङ्गिरस्वत्। खनामि। ज्योतिष्मंतम्। त्वा। अग्ने। सुप्रतीकमिति सुऽप्रती

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

४
कमितिसुऽप्रतीकं। अजस्रेण। भानुना। दीद्यतम्। शिवं। प्रजाभ्यऽइति प्रजाऽभ्यः।
अहिंसंतम्। पृथिव्याः। सधस्थादिति सधऽस्थात्। अग्निम्। पुरीष्यम्। अ
ङ्गिरस्वत्। खनामः॥२८॥ अपां। पृष्ठं। असि। योनिः। अग्नेः। समुद्रम्। अभि
तः। पिन्वमानम्। वर्द्धमानः। महान्। आ। च। पुष्करे। दिवः। मात्रया। वरिम्णा।
प्रथस्व॥२९॥ शर्म। च। स्थः। वर्म। च। स्थः। अच्छिद्रे इत्यच्छिद्रे। बहुले इति बहुले।
उभेइत्युभे। व्यचस्वतीइतिव्यचस्वती। सम्। वसाथाम्। भर्तम्। अग्निं। पुरीष्यं।
॥३०॥ सं। वसाथाम्। स्वर्विदेति स्वःऽविदा। समीचीइति समीची। उरसा। त्मना।
अग्निं। अन्तः। भरिष्यन्तीइतिभरिष्यन्ती। ज्योतिष्मंतम्। अजस्रम्। इत्।
पुरीष्यः। असि। विश्वभराइतिविश्वऽभराः। अथर्वा। त्वा। प्रथमः। निः। अमंथ
४

त। अग्ने॥३१॥ त्वां। अग्ने। पुष्करात्। अधि। अथर्वा। निः। अमन्थत। मूर्ध्नः। विश्वस्य।
वाघतः॥३२॥ तम्। ऊँ इति। त्वा। दध्यङ्। ऋषिः। पुत्रः। ईधे। अथर्वणः। वृत्रहणम्। वृ
त्रहनमितिवृत्रऽहनम्। पुरंदरमितिपुरम्ऽदरं॥३३॥ तम्। ऊँ इति। त्वा। पाथ्यः। वृषा।
सम्। ईधे। दस्युहंतममितिदस्युहन्ऽतमम्। धनंजयमितिधनम्ऽजयम्। रणेरणऽइ
तिरणेऽरणे॥३४॥ सीद। होतरिति होतः। स्वे। ऊँ इति। लोके। चिकित्वान्। साद
य। यज्ञम्। सुकृतस्येतिसुऽकृतस्य। योनौ। देवावीरितिदेवऽअवीः। देवान्। ह
विषा। यजासि। अग्ने। बृहत्। यजमाने। वयः। धाः॥३५॥ नि। होता। होतृषदने।
होतृसदनइति होतृऽसदने। विदानः। त्वेषः। दीदिवानिति दीदिऽवान्। असदत्।
सुदक्षइति सुऽदक्षः। अदब्धव्रतप्रमतिरित्यदब्धव्रतऽप्रमतिः। वसिष्ठः। सहस्र

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अरइतिसहस्रम्ऽभरः।शुचिव्रतइतिशुचिऽव्रतः।अग्निः॥३६॥सम्।सीदस्व।मह
न्।असि।रोचस्व।देववीतमइतिदेवऽवीतमः।वि।धूमम्।अग्ने।अरुषम्।मियेध्य।
सृज।प्रशस्तेतिप्रऽशस्त।दर्शतम्॥३७॥अपः।देवीः।उप।सृज।मधुमतीरितिम
धुऽमतीः।अयक्ष्माय।प्रजाभ्यइतिप्रऽजाभ्यः।तासाम्।आस्थानादित्याऽस्थाना
११ त्।उत्।जिहताम्।ओषधयः।सुपिप्पलाइतिसुऽपिप्पलाः॥३८॥सम्।ते।वायुः।
मातरिश्वा।दधातु।उत्तानायाः।हृदयम्।यत्।विकस्तमितिविऽकस्तम्।यः।देवानां। ११
चरसि।प्राणथेन।कस्मै।देव।वषट्।अस्तु।तुभ्यम्॥३९॥सुजातइतिसुऽजातः।
ज्योतिषा।सह।शर्म।वरूथम्।आ।असदत्।स्वरितिस्वः।वासः।अग्ने।विश्व
रूपमितिविश्वऽरूपम्।सम्।व्ययस्व।विभावसोइतिविभाऽवसो॥४०॥उत्।ऊँऽइ

त्यूँ।तिष्ठ।स्वध्वरेतिसुऽअध्वर।अव।नः।देव्या।धिया।दृशे।च।भासा।बृहता।
सुशुक्वनिरितिसुऽशुक्वनिः।आ।अग्ने।याहि।सुशस्तिभिरितिसुशस्तिऽभिः॥४१॥
ऊर्ध्वः।ऊँऽइत्यूँ।सु।नः।ऊतये।तिष्ठ।देवः।न।सविता।ऊर्ध्वः।वाजस्य।सनिता।यत्।
अञ्जिभिरित्यञ्जिऽभिः।वाघद्भिरितिवाघत्ऽभिः।विह्वयामहइतिविऽह्वयामहे॥४२॥
सः।जातः।गर्भः।असि।रोदस्योः।अग्ने।चारुः।विभृतइतिविऽभृतः।ओषधीषु।चित्रः।
शिशुः।परि।तमांसि।अक्तून्।प्र।मातृभ्यइतिमातृऽभ्यः।अधि।कनिक्रदत्।
गाः॥४३॥स्थिरः।भव।वीड्वङ्गइतिवीडुऽअङ्गः।आशुः।भव।वाजी।अर्वन्।पृथुः।
भव।सुषदः।सुसदइतिसुऽसदः।त्वम्।अग्नेः।पुरीषवाहणः।पुरीषवाहनइति
पुरीषऽवाहनः॥४४॥शिवः।भव।प्रजाभ्यइतिप्रऽजाभ्यः।मानुषीभ्यः।त्वम्।अ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

क्रिः। मा। द्यावापृथिवीऽइति द्यावापृथिवी। अभि। शोचीः। मा। अंतरिक्षम्। मा। वनस्प
तीन्॥४५॥ प्र। एतु। वाजी। कनिक्रदत्। नानदत्। रासभः। पत्वा। भरन्। अग्निम्।
पुरीष्यम्। मा। पादि। आयुषः। पुरा॥४६॥ वृषा। अग्निम्। वृषणम्। भरन्। अपाम्।
गर्भं। समुद्रियम्। अग्ने। आ। याहि। वीतये। ऋतम्। सत्यम्। ऋतम्। सत्यम्। अग्नि
म्। पुरीष्यम्। अङ्गिरस्वत्। भरामः॥४७॥ ओषधयः। प्रति। मोदध्वम्। अग्निम्। ए
३२ तम्। शिवम्। आयन्तमित्याऽयन्तम्। अभि। अत्र। युष्माः। व्यस्यन्निति विऽअस्य १२
न्। विश्वाः। अनिराः। अमीवाः। निषीदन्। निसीदन्निति निऽसीदन्। नः। अप। दु
र्मतिमिति दुःऽमतिम्। जहि॥४८॥ ओषधयः। प्रति। गृभ्णीत। पुष्पवतीरिति पुष्प
वतीः। सुपिप्पलाः इति सुऽपिप्पलाः। अयम्। वः। गर्भः। ऋत्वियः। प्रत्नम्। सधस्थ

म्। इति सधऽस्थम्। आ। असदत्॥४९॥ वि। पाजसा। पृथुना। शोशुचानः। बाध
स्व। द्विषः। रक्षसः। अमीवाः। सुशर्मणः इति सुऽशर्मणः। बृहतः। शर्मणि। स्याम्।
अग्नेः। अहम्। सुहवस्येति सुऽहवस्य। प्रणीतौ। प्रनीताविति प्रऽनीतौ॥५०॥
आपः। हि। स्थ। मयोभुव इति मयःऽभुवः। ताः। नः। ऊर्जे। दधातन। महे। रणाय।
चक्षसे॥५१॥ यः। वः। शिवतम इति शिवऽतमः। रसः। तस्य। भाजयत। इह। नः।
उशतीरिवेत्युशतीःऽइव। मातरः॥५२॥ तस्मै। अरम्। गमाम। वः। यस्य। क्षया
य। जिन्वथ। आपः। जनयथ। च। नः॥५३॥ मित्रः। संसृज्येति सम्ऽसृज्य। पृ
थिवीम्। भूमिम्। च। ज्योतिषा। सह। सुजातमिति सुऽजातम्। जातवेदसमि
ति जातऽवेदसम्। अयक्ष्माय। त्वा। सम्। सृजामि। प्रजाभ्य इति प्रऽजाभ्यः॥५४॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

रुद्राः। संसृज्येतिसम्ऽसृज्य। पृथिवीम्। बृहत्। ज्योतिः। सम्। ईधिरे। तेषां।
भानुः। अजस्रः। इत्। शुक्रः। देवेषु। रोचते॥५५॥ संसृष्टामितिसम्ऽसृष्टाम्।
वसुभिरितिवसुऽभिः। रुद्रैः। धीरैः। कर्मण्याम्। मृदं। हस्ताभ्याम्। मृद्वीम्। कृ
१२ त्वा। सिनीवाली। कृणोतु। ताम्॥५६॥ सिनीवाली। सुकपर्देतिसुऽकपर्दा। सु १२
कुरीरेतिसुऽकुरीरा। स्वौपसेतिसुऽओपशा। तुभ्यम्। अदिते। महि। आ। उखाम्।
दधातु। हस्तयोः॥५७॥ उखाम्। कृणोतु। शक्त्या। बाहुभ्यामितिबाहुऽभ्याम्।
अदितिः। धिया। माता। पुत्रम्। यथा। उपस्थ इत्युपऽस्थे। सा। अग्निम्। बिभर्तु।
गर्भे। आ॥५८॥ मखस्य। शिरः। असि। वसवः। त्वा। कृण्वंतु। गायत्रेण। छंदसा।
अंगिरस्वत्। ध्रुवा। असि। पृथिवी। असि। धारय। मयि। प्रजामितिप्रऽजाम्।

रायः। पोषम्। गौपत्यम्। सुवीर्यमितिसुऽवीर्यम्। सजातानितिसऽजातान्। य
जमानाय। रुद्राः। त्रैष्टुभेन। त्रैस्तुभेनेति त्रैऽस्तुभेन। अंतरिक्षं। आदित्याः। जा
गतेन। द्यौः। विश्वे। त्वा। देवाः। वैश्वानरः। कृण्वंतु। आनुष्टुभेन। आनुस्तुभेनेत्या
नुऽस्तुभेन। छंदसा। अंगिरस्वत्। ध्रुवा। असि। दिशः। असि। अदित्यै। रास्ना।
असि। अदितिः। ते। बिलम्। गृभ्णातु॥५९॥ कृत्वाय। सा। महीम्। उखाम्। मृ
ण्मयीम्। मृन्मयीमिति मृत्ऽमयीम्। योनिम्। अग्नये। पुत्रेभ्यः। प्र। अयच्छत्।
अदितिः। श्रपयान्। इति॥६०॥ वसवः। त्वा। धूपयंतु। गायत्रेण। छंदसा। अंगि
रस्वत्। रुद्राः। त्रैष्टुभेन। त्रैस्तुभेनेति त्रैऽस्तुभेन। आदित्याः। जागतेन। विश्वे। त्वा।
देवाः। वैश्वानराः। धूपयंतु। आनुष्टुभेन। आनुस्तुभेनेत्यानुऽस्तुभेन। छंदसा।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

१४ अङ्गिरस्वत्। इंद्रः। वरुणः। विष्णुः। त्वा। धूपयतु॥ ६१॥ अदितिः। त्वा। देवी। विश्व १४
देव्यावती। विश्वदेव्यवतीति विश्वदेव्यऽवती। पृथिव्याः। सधस्थ इति सधऽस्थे।
अङ्गिरस्वत्। खनतु। अवट॥ ६२॥ देवानाम्। त्वा। पत्नीः। देवीः। विश्वदेव्याव
तीः। विश्वदेव्यवतीरिति विश्वदेव्यऽवतीः। पृथिव्याः। सधस्थ इति सधऽस्थे। अ
ङ्गिरस्वत्। दधतु। उखे। धिषणाः। अभि। इंधताम्। वरूत्रीः। श्रपयंतु। ग्नाः। प
चतु। जनयः। अच्छिन्नपत्रा इत्यच्छिन्नऽपत्राः॥ ६३॥ मित्रस्य। चर्षणीधृतः।
चर्षणीधृत इति चर्षणिऽधृतः। अवः। देवस्य। सानसि। द्युम्नम्। चित्रश्रवस्तम
मिति चित्रश्रवःऽतमम्॥ ६४॥ देवः। त्वा। सविता। उत्। वपतु। सुपाणिरिति सु
ऽपाणिः। स्वङ्गुरिरिति सुऽअङ्गुरिः। सुबाहुरिति सुऽबाहुः। उत। शक्त्या। अव्यथमा

ना। पृथिव्याम्। आशाः। दिशः। आ। पृण॥ ६५॥ उत्थाय। बृहती। भव। उत्। ऊँ इति।
तिष्ठ। ध्रुवा। त्वम्। मित्र। एताम्। ते। उखाम्। परि। ददामि। अभित्त्यै। एषा। मा। भे
दि। वसवः। त्वा। आ। छृंदंतु॥ ६६॥ आकूतिमित्याऽकूतिम्। अग्निम्। प्रयुजमि
ति प्रऽयुजम्। स्वाहा। मनः। मेधाम्। चित्तम्। विज्ञातमिति विऽज्ञातम्। वाचः। वि
धृतिमिति विऽधृतिम्। अग्निम्। प्रयुजमिति प्रऽयुजम्। स्वाहा। प्रजापतय इति
प्रजाऽपतये। मनवे। अग्नये। वैश्वानराय॥ ६७॥ मा। सु। भित्थाः। मा। सु। रिषाः।
अम्ब। धृष्णु। वीरयस्व। सु। अग्निः। च। इदम्। करिष्यथः॥ ६८॥ दृंहस्व। देवि।
पृथिवि। स्वस्तये। आसुरी। माया। स्वधया। कृता। असि। जुष्टम्। देवेभ्यः। इदं
अस्तु। हव्यम्। अरिष्टा। त्वम्। उत्। इहि। यज्ञे। अस्मिन्॥ ६९॥ द्रुन्न इति द्रुऽअन्नः।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सर्पिरासुतिरिति सर्पिःऽआसुतिः। प्रत्नः। होता। वरेण्यः। सहसः। पुत्रः। अद्भुतः।
॥ ७०॥ परस्याः। अधि। संवत इति सम्ऽवतः। अवरान्। अभि। आ। तर। यत्र।
अहम्। अस्मि। तान्। अव॥ ७१॥ परमस्याः। परावत इति पराऽवतः। रोहिदश्व
इति रोहित्ऽअश्वः। इह। आ। गहि। पुरीष्यः। पुरुप्रिय इति पुरुऽप्रियः। अग्ने।
१५ त्वम्। तर। मृधः॥ ७२॥ यत्। अग्ने। कानि। कानि। चित्। आ। ते। दारूणि। दध्म १५
सि। सर्वम्। तत्। अस्तु। ते। घृतम्। तत्। जुषस्व। यविष्ठ्य॥ ७३॥ यत्। अत्ति।
उपजिह्विकेत्युपऽजिह्विका। यत्। वम्रः। अतिसर्पतीत्यतिऽसर्पति॥ ७४॥
सर्वम्। तत्। अस्तु। ते। घृतम्। तत्। जुषस्व। यविष्ठ्य॥ ७४॥ अहरहरित्यहःऽ
अहः। अप्रयावमित्यप्रऽयावम्। भरन्तः। अश्वायेवेत्यश्वायऽइव। तिष्ठते। घासम्।

अस्मै। रायः। पोषेण। सम्। इषा। मदन्तः। अग्ने। मा। ते। प्रतिवेशा इति प्रतिऽवे
शाः। रिषाम॥ ७५॥ नाभा। पृथिव्याः। समिधान इति सम्ऽइधानः। अग्निम्। रायः।
पोषाय। बृहते। हवामहे। इरम्मदमितीरम्ऽमदम्। बृहदुक्थमिति बृहत्ऽउक्थ
म्। यजत्रम्। जेतारम्। अग्निम्। पृतनासु। सासहिम्। ससहिमिति ससहिम्।
॥ ७६॥ याः। सेनाः। अभीत्वरीरित्यभिऽइत्वरीः। आव्याधिनीरित्याऽव्याधिनीः।
उगणाः। उत। ये। स्तेनाः। ये। च। तस्कराः। तान्। ते। अग्ने। अपि। दधामि। आस्ये।
॥ ७७॥ दंष्ट्राभ्याम्। मलिम्लून्। जम्भ्यैः। तस्करान्। उत। हनुभ्यामिति हनुऽभ्या
म्। स्तेनान्। भगव इति भगऽवः। तान्। त्वम्। खाद। सुखादितानिति सुऽखादिता
न्॥ ७८॥ ये। जनेषु। मलिम्लवः। स्तेनासः। तस्कराः। वने। ये। कक्षेषु। अघायवः।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अघयवइत्यघऽयवः। तान्। ते। दधामि। जम्भयोः॥७९॥ यः। अस्मभ्यम्। अराती
यात्। अरातियादित्यराति। यात्। यः। च। नः। द्वेषते। जनः। निंदात्। यः। अस्मा
न्। धिप्सात्। सः। च। सर्वम्। तम्। मस्मसा। कुरु॥८०॥ सम्ऽशितमितिसम्
शितम्। मे। ब्रह्म। सम्ऽशितमितिसम्। शितम्। वीर्यम्। बलम्। सम्ऽशितमिति
१६ सम्। शितम्। क्षत्रम्। जिष्णु। यस्य। अहम्। अस्मि। पुरोहित इतिपुरःऽहितः।
॥८१॥ उत्। एषाम्। बाहूइतिबाहू। अतिरम्। उत्। वर्चः। अथोऽइत्यथो। बलं। १६
क्षिणोमि। ब्रह्मणा। अमित्रान्। उत्। नयामि। स्वान्। अहम्॥८२॥ अन्न
पतइत्यन्नऽपते। अन्नस्य। नः। धेहि। अनमीवस्य। शुष्मिणः। प्रप्रेतिप्रऽप्र।
दातारम्। तारिषः। ऊर्जम्। नः। धेहि। द्विपदइतिद्विऽपदे। चतुष्पदे। चतु

पदइतिचतुःऽपदे। विश्वकर्मणइतिविश्वऽकर्मणे। स्वाहा॥८३॥ पुनरितिपुनः।
त्वा। आदित्याः। रुद्राः। वसवः। सम्। इन्धताम्। पुनः। ब्रह्माणः। वसुनीथेतिवसु
नीथ। यज्ञैः। घृतेन। त्वम्। तन्वम्। वर्द्धयस्व। सत्याः। संतु। यजमानस्य। कामाः।
स्वाहा॥८४॥ ॥८७॥ इतिशुक्लयजुःकाण्वपदसंहितायांद्वादशोऽध्यायः॥८७॥ ॥८७॥
हरिः ॐ॥ दृशानः। रुक्मः। उर्व्या। वि। अद्यौत्। दुर्मर्षमितिदुःऽमर्षम्। आयुः। श्रिये।
रुचानः। अग्निः। अमृतः। अभवत्। वयोभिरितिवयःऽभिः। यत्। एनम्। द्यौः। अ
जनयत्। सुरेताइतिसुऽरेताः॥१॥ नक्तोषासा। नक्तोषसेतिनक्तोषसा। सम
नसेतिसऽमनसा। विरूपेइतिविऽरूपे। धापयेतेइतिधापयेते। शिशुम्। एकम्।
समीचीइतिसम्ऽईची। द्यावा। क्षामा। रुक्मः। अंतः। वि। भाति। देवाः। अग्निम्।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

धारयन्।द्रविणोदाइतिद्रविणःऽदाः॥२॥विश्वा।रूपाणि।प्रति।मुंचते।कविः।
प्र।असावीत्।भद्रं।द्विपदइतिद्विऽपदे।चतुष्पदे।चतुःपदइतिचतुःऽपदे॥
वि।नाकं।अख्यत्।सविता।वरेण्यः।अनु।प्रयाणं।प्रयानमितिप्रऽयानं।उष
सः।विराजति॥३॥सुपर्णइतिसुऽपर्णः।असि।गरुत्मान्।त्रिवृदितित्रिऽवृत्।
१८ ते।शिरः।गायत्रं।चक्षुः।बृहद्रथंतरेइतिबृहत्ऽरथंतरे।पक्षौ॥४॥स्तोमः। १८
आत्मा।छंदांसि।अंगानि।यजूंषि।नाम।साम।ते।तनूः।वामदेव्यमि
तिवामऽदेव्यं।यज्ञायज्ञियमितियज्ञाऽयज्ञियं।पुच्छं।धिष्ण्याः।शफाः॥५॥
सुपर्णइतिसुऽपर्णः।असि।गरुत्मान्।दिवं।गच्छ।स्वरितिस्वः।पत।विष्णोः।क्र

मः।असि।सपत्नहेतिसपत्नऽहा।गायत्रं।छंदः।आ।रोह।पृथिवीं।अनु।वि।क्र
मस्व।अभिमातिहेत्यभिमातिऽहा।त्रैष्टुभं।त्रैस्तुभमितित्रैऽस्तुभं।अंतरिक्षं।अ
रातीयतः।अरातीयतइत्यरातिऽयतः।हंता।जागतं।दिवं।शत्रूयतः।शत्रुयतइति
शत्रुऽयतः।हंता।आनुष्टुभं।आनुस्तुभमित्यानुऽस्तुभं।छंदः।आ।रोह।दिशः।
अनु।वि।क्रमस्व॥६॥अक्रंदत्।अग्निः।स्तनयन्निवेतिस्तनयन्ऽइव।द्यौः।
क्षामा।रेरिहत्।वीरुधः।समंजन्नितिसम्ऽअंजन्।सद्यः।जज्ञानः।वि।हि।
ईं।इद्धः।अख्यत्।आ।रोदसीइतिरोदसी।भानुना।भाति।अंतरित्यंतः॥७॥
अग्ने।अभ्यावर्तिन्नित्यभिऽआवर्तिन्।अभि।मा।नि।वर्तस्व।आयुषा।वर्च
सा।प्रजयेतिप्रऽजया।धनेन।सन्या।मेधया।रय्या।पोषेण।अग्ने।अंगिरः।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

शतं।ते।संतु।आवृत इत्याऽवृतः।सहस्रं।ते।उपावृत इत्युपऽआवृतः।अध।पोष
स्य।पोषेण।पुनः।नः।नष्टं।आ।कृधि।पुनः।नः।रयिं।आ।कृधि॥९॥पुनः।ऊर्जा।
नि।वर्त्तस्व।पुनः।अग्ने।इषा।आयुषा।पुनः।नः।पाहि।अंहसः॥१०॥सह।रय्या।
नि।वर्त्तस्व।अग्ने।पिन्वस्व।धारया।विश्वप्स्न्येति विश्वऽप्स्न्या।विश्वतः।परि॥११॥
३६ आ।त्वा।अहार्षं।अंतः।अभूः।ध्रुवः।तिष्ठ।अविचाचलिरित्यविऽचाचलिः।विशः।
त्वा।सर्वाः।वांछंतु।मा।त्वत्।राष्ट्रं।अधि।भ्रशत्॥१२॥उत्।उत्तममित्युत्ऽतमम्। ३६
वरुण।पाशं।अस्मत्।अव।अधमं।वि।मध्यमं।श्रथाय।श्रथयेति श्रथय।अथ।
वयं।आदित्य।व्रते।तव।अनागसः।अदितये।स्याम॥१३॥अग्रे।बृहन्।उषसां।
ऊर्ध्वः।अस्थात्।निर्जगन्वानिति निःऽजगन्वान्।तमसः।ज्योतिषा।आ।अगात्।

अग्निः।भानुना।रुशता।स्वंग इति सुऽअंगः।आ।जातः।विश्वा।सद्मानि।अप्राः।
॥१४॥सीद।त्वं।मातुः।अस्याः।उपस्थ इत्युपऽस्थे।विश्वानि।अग्ने।वयुनानि।विद्वान्।
मा।एनां।तपसा।मा।अर्चिषा।अभि।शोचीः।अंतः।अस्यां।शुक्रज्योतिरिति शु
क्रऽज्योतिः।वि।भाहि॥१५॥अंतः।अग्ने।रुचा।त्वं।उखायाः।सदने।स्वे।तस्याः।
त्वं।हरसा।तपन्।जातवेद इति जातऽवेदः।शिवः।भव॥१६॥शिवः।भूत्वा।मह्यं।
अग्ने।अथो इत्यथो।सीद।शिवः।त्वं।शिवाः।कृत्वा।दिशः।सर्वाः।स्वां।योनिं।इह।
आ।असदः॥१७॥दिवः।परि।प्रथमं।जज्ञे।अग्निः।अस्मत्।द्वितीयं।परि।जा
तवेदा इति जातऽवेदाः।तृतीयं।अप्स्वित्यप्ऽसु।नृमणाः।नृमना इति नृऽमनाः।
अजस्रं।इधानः।एनं।जरते।स्वाधीरिति सुऽआधीः॥१८॥विद्म।ते।अग्ने।त्रेधा।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

त्रयाणि। विद्म। ते। धाम। विभृतेति विऽभृता। पुरुत्रेति पुरुऽत्रा। विद्म। ते। नाम। पर
मं। गुहा। यत्। विद्म। तं। उत्सं। यतः। आजगंथेत्याऽजगंथ॥ १९॥ समुद्रे। त्वा। नृ
मणाः। नृमणा इति नृऽमनाः। अप्स्वित्यप्ऽसु। अंतः। नृचक्षा इति नृऽचक्षाः। ईधे।
दिवः। अग्ने। ऊधन्। तृतीये। त्वा। रजसि। तस्थिवांसं। तस्थिवांसमिति तस्थिऽवांसं। अ
३९ पां। उपस्थ इत्युपऽस्थे। महिषाः। अवर्द्धन्॥ २०॥ श्रीणां। उदार इत्युत्ऽआरः। ध ३९
रुणः। रयीणां। मनीषाणां। प्रार्पण इति प्रऽअर्पणः। सोमगोपा इति सोमऽगो
पाः। वसुः। सूनुः। सहसः। अप्स्वित्यप्ऽसु। राजा। वि। भाति। अग्रे। उषसां। इधा
नः॥ २१॥ विश्वस्य। केतुः। भुवनस्य। गर्भः। आ। रोदसी इति रोदसी। अपृणात्।
जायमानः। वीळुं। चित्। अद्रिं। अभिनत्। परायन्निति पराऽयन्। जनाः। यत्।

अग्निं। अयजंत। पंच॥ २२॥ उशिक्। पावकः। अरतिः। सुमेधा इति सुऽमेधाः। मर्त्ये
षु। अग्निः। अमृतः। नि। धायि। इयर्ति। धूमं। अरुषं। भरिभ्रत्। उत्। शुक्रेण। शोचि
षा। द्यां। इनक्षन्॥ २३॥ यः। ते। अद्य। कृणवत्। भद्रशोचेति भद्रऽशोचे। अपूपं।
देव। घृतवंतमिति घृतऽवंतं। अग्ने। प्र। तं। नय। प्रतरमिति प्रऽतरं। वस्यः। अच्छ।
अभि। सुम्नं। देवभक्तमिति देवऽभक्तं। यविष्ठ॥ २४॥ आ। तं। भज। सौश्रवसेषु।
अग्ने। उक्थउक्थ इत्युक्थेऽउक्थे। आ। भज। शस्यमाने। प्रियः। सूर्ये। प्रियः। अ
ग्ना। भवाति। उत्। जातेन। भिनदत्। उत्। जनित्वैरिति जनिऽत्वैः॥ २५॥ त्वां। अ
ग्ने। यजमानाः। अनु। द्यून्। विश्वा। वसु। दधिरे। वार्याणि। त्वया। सह। द्रविणं।
इच्छमानाः। व्रजं। गोमंतमिति गोऽमंतं। उशिजः। वि। वव्रुः॥ २६॥ अस्ता। वि। अग्निः।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

८ नरो। सुग्रीव इति सुऽग्रीवः। वैश्वानरः। ऋषिभिरित्यृषिऽभिः। सोमगोपा इति सोमऽ
गोपाः। अद्वेषे इत्यद्वेषे। द्यावापृथिवी इति द्यावापृथिवी। हुवेम। देवाः। धत्त। र
यिं। अस्मे इत्यस्मे। सुवीरमिति सुऽवीरं॥ २७॥ उत। एं। इत्यूँ। त्वा। विश्वे। देवाः।
अग्ने। भरंतु। चित्तिभिरिति चित्तिऽभिः। सः। नः। भव। शिवः। त्वं। सुप्रतीक इ
ति सुऽप्रतीकः। विभावसुरिति विभाऽवसुः। २८॥ प्र। इत्। अग्ने। ज्योतिष्मान्।
याहि। शिवेभिः। अर्चिभिरित्यर्चिःऽभिः। त्वं। बृहद्भिरिति बृहत्ऽभिः। भानुभि ८
रिति भानुऽभिः। भासन्। मा। हिंसीः। तन्वा। प्रजा इति प्रऽजाः॥ २९॥ प्र। प्रेति
प्रऽप्र। अयं। अग्निः। भरतस्य। शृण्वे। वि। यत्। सूर्यः। न। रोचते। बृहत्। भाः।
अभि। यः। पूरुं। पृतनासु। तस्थौ। दीदाय। दैव्यः। अतिथिः। शिवः। नः॥ ३०॥

आपः। देवीः। प्रति। गृभ्णीत। भस्म। एतत्। स्योने। कृणुध्वं। सुरभौ। उँ इत्यूँ। लोके।
तस्मै। नमंतां। जनयः। सुपत्नीरिति सुऽपत्नीः। मातेवेति माताऽइव। पुत्रं। बिभृत। अ
प्स्वित्यप्ऽसु। एनत्॥ ३१॥ अप्सु। अप्स्वित्यप्ऽसु। अग्ने। सधिः। तव। सः। ओषधीः। अ
नु। रुध्यसे। गर्भे। सन्। जायसे। पुनरिति पुनः॥ ३२॥ गर्भः। असि। ओषधीनां। गर्भः।
वनस्पतीनां। गर्भः। विश्वस्य। भूतस्य। अग्ने। गर्भः। अपां। असि॥ ३३॥ प्रसद्ये
ति प्रऽसद्य। भस्मना। योनिं। अपः। च। पृथिवीं। अग्ने। संसृज्येति संऽसृज्य। मा
तृभिरिति मातृऽभिः। त्वं। ज्योतिष्मान्। पुनः। आ। असदः॥ ३४॥ पुनः। आसद्येत्याऽ
सद्य। सदनं। अपः। च। पृथिवीं। अग्ने। शेषे। मातुः। यथा। उपस्थ इत्युपऽस्थे। अंतः।
अस्यां। शिवतम इति शिवऽतमः॥ ३५॥ बोध। मे। अस्य। वचसः। यविष्ठ। मंहिष्ठ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ष्टस्य।अमृतस्येतिअऽमृतस्य।स्वधावइतिस्वधाऽवः।पीयति।त्वां।अनु।त्वः।गृणा
ति।वंदारुः।ते।तन्वं।वंदे।अग्ने।।४२।।सः।बोधि।सूरिः।मघवेतिमघऽवा।वसुप
तइतिवसुऽपते।वसुदावन्नितिवसुऽदावन्।युयोधि।अस्मत्।द्वेषांसि।।४३।।
अपाइत।वि।इत।वि।च।सर्पत।अतः।ये।अत्र।स्थ।पुराणाः।ये।च।नूतनाः।
२३ अदात्।यमः।अवसानमित्यवऽसानं।पृथिव्याः।अक्रन्।इमं।पितरः।लोकं।
अस्मै।।४४।।संज्ञानमितिसंऽज्ञानं।असि।कामधरणमितिकामऽधरणं।म २३
यि।ते।कामधरणमितिकामऽधरणं।भूयात्।अग्नेः।भस्म।असि।अग्नेः
पुरीषं।असि।चितः।स्थ।परिचितइतिपरिऽचितः।ऊर्ध्वचितइत्यूर्ध्वऽचितः।
श्रयध्वं।।४५।।अयं।सः।अग्निः।यस्मिन्।सोमं।इंद्रः।सुतं।दधे।जठरे।वावशानः।

सहस्रियं।वाजं।अत्यं।न।सप्तिं।ससवानितिससऽवान्।सन्।स्तूयसे।जातवेद
इतिजातऽवेदः।।४६।।अग्ने।यत्।ते।दिवि।वर्चः।पृथिव्यां।यत्।ओषधीषु।अप्स्व
त्यप्ऽसु।आ।यजत्र।येन।अंतरिक्षं।उरु।आततंथेत्याऽततंथ।त्वेषः।सः।भानुः।
अर्णवः।नृचक्षाइतिनृऽचक्षाः।।४७।।अग्ने।दिवः।अर्णं।अच्छ।जिगासि।अच्छ।दे
वान्।ऊचिषे।धिष्ण्याः।ये।याः।रोचने।परस्तात्।सूर्यस्य।याः।च।अवस्तात्।
उपतिष्ठंतइत्युपऽतिष्ठंते।आपः।।४८।।पुरीष्यासः।अग्नयः।प्रावणेभिः।प्रव
णेभिरितिप्रऽवणेभिः।सजोषसइतिसऽजोषसः।जुषंतां।यज्ञं।अद्रुहः।अनमी
वाः।इषः।महीः।।४९।।इळां।अग्ने।पुरुदंसमितिपुरुऽदंसं।सनिं।गोः।शश्व
त्तममितिशश्वत्ऽतमं।हवमानाय।साध।स्यात्।नः।सूनुः।तनयः।विजावेतिवि

जाऽऽवा। अग्ने। सा। ते। सुमतिरिति सुऽमतिः। भूतु। अस्मे इत्यस्मे॥४४॥ चितः। अ
सि। तया। देवतया। अंगिरस्वत्। ध्रुवा। सीद। परिचिदिति परिऽचित्। असि।
तया। देवतया। अंगिरस्वत्। ध्रुवा। सीद॥४५॥ लोकं। पृण। छिद्रं। पृण। अथो
इत्यथो। सीद। ध्रुवा। त्वं। इंद्राग्नी इतींद्राग्नी। त्वा। बृहस्पतिः। अस्मिन्। योनौ। अ
सीषदन्। असीदन्निति असीसदन्॥४६॥ ताः। अस्य। सूददोहस इति सूदऽदो
२२ हसः। सोमं। श्रीणंति। पृश्नयः। जन्मन्। देवानां। विशः। त्रिषु। आ। रोचने। दिवः। २२
४७॥ इंद्रं। विश्वाः। अवीवृधन्। समुद्रव्यचसमिति समुद्रऽव्यचसं। गिरः। रथी
तमं। रथितममिति रथिऽतमं। रथीनां। रथिनामिति रथिनाम्। वाजानां। सत्प
तिमिति सत्ऽपतिं। पतिं॥४८॥ सं। इतं। सं। कल्पेथां। संप्रियाविति संऽप्रियौ। रोचि

ष्णू इति रोचिष्णू। सुमनस्यमाना इति सुऽमनस्यमानौ। इषं। ऊर्जं। अभि। संवसाना
इति समऽवसानौ॥४९॥ सं। वां। मनांऽसि। सं। व्रता। सं। ऊं इति। चित्तानि। आ। अ
करं। अग्ने। पुरीष्य। अधिपा इत्यधिऽपाः। भव। त्वं। नः। इषं। ऊर्जं। यजमानाय। धे
हि॥५०॥ अग्ने। त्वं। पुरीष्यः। रयिमानिति रयिऽमान्। पुष्टिमानिति पुष्टिऽमान्।
असि। शिवाः। कृत्वा। दिशः। सर्वाः। स्वां। योनिं। इह। आ। असदः॥५१॥ मातेवे
ति माताऽइव। पुत्रं। पृथिवी। पुरीष्यं। अग्निं। स्वे। योनौ। अभाः। उखा। तां। विश्वैः।
देवैः। ऋतुभिरित्यृतुऽभिः। संविदान इति संऽविदानः। प्रजापतिरिति प्रजाऽप
तिः। विश्वकर्मेति विश्वऽकर्मा। वि। मुंचतु॥५२॥ असुन्वंतं। अयजमानं। इच्छ। स्ते
नस्य। इत्यां। अनु। इहि। तस्करस्य। अन्यं। अस्मत्। इच्छ। सा। ते। इत्या। नमः। देवि।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

निर्ऽऋत इति निःऽऋते । तुभ्यं । अस्तु ॥५३॥ नमः । सु । ते । निर्ऽऋत इति निःऽऋते । ति
ग्मतेज इति तिग्मऽतेजः । अयस्मयं । वि । चृत । बंधं । एतं । यमेन । त्वं । यम्या । संविदा
नेति संऽविदाना । उत्तम इत्युत्ऽतमे । नाके । अधि । रोहय । एनं ॥५४॥ यस्याः । ते ।
घोरे । आसन् । जुहोमि । एषां । बंधानां । अवसर्जनायेत्यवऽसर्जनाय । यां । त्वा । जनः ।
भूमिः । इति । प्रमंदन इति प्रऽमंदते । निर्ऽऋतिमिति निःऽऋतिं । त्वा । अहं । परि । वेद ।
विश्वतः ॥५५॥ यं । ते । देवी । निर्ऽऋतिरिति निःऽऋतिः । आबबंधेत्याऽबबंध । पाशं ।
ग्रीवासु । अविचृत्यमित्यविऽचृत्यं । तं । ते । वि । स्यामि । आयुषः । न । मध्यात् ।
अथ । एतं । पितुं । अद्धि । प्रसूत इति प्रऽसूतः । नमः । भूत्यै । या । इदं । चकार ॥ भै
५६॥ निवेशन इति निऽवेशनः । संगमन इति संऽगमनः । वसूनां । विश्वा । रूपा । अ

भि । चष्टे । शचीभिः । देव इव इति देवःऽइव । सविता । सत्यधर्मेति सत्यऽधर्मा । इंद्रः । न ।
तस्थौ । समर इति संऽअरे । पथीनां ॥५७॥ सीरा । युंजंति । कवयः । युगा । वि । तन्व
ते । पृथक् । धीराः । देवेषु । सुम्नयेति सुम्नऽया ॥५८॥ युनक्त । सीरा । वि । युगा । त
नुध्वं । कृते । योनौ । वपत । इह । बीजं । गिरा । च । श्रुष्टिः । सभरा इति सऽभराः । अस
त् । नः । नेदीयः । इत् । सृण्यः । पक्वं । आ । इयात् ॥५९॥ शुनं । सुफालाः । वि । कृषंतु । भू
मिं । शुनं । कीनाशाः । अभि । यंतु । वाहैः । शुनासीरा । हविषा । तोशमाना । सुपिप्प
ला इति सुऽपिप्पलाः । ओषधीः । कर्तं । अस्मै इत्यस्मै ॥६०॥ घृतेन । सीता । मधुना ।
संऽअक्ता । विश्वैः । देवैः । अनुमतेत्यनुऽमता । मरुत्ऽभिरिति मरुत्ऽभिः । ऊर्जस्व
ती । पयसा । पिन्वमाना । अस्मान् । सीते । पयसा । अभि । आ । ववृत्स्व ॥६१॥ जांग

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

स्तं।परीरवत्।सुश्लोकमिति सुऽश्लोकं।सोमपिस्त्वर्विति सोमपितऽस्वर॥तत्ऽउत्।
वपति।गां।अर्विं।प्रफर्व्यमिति प्रऽफर्व्यं।च।पीवरीं।प्रस्थावदिति प्रस्थाऽवत्।
रथवाहणं।रथवाहनमिति रथऽवाहनं॥६२॥कामं।कामदुघमिति कामऽदुघे॥ध्रुवा
मित्राय।वरुणाय।च।इंद्राय।अश्विभ्यामित्यश्विऽभ्यां।पंक्तिं।प्रजाभ्य इति प्रऽजा
२४ भ्यः।ओषधीभ्यः॥६३॥वि।मुच्यध्वं।अघ्न्याः।देवयाना इति देवऽयानाः।अगन्म।
तमसः।पारं।अस्य।ज्योतिः।आपाम॥६४॥सजूरिति सऽजूः।अब्दः।अयवोभि २४
रित्ययवःऽभिः।उषाः।अरुणीभिः।सजोषसाविति सऽजोषसौ।अश्विना।दंसो
सोभिरिति दंसःऽभिः।सूरः।एतशेन।वैश्वानरः।इडया।घृतेन।स्वाहा॥६५॥
याः।ओषधीः।पूर्वाः।जाताः।देवेभ्यः।त्रियुगमिति त्रिऽयुगं।पुरा।मनै।नु।बभ्रूणां।

अहं।शतं।धामानि।सप्त।च॥६६॥शतं।वः।अंब।धामानि।सहस्रं।उत।वः।रुहः।
अध।शतक्रत्व इति शतऽक्रत्वः।यूयं।इमं।मे।अगदं।कृत॥६७॥ओषधीः।प्रति।
मोदध्वं।पुष्पवतीरिति पुष्पऽवतीः।प्रसूवरीरिति प्रऽसूवरीः।अश्वाऽइवेत्यश्वाः।
इव।सजित्वरीरिति सऽजित्वरीः।वीरुधः।पारयिष्णवः॥६८॥ओषधीः।इति।मातरः।
तत्।वः।देवीः।उप।ब्रुवे।सनेयं।अश्वं।गां।वासः।आत्मानं।तव।पूरुष।पुरुषे
ति पुरुष॥६९॥अश्वत्थे।वः।निषदनं।निसदनमिति निःऽसदनं।पर्णे।वः।
वसतिः।कृता।गोभाज इति गोऽभाजः।इत्।किल।असथ।यत्।सनवथ।पुरु
षं।पुरुषमिति पुरुषं॥७०॥यत्र।ओषधीः।समग्मतेति संऽअग्मत।राजानः।
समिताऽइवेति समितौऽइव।विप्रः।सः।उच्यते।भिषक्।रक्षोहेति रक्षःऽहा।अमी।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

वृचातनः इत्यमीवऽचातनः ।। ७१ ।। अश्वावतीं । अश्वऽवतीमित्यश्वऽवतीं । सोमावतीं ।
सोमवतीमिति सोमऽवतीं । ऊर्जयंतीं । उत्ऽओजसमित्युत्ऽओजसं । आ । अवित्सि ।
सर्वाः । ओषधीः । अस्मै । अरिष्टतातये इत्यरिष्टऽतातये ।। ७२ ।। उत् । शुष्माः । ओ
षधीनां । गावः । गोष्ठादिव । गोस्थादिवेति गोस्थात्ऽइव । ईरते । धनं । सनि
२६ ष्यंतीनां । आत्मानं । तव । पूरुष । पुरुषेति पुरुष ।। ७३ ।। इष्कृतिः । नाम । वः । माता । २६
अथो इत्यथो । यूयं । स्थ । निष्कृतीः । निःऽकृतीरिति निःऽकृतीः । सीराः । पत
२५ त्रिणीः । स्थन । यत् । आमयति । निः । कृथ ।। ७४ ।। अति । विश्वाः । परिष्ठाः । २५
परिस्थाइति परिऽस्थाः । स्तेनःइवेति स्तेनःऽइव । व्रजं । अक्रमुः । ओषधीः । प्र
अचुच्यवुः । यत् । किं । च । तन्वः । रपः ।। ७५ ।। यत् । इमाः । वाजयन् । अहं । ओषधीः ।

हस्ते । आधायेत्याऽधाय । आदध इत्याऽदधे । आत्मा । यक्ष्मस्य । नश्यति । पुरा ।
जीवगृभ इति जीवऽगृभः । यथा ।। ७६ ।। यस्य । ओषधीः । प्रसर्पथेति प्रऽसर्पथ । अंगं
गमंगमित्यंगंऽअंगं । परुःऽपरुः । परुःऽपरुरिति परुःऽपरुः । ततः । यक्ष्मं । वि । बाध
ध्वे । उग्रः । मध्यमशीरिवेति मध्यमशीःऽइव ।। ७७ ।। साकं । यक्ष्म । प्र । पत । चा
षेण । किकिदीविना । साकं । वातस्य । ध्राज्या । साकं । नश्य । निहाकयेति निःऽहा
कया ।। ७८ ।। अन्या । वः । अन्यां । अवतु । अन्या । अन्यस्याः । उप । अवत । ताः ।
सर्वाः । संविदाना इति संऽविदानाः । इदं । मे । प्र । अवत । वचः ।। ७९ ।। याः । फ
लिनीः । अफलाः । अपुष्पाः । याः । च । पुष्पिणीः । बृहस्पतिप्रसूता इति बृहस्पतिऽ
प्रसूताः । ताः । नः । मुंचंतु । अंहसः ।। ८० ।। मुंचंतु । मा । शपथ्यात् । अथो इत्यथो ।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

वरुण्यात् । उत । अथो इति । यमस्य । पड्वीशात् । सर्वस्मात् । देवकिल्बिषात् इति
देवऽकिल्बिषात् ॥ ९१ ॥ अवयती । इत्यवऽयती । सं । अवदंत । दिवः । ओषधयः । परि
२६ यं । जीवं । अश्नवामहै । न । सः । रिष्याति । पूरुषः । पुरुष इति पुरुषः ॥ ९२ ॥ याः । ओषधीः ।
सोमराज्ञीरिति सोमऽराज्ञीः । बह्वीः । शतविचक्षणा इति शतऽविचक्षणाः । तासां ।
२६ असि । त्वं । उत्तमेत्युत्ऽतमा । अरं । कामाय । शं । हृदे ॥ ९३ ॥ विष्ठिताः । विष्ठिता २६
इति विऽस्थिताः । पृथिवीं । अनु । बृहस्पतिप्रसूता इति बृहस्पतिऽप्रसूताः । अ २६
स्यै । सं । दत्त । वीर्यं ॥ ९४ ॥ याः । च । इदं । उपशृण्वंतीत्युपऽशृण्वंति । याः । च । दूरं । प
रागता इति पराऽगताः । सर्वाः । संगत्येति संऽगत्य । वीरुधः । अस्यै । सं । दत्त । वीर्यं ।
॥ ९५ ॥ नाशयित्री । बलासस्य । अर्शसः । उपचितामित्युपऽचितां । असि । अथो इ

ति । शतस्य । यक्ष्माणां । पाकारोरिति पाकऽअरोः । असि । नाशनी ॥ ९६ ॥ मा । वः ।
रिषत् । खनिता । यस्मै । च । अहं । खनामि । वः । द्विपदिति द्विऽपत् । चतुष्पत् । चतुःपदि
ति चतुःऽपत् । अस्माकं । सर्वं । अस्तु । अनातुरं ॥ ९७ ॥ ओषधयः । सं । वदंते । सो
मेन । सह । राज्ञा । यस्मै । कृणोति । ब्राह्मणः । तं । राजन् । पारयामसि ॥ ९८ ॥ त्वां ।
गंधर्वाः । अखनन् । त्वां । इंद्रः । त्वां । बृहस्पतिः । त्वां । ओषधे । सोमः । राजा । विद्वान् ।
यक्ष्मात् । अमुच्यत ॥ ९९ ॥ त्वं । उत्तमेत्युत्ऽतमा । असि । ओषधे । तव । वृक्षाः । उ
पस्तयः । उपऽस्तयः । अस्तु । सः । अस्माकं । यः । अस्मान् । अभिदासतीत्यभिऽदा
सति ॥ १०० ॥ मा । मा । हिंसीत् । जनिता । यः । पृथिव्याः । यः । वा । दिवं । सत्यधर्मे
ति सत्यऽधर्मा । वि । आनट् । यः । च । अपः । चंद्राः । प्रथमः । जजान । कस्मै । देवाय ।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

२९

हविषा। विधेम॥१०३॥ अभि। आ। वर्त्तस्व। पृथिवि। यज्ञेन। पयसा। सह॥ वपां। ते। अ
ग्निः। इषितः। अरोहत्॥१०४॥ अग्ने। यत्। ते। शुक्रं। चंद्रं। पूतं। च। यज्ञियं। तत्। दे
वेभ्यः। भरामसि॥१०५॥ इषं। ऊर्ज्जं। अहं। इतः। आ। ददे। ऋतस्य। योनिं। महिषस्य।
धारां। आ। मा। गोषु। विशतु। आ। तनुषु। जहामि। सेदिं। अनिरां। अमीवां॥
१०६॥ अग्ने। तव। श्रवः। वयः। महि। भ्राजंते। अर्चयः। विभावसो इति विभाऽव
सो। बृहद्भानो इति बृहत्ऽभानो। शवसा। वाजं। उक्थ्यं। दधासि। दाशुषे। कवे॥१०७॥
पावकवर्चा इति पावकऽवर्चाः। शुक्रवर्चा इति शुक्रऽवर्चाः। अनूनवर्चा इति अनून
ऽवर्चाः। उत्। इयर्षि। भानुना। पुत्रः। मातरा। विचरन्निति विऽचरन्। उप। अव
सि। पृणक्षि। रोदसी इति रोदसी। उभे इत्युभे॥१०८॥ ऊर्ज्जः। नपात्। जातवेद इति

जातऽवेदः। सुशस्तिभिरिति सुशस्तिऽभिः। मंदस्व। धीतिभिरिति धीतिऽभिः। हितः।
त्वे इति त्वे। इषः। सं। दधुः। भूरिवर्पस इति भूरिऽवर्पसः। चित्रोतय इति चित्रऽऊ
तयः। वामजाता इति वामऽजाताः॥१०९॥ इरज्यन्। अग्ने। प्रथयस्व। जंतुभिरि
ति जंतुऽभिः। अस्मे इत्यस्मे। रायः। अमर्त्य। सः। दर्शतस्य। वपुषः। वि। राजसि।
पृणक्षि। सानसिं। क्रतुं॥११०॥ इष्कर्त्तारं। अध्वरस्य। प्रचेतसमिति प्रऽचेत
सं। क्षयंतं। राधसः। महः। रातिं। वामस्य। सुभगामिति सुऽभगां। महीं। इषं।
दधासि। सानसिं। रयिं॥१११॥ ऋतावानं। ऋतवानमिति ऋतऽवानं। महि
षं। विश्वदर्शतमिति विश्वऽदर्शतं। अग्निं। सुम्नाय। दधिरे। पुरः। जनाः। श्रु
त्कर्णमिति श्रुत्ऽकर्णं। सप्रथस्तममिति सप्रथःऽतमं। त्वा। गिरा। दैव्यं। मा

२९

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

३०
२६

नुषा। घुणा।१००॥ आ। प्यायस्व। सं। एतु। ते। वृष्ण्यं। भव। वाजस्य। संगथ इति सं

गथे।१०१॥ सं। ते। पयांऽसि। सं। ऊं इत्यू। यंतु। वाजाः। सं। वृष्ण्यानि। अभिमाति

षाहः। अभिमातिसह इत्यभिमातिऽसहः। आप्यायमान इत्याऽप्यायमानः। अ

मृताय। सोम। दिवि। श्रवांऽसि। उत्तमानीत्युत्ऽतमानि। धिष्व।१०२॥ आप्या

यस्व। मदिंतम। मदिंतमेति मदिन्ऽतम। सोम। विश्वेभिः। अंशुभिरित्यंशुऽभिः।

भव। नः। सप्रथस्तम इति सप्रथःऽतमः। सखा। वृधे।१०३॥ आ। ते। वत्सः। म

नः। यमत्। परमात्। चित्। सधस्थादिति सधऽस्थात्। अग्ने। त्वां। कामयेति

त्वांऽकामया। गिरा।१०४॥ तुभ्यं। ताः। अंगिरस्तमेत्यंगिरःऽतम। विश्वाः।

सुक्षितय इति सुऽक्षितयः। पृथक्। अग्ने। कामाय। येमिरे।१०५॥ अग्निः। प्रि

२६
३०

येषु। धाम। स्विति धामऽसु। कामः। भूतस्य। भव्यस्य। संम्राळिति संऽराट्। एकः। वि

राजति।१०६॥७॥७॥ इति पदपाठे त्रयोदशोऽध्यायः॥७॥ हरिः ॐ। मयि। गृ

ह्णामि। अग्रे। अग्निं। रायः। पोषाय। सुप्रजास्त्वायेति सुप्रजाःऽत्वाय। सुवीर्याये

ति सुऽवीर्याय। मां। ऊं इत्यू। देवताः। सचंतां।१॥ ब्रह्म। जज्ञानं। प्रथमं। पुरस्तात्।

वि। सीमतः। सुरुच इति सुऽरुचः। वेनः। आवरित्याऽवः। सः। बुध्न्याः। उपमा इत्युपऽ

माः। अस्य। विष्ठाः। विस्था इति विऽस्थाः। सतः। च। योनिं। असतः। च। विवरि

ति विऽवः।२॥ हिरण्यगर्भ इति हिरण्यऽगर्भः। सं। अवर्त्तत। अग्रे। भूतस्य। जातः।

पतिः। एकः। आसीत्। सः। दाधार। पृथिवीं। द्यां। उत। इमां। कस्मै। देवाय। हविषा।

विधेम।३॥ द्रप्सः। चस्कंद। पृथिवीं। अनु। द्यां। इमं। च। योनिं। अनु। यः। च। पूर्वः।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

समानं। योनिं। अनु। संचरंतं। इति। संऽचरंतं। द्रप्सं। जुहोमि। अनु। सप्त। होत्राः॥४॥
नमः। अस्तु। सर्पेभ्यः। ये। के। च। पृथिवीं। अनु। ये। अंतरिक्षे। ये। दिवि। तेभ्यः। स
र्पेभ्यः। नमः॥५॥ याः। इषवः। यातुधानानां। इति। यातुऽधानानां। ये। वा। वनस्प
तीन्। अनु। ये। वा। अवटेषु। शेरते। तेभ्यः। सर्पेभ्यः। नमः॥६॥ ये। वा। अमी इति। अमी॥
रोचने। दिवः। ये। वा। सूर्यस्य। रश्मिषु। येषां। अप्सु। सदः। कृतं। तेभ्यः।
सर्पेभ्यः। नमः॥७॥ कृणुष्व। पाजः। प्रसितिं। इति। प्रऽसितिं। न। पृथ्वीं। याहि। राजे
व। इति। राजाऽइव। अमऽवान्। इभेन। तृष्वीं। अनु। प्रसितिं। इति। प्रऽसि
तिं। द्रूणानः। अस्ता। असि। विध्य। रक्षसः। तपिष्ठैः॥८॥ तव। भ्रमासः। आशु
या। इति। आशुऽया। पतंति। अनु। स्पृश। धृषता। शोशुचानः। तपूंषि। अग्ने। जिह्वया। प

तंगान्। असंदितः। इति। असंऽदितः। वि। सृज। विष्वक्। उल्काः॥९॥ प्रति। स्पशः। वि
सृज। तूर्णितमः इति तूर्णिऽतमः। भव। पायुः। विशः। अस्याः। अदब्धः। यः। नः।
दूरे। अघशंसः। इति अघऽशंसः। यः। अंति। अग्ने। माकिः। ते। व्यथिः। आ। दध
र्षीत्॥१०॥ उत्। अग्ने। तिष्ठ। प्रति। आ। तनुष्व। नि। अमित्रान्। ओषतात्। तिग्म
हेते इति तिग्मऽहेते। यः। नः। अरातिं। समिधान इति संऽइधान। चक्रे। नीचा।
तं। धक्षि। अतसं। न। शुष्कं॥११॥ ऊर्ध्वः। भव। प्रति। विध्य। अधि। अस्मत्। आ
विः। कृणुष्व। दैव्यानि। अग्ने। अव। स्थिरा। तनुहि। यातुजूनां इति यातुऽजू
नां। जामिं। अजामिं। प्र। मृणीहि। शत्रून्॥१२॥ अग्नेः। त्वा। तेजसा। सादया
मि। इंद्रस्य। त्वा। ओजसा। सादयामि॥१३॥ भुवः। यज्ञस्य। रजसः। च। नेता। यत्र।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

३०

नियुद्भिरिति नियुत्ऽभिः। सचसे। शिवाभिः। दिवि। मूर्द्धानं। दधिषे। स्वर्षां। स्वः
सामिति स्वःऽसां। जिह्वां। अग्ने। चकृषे। हव्यवाहमिति हव्यऽवाहं॥२४॥ ध्रुवा।
असि। धरुणा। आस्तृतेत्याऽस्तृता। विश्वकर्मणेति विश्वऽकर्मणा। मा। त्वा।
समुद्रः। उत्। वधीत्। मा। सुपर्ण इति सुऽपर्णः। अव्यथमाना। पृथिवीं। दृंह।
॥२५॥ प्रजापतिरिति प्रजाऽपतिः। त्वा। सादयतु। अपां। पृष्ठे। समुद्रस्य। एमन्।
व्यचस्वतीं। प्रथस्वतीं। प्रथस्व। पृथिवी। असि॥२६॥ भूः। भूमिः। असि। अदितिः।
विश्वधाया इति विश्वऽधायाः। विश्वस्य। भुवनस्य। धर्त्री। पृथिवीं। यच्छ। पृथि
वीं। दृंह। पृथिवीं। मा। हिंसीः॥२७॥ विश्वस्मै। प्राणाय। अपानायेत्यपऽआ
नाय। व्यानायेति विऽआनाय। उदानायेत्युत्ऽआनाय। प्रतिष्ठायै। प्रतिस्था

याइति प्रतिऽस्थायै। चरित्राय। अग्निः। त्वा। अभि। पातु। मह्या। स्वस्त्या। छर्दि
षा। शंतमेनेति शम्ऽतमेन। तया। देवतया। अङ्गिरस्वत्। ध्रुवा। सीद॥२८॥ काण्डा
त्काण्डादिति काण्डात्ऽकाण्डात्। प्ररोहन्तीति प्रऽरोहन्ती। परुषःपरुष इति परुषःऽ
परुषः। परि। एव। नः। दूर्वे। प्र। तनु। सहस्रेण। शतेन। च॥२९॥ या। शतेन। प्र
तनोषीति प्रऽतनोषि। सहस्रेण। विरोहसीति विऽरोहसि। तस्याः। ते। देवि। इ
ष्टके। विधेम। हविषा। वयं॥३०॥ याः। ते। अग्ने। सूर्ये। रुचः। दिवं। आतन्वन्तीत्याऽ
तन्वन्ति। रश्मिभिरिति रश्मिऽभिः। ताभिः। नः। अद्य। सर्वाभिः। रुचे। जनाय।
नः। कृधि॥३१॥ याः। वः। देवाः। सूर्ये। रुचः। गोषु। अश्वेषु। याः। रुचः। इन्द्राग्नी
इतीन्द्राग्नी। ताभिः। सर्वाभिः। रुचं। नः। धत्त। बृहस्पते॥३२॥ विराडिति विऽराट्

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ज्योतिः । अधारयत् । स्वराळिति स्वःऽराट् । ज्योतिः । अधारयत् । प्रजापतिरिति
प्रजाऽपतिः । त्वा । सादयतु । पृष्ठे । पृथिव्याः । ज्योतिष्मतीं ॥ २३ ॥ विश्वस्मै । प्राणा
य । अपानायेत्यपऽआनाय । व्यानायेति विऽआनाय । विश्वं । ज्योतिः । यच्छ । अ
ग्निः । ते । अधिपतिरित्यधिऽपतिः । तया । देवतया । अंगिरस्वत् । ध्रुवा । सीद ॥ २४
मधुः । च । माधवः । च । वासंतिकौ । ऋतू इत्यृतू । अग्नेः । अंतःश्लेष इत्यंतःऽश्ले
२१ षः । असि । कल्पेतां । द्यावापृथिवी इति द्यावापृथिवी । कल्पंतां । आपः । ओ २१
षधयः । कल्पंतां । अग्नयः । पृथक् । मम । ज्यैष्ठ्याय । सव्रता इति सऽव्रताः । ये । अ
ग्नयः । समनस इति सऽमनसः । अंतरा । द्यावापृथिवी इति द्यावापृथिवी । इमे
इतीमे । वासंतिकौ । ऋतू इत्यृतू । अभिकल्पमाना इत्यभिऽकल्पमानाः । इंद्रं

वेतीन्द्रं । इव । देवाः । अभिसंविशंत्वित्यभिऽसंविशंतु । तया । देवतया । अंगिरस्व
त् । ध्रुवे इति ध्रुवे । सीदतं ॥ २५ ॥ अषाळ्हा । असि । सहमाना । सहस्व । अरातीः ।
सहस्व । पृतनायत इति पृतनाऽयतः । सहस्रवीर्येति सहस्रऽवीर्या । असि । सा ।
मा । जिन्व ॥ २६ ॥ सहस्व । इमाः । अभिमातीरित्यभिऽमातीः । सहस्व । पृतनायत
इति पृतनाऽयतः । सहस्व । सर्वं । पाप्मानं । सहमाना । असि । ओषधे ॥ २७ ॥ मधु ।
वाताः । ऋतायत इत्यृतऽयते । मधु । क्षरंति । सिंधवः । माध्वीः । नः । संतु ।
ओषधीः ॥ २८ ॥ मधु । नक्तं । उत । उषसः । मधुमदिति मधुऽमत् । पार्थिवं । रजः । मधु ।
द्यौः । अस्तु । नः । पिता ॥ २९ ॥ मधुमानिति मधुऽमान् । नः । वनस्पतिः । मधुमा
निति मधुऽमान् । अस्तु । सूर्यः । माध्वीः । गावः । भवंतु । नः ॥ ३० ॥ अपां । गंभन्

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सीद । मा । त्वा । सूर्यः । अभि । ताप्सीत् । मा । अग्निः । वैश्वानरः । अछिन्नपत्राऽइत्य
छिन्नऽपत्राः । प्रजाऽइति प्रऽजाः । अनुवीक्षस्वेत्यनुऽवीक्षस्व । अनु । त्वा । दिव्या । वृ
ष्टिः । सचतां ॥३१॥ त्रीन् । समुद्रान् । सं । असृपत् । स्वर्गानिति स्वःऽगान् । अपां ।
पतिः । वृषभः । इष्टकानां । पुरीषं । वसानः । सुकृतस्येति सुऽकृतस्य । लोके । तत्र ।
२१ गच्छ । यत्र । पूर्वे । परेताऽइति पराऽइताः ॥३२॥ ध्रुवा । असि । धरुणा । इतः । जज्ञे । प्र
थमं । एभ्यः । योनिभ्यऽइति योनिऽभ्यः । अधि । जातवेदाऽइति जातऽवेदाः । सः । गा २१
यत्र्या । त्रिष्टुभा । त्रिस्तुभेति त्रिऽस्तुभा । अनुष्टुभा । अनुस्तुभेत्यनुऽस्तुभा । च ।
देवेभ्यः । हव्यं । वहतु । प्रजानन्निति प्रऽजानन् ॥३३॥ इषे । राये । रमस्व । सहसे ।
द्युम्ने । ऊर्ज्जे । अपत्याय । सम्राडिति सम्ऽराट् । असि । स्वराडिति स्वऽराट् । असि ।

सारस्वतौ । त्वा । उत्सौ । प्र । अवतां ॥३४॥ अग्ने । युक्ष्व । हि । ये । तव । अश्वासः । देव ।
साधवः । अरं । वहंति । मन्यवे ॥३५॥ युक्ष्व । हि । देवहूतमानिति देवऽहूतमान् ।
अश्वान् । अग्ने । रथीरिवेति रथीःऽइव । नि । होता । पूर्व्यः । सदः ॥३६॥ सम्यक् ।
स्रवंति । सरितः । न । धेनाः । अंतः । हृदा । मनसा । पूयमानाः । घृतस्य । धाराः ।
अभि । चाकशीमि । हिरण्ययः । वेतसः । मध्ये । अग्नेः ॥३७॥ ऋचे । त्वा । रुचे । त्वा । भा
से । ज्योतिषे । त्वा । अभूत् । इदं । विश्वस्य । भुवनस्य । वाजिनं । अग्नेः । वैश्वानरस्य ।
च ॥३८॥ अग्निः । ज्योतिषा । ज्योतिष्मान् । रुक्मः । वर्चसा । वर्चस्वान् । सहस्र
दाऽइति सहस्रऽदाः । असि । सहस्राय । त्वा ॥३९॥ आदित्यं । गर्भं । पयसा । सं ।
अंग्धि । सहस्रस्य । प्रतिमामिति प्रतिऽमां । विश्वरूपमिति विश्वऽरूपं । परि

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

३२ ३२

वृद्धिं । हरसा । मा । अभि । मंऽस्थाः । शतायुषमिति शतऽआयुषं । कृणुहि । ची
यमानः ॥४०॥ वातस्य । जूतिं । वरुणस्य । नाभिं । अश्वं । जज्ञानं । सरिरस्य । म
ध्ये । शिशुं । नदीनां । हरिं । अद्रिबुध्नमित्यद्रिऽबुध्नं । अग्ने । मा । हिंसीः । परमे ।
व्योमन्निति विऽओमन् ॥४१॥ अजस्रं । इंदुं । अरुषं । भुरण्युं । अग्निं । ईळे ।
पूर्वचित्तिमिति पूर्वऽचित्तिं । नमोभिरिति नमःऽभिः । सः । पर्वभिरिति पर्वऽ
भिः । ऋतुश इत्यृतुऽशः । कल्पमानः । गां । मा । हिंसीः । अदितिं । विराजमि
ति विऽराजं ॥४२॥ वरूत्रीं । त्वष्टुः । वरुणस्य । नाभिं । अविं । जज्ञानां । रजसः ।
परस्मात् । महीं । साहस्रीं । असुरस्य । मायां । अग्ने । मा । हिंसीः । परमे ।

व्योमन्निति विऽओमन् ॥४३॥ यः । अग्निः । अग्नेः । अधि । अजायत । शोकात् ।
पृथिव्याः । उत । वा । दिवः । परि । येन । प्रजा इति प्रऽजाः । विश्वकर्मेति विश्वऽकर्मा ।
जजान । तं । अग्ने । हेळः । परि । ते । वृणक्तु ॥४४॥ इमं । मा । हिंसीः । द्विपाद
मिति द्विऽपादं । पशुं । सहस्राक्ष इति सहस्रऽअक्षः । मेधाय । चीयमानः । मयुं । पशुं ।
मेधं । अग्ने । जुषस्व । तेन । चिन्वानः । तन्वः । नि । सीद ॥४५॥ मयुं । ते । शुक् । ऋ
च्छतु । यं । द्विष्मः । तं । ते । शुक् । ऋच्छतु ॥४६॥ एकशफमित्येकऽशफं । पशुं । कनिक्र
दं । वाजिनं । वाजिनेषु । गौरं । आरण्यं । अनु । ते । दिशामि ॥४७॥ साहस्रं । शत
धारमिति शतऽधारं । उत्सं । व्यचमानमिति विऽअचमानं । सरिरस्य । मध्ये ।
घृतं । दुहानां । अदितिं । जनाय । मवयं ॥४८॥ ऊर्णायुं । वरुणस्य । नाभिं । त्वचं ।

२४ पशूनां ॥ द्विपदामिति द्विःऽपदां ॥ चतुष्पदां ॥ चतुःपदामिति चतुःऽपदां ॥ वसुः ॥ प्रजा
नामिति प्रऽजानां ॥ प्रथमं जनित्रं ॥ गुह्ये ॥ ४८ ॥ अजा ॥ हि ॥ अग्नेः ॥ अजनिष्ट ॥ शो
कात् ॥ सः ॥ अपश्यत् ॥ जनितारं ॥ अग्रे ॥ तेन ॥ देवाः ॥ देवतां ॥ अग्रं ॥ आयन् ॥ ते
न ॥ रोहं ॥ आयन् ॥ उप ॥ मेध्यासः ॥ आरभं ॥ ४९ ॥ त्वं ॥ यविष्ठ ॥ दाशुषः ॥ नॄन् ॥ पाहि
शृणुधि ॥ गिरः ॥ रक्ष ॥ तोकं ॥ उत ॥ त्मना ॥ ५० ॥ अपां ॥ त्वा ॥ एमन् ॥ सादयामि ॥ ओ
द्मन् ॥ भस्मन् ॥ ज्योतिषि ॥ अयने ॥ अर्णवे ॥ समुद्रे ॥ सरिरे ॥ क्षये ॥ सधिषि ॥ सद
ने ॥ सधस्थ इति सधऽस्थे ॥ योनौ ॥ पुरीषे ॥ पाथसि ॥ गायत्रेण ॥ त्रैष्टुभेन ॥ त्रैस्तु
भेनेति त्रैस्तुभेन ॥ जागतेन ॥ आनुष्टुभेन ॥ आनुस्तुभेनेत्यानुऽस्तुभेन ॥ पां
क्तेन ॥ त्वा ॥ छंदसा ॥ सादयामि ॥ ५१ ॥ अयं ॥ पुरः ॥ भुवः ॥ तस्य ॥ प्राणः ॥ भौवायनः ॥ २४

इति भौवऽआयनः ॥ वसंतः ॥ प्राणायन इति प्राणऽआयनः ॥ गायत्री ॥ वासंती ॥ ५२ ॥
गायत्र्यै ॥ गायत्रं ॥ गायत्रात् ॥ उपांशुरित्युपऽअंशुः ॥ उपांशोरित्युपऽअंशोः ॥
त्रिवृदिति त्रिऽवृत् ॥ त्रिवृत इति त्रिऽवृतः ॥ रथंतरमिति रथंऽतरं ॥ वसिष्ठः ॥ ऋषिः ॥
प्रजापतिगृहीतयेति प्रजापतिऽगृहीतया ॥ त्वया ॥ प्राणं ॥ गृह्णामि ॥ प्रजाभ्य इति
प्रऽजाभ्यः ॥ ५३ ॥ अयं ॥ दक्षिणा ॥ विश्वकर्मेति विश्वऽकर्मा ॥ तस्य ॥ मनः ॥ वैश्वकर्म
णमिति वैश्वऽकर्मणं ॥ ग्रीष्मः ॥ मानसः ॥ त्रिष्टुप् ॥ त्रिस्तुबिति त्रिऽस्तुप् ॥ ग्रैष्मी ॥ त्रि
ष्टुभः ॥ त्रिस्तुभ इति त्रिऽस्तुभः ॥ स्वारं ॥ स्वारात् ॥ अंतर्यामः ॥ अंतर्याम इत्यंतःऽयामः ॥ अंतर्या
मादित्यंतःऽयामात् ॥ पंचदशः ॥ पंचदश इति पंचऽदशः ॥ पंचदशादिति पंचऽदशात् ॥ बृहत् ॥
भरद्वाज इति भरत्ऽवाजः ॥ ऋषिः ॥ प्रजापतिगृहीतयेति प्रजापतिऽगृहीतया ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

त्वया । मनः । गृह्णामि । प्रजाभ्य इति प्रऽजाभ्यः ॥ ५४ ॥ अयं । पश्चात् । विश्वव्यचः ।
इति विश्वऽव्यचाः । तस्य । चक्षुः । वैश्वव्यचसमिति वैश्वऽव्यचसं । वर्षाः । चाक्षुष्यः ।
२८ जगती । वार्षी ॥ ५५ ॥ जगत्याः । ऋक्सममिति ऋक्ऽसमं । ऋक्समादित्यृक्ऽसमा
त् । शुक्रः । शुक्रात् । सप्तदश इति सप्तऽदशः । सप्तदशादिति सप्तऽदशात् । वैरूपं । ज
२५ मदग्निरिति जमत्ऽअग्निः । ऋषिः । प्रजापतिगृहीतयेति प्रजापतिऽगृहीतया ।
त्वया । चक्षुः । गृह्णामि । प्रजाभ्य इति प्रऽजाभ्यः ॥ ५६ ॥ इदं । उत्तरात् । स्वरिति स्वः । २५
तस्य । श्रोत्रं । सौवं । शरत् । श्रौत्री । अनुष्टुप् । अनुस्तुबित्यनुऽस्तुप् । शारदी ॥ ५७
अनुष्टुभः । अनुस्तुभ इत्यनुऽस्तुभः । ऐडं । ऐडात् । मंथी । मंथिनः । एकविंश इ
त्येकऽविंशः । एकविंशादित्येकऽविंशात् । वैराजं । विश्वामित्रः । ऋषिः ।

प्रजापतिगृहीतयेति प्रजापतिऽगृहीतया । त्वया । श्रोत्रं । गृह्णामि । प्रजाभ्य इति प्र
ऽजाभ्यः ॥ ५८ ॥ इयं । उपरि । मतिः । तस्यै । वाक् । मात्या । हेमंतः । वाच्यः । पंक्तिः । हैमंती ।
॥ ५९ ॥ पंक्त्यै । निधनवदिति निधनऽवत् । निधनवत इति निधनऽवतः । आग्रयणः ।
आग्रयणात् । त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ । त्रिनवत्रयस्त्रिंशावितित्रिनवत्रयस्त्रिं
शौ । त्रिणवत्रयस्त्रिंशाभ्यां । त्रिनवत्रयस्त्रिंशाभ्यामिति त्रिनवत्रयस्त्रिं
शाभ्यां । शाक्वररैवते इति शाक्वररैवते । विश्वकर्मेति विश्वऽकर्मा । ऋषिः । प्र
जापतिगृहीतयेति प्रजापतिऽगृहीतया । त्वया । वाचं । गृह्णामि । प्रजाभ्य इति
प्रऽजाभ्यः । लोकं । पृण । ताः । अस्य । इंद्रं । विश्वाः ॥ ६० ॥ ६१ ॥ इति चतुर्दशोध्यायः ॥
हरिः ॐ ॥ ध्रुवक्षितिरिति ध्रुवऽक्षितिः । ध्रुवयोनिरिति ध्रुवऽयोनिः । ध्रुवा ।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

असि । ध्रुवं । योनिं । आ । सीद । साधुयेति साधुऽया । उख्यस्य । केतुं । प्रथमं । जुषाणा ॥
अश्विना । अध्वर्यू इत्यध्वर्यू । सादयतां । इह । त्वा ॥ १ ॥ कुलायिनी । घृतवतीति घृत
ऽवती । पुरंधिरिति पुरंऽधिः । स्योने । सीद । सदने । पृथिव्याः । अभि । त्वा । रुद्राः ।
वसवः । गृणंतु । इमा । ब्रह्म । पीपिहि । सौभगाय ॥ २ ॥ स्वैः । दक्षैः । दक्षपितेति दक्ष
१९ ऽपिता । इह । सीद । देवानां । सुम्ने । बृहते । रणाय । पितेवेति पिताऽइव । एधि ।
सूनवे । आ । सुशेवेति सुऽशेवा । स्वावेशेति सुऽआवेशा । तन्वा । सं । विशस्व ॥ ३ ॥ १६
पृथिव्याः । पुरीषं । असि । अप्सः । नाम । तां । त्वा । विश्वे । अभि । गृणंतु । देवाः ॥
स्तोमपृष्ठेति स्तोमऽपृष्ठा । घृतवतीति घृतऽवती । इह । सीद । प्रजावदिति प्रजाऽ
वत् । अस्मे इत्यस्मे । द्रविणा । आ । यजस्व ॥ ४ ॥ अदित्याः । त्वा । पृष्ठे । सादयामि ।

अंतरिक्षस्य । धर्त्रीं । विष्टंभनीं । दिशां । अधिपत्नीमित्यधिऽपत्नीं । भुवनानां ।
ऊर्मिः । द्रप्सः । अपां । असि । विश्वकर्मेति विश्वऽकर्मा । ते । ऋषिः ॥ शुक्रः । शुचिः ।
ग्रैष्मौ । ऋतू इत्यृतू ॥ ६ ॥ सजूरिति सऽजूः । ऋतुभिरित्यृतुऽभिः । विधाभिरिति वि
ऽधाभिः । देवैः । देवैः । वयोनाधैरिति वयःऽनाधैः । अग्नये । त्वा । वैश्वानराय । वसुभि
रिति वसुऽभिः । रुद्रैः । आदित्यैः । विश्वैः । देवैः ॥ ७ ॥ प्राणं । मे । पाहि । अपानमित्य
पऽआनं । व्यानमिति विऽआनं । चक्षुः । मे । उर्व्या । वि । भाहि । श्रोत्रं । मे । श्लोकय ।
॥ ८ ॥ अपः । पिन्व । ओषधीः । जिन्व । द्विपादिति द्विऽपात् । अव । चतुष्पात् । चतुः
पादिति चतुःऽपात् । पाहि । दिवः । वृष्टिं । आ । ईरय ॥ ९ ॥ मूर्द्धा । वयः । प्रजापति
रिति प्रजाऽपतिः । छंदः । क्षत्रं । मयंदं । विष्टंभः । अधिपतिरित्यधिऽपतिः । वि

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ऽकर्मेति विश्वऽकर्मा। परमेष्ठी। परमेस्थीति परमेऽस्थी।।९।। बस्तः। विवलमिति
विऽवलं। वृष्णिः। विशालमिति विऽशालं। पुरुषः। तंद्रं। व्याघ्रः। अनाधृष्टं।।१०।।
सिंहः। छदिः। पष्ठवाडिति पष्ठऽवाट्। बृहती। उक्षा। ककुप्। ऋषभः। सतोबृ
हतीति सतःऽबृहती।।११।। अनड्वान्। पंक्तिः। धेनुः। जगती। त्र्यविरिति त्रिऽअ
२७ विः। त्रिष्टुप्। त्रिस्तुबिति त्रिऽस्तुप्। दित्यवाडिति दित्यऽवाट्। विराडिति वि
राट्।।१२।। पंचाविरिति पंचऽअविः। गायत्री। त्रिवत्स इति त्रिऽवत्सः। उष्णिक्। २६
तुर्यवाडिति तुर्यऽवाट्। अनुष्टुप्। अनुस्तुबित्यनुऽस्तुप्। छंदः।।१३।। इंद्रा
ग्नी इतींद्राग्नी। अव्यथमानां। इष्टकां। दृंहतं। युवं। पृष्ठेन। द्यावापृथिवी
इति द्यावापृथिवी। अंतरिक्षं। च। वि। बाधसे।।१४।। विश्वकर्मेति विश्वऽकर्मा।

त्वा। सादयतु। अंतरिक्षस्य। अंतरिक्षं। वायुः।।१५।। राज्ञी। असि। प्राची। दिक्।
विराडिति विऽराट्। दक्षिणा। सम्राडिति संऽराट्। प्रतीची। स्वराडिति स्वऽराट्।
उदीची। अधिपत्नीत्यधिऽपत्नी। असि। बृहती। दिक्। नभः। नभस्यः। वार्षिकौ।
इषः। ऊर्ज्जः। शारदौ। ऋतू इत्यृतू।।१६।। आयुः। मे। पाहि। प्राणं। अपानमित्यप
ऽआनं। व्यानमिति विऽआनं। चक्षुः। श्रोत्रं। वाचं। पिन्व। मनः। जिन्व। आत्मानं। पा
हि। ज्योतिः। मे। यच्छ।।१७।। मा। छंदः। प्रमेति प्रऽमा। प्रतिमेति प्रतिऽमा। अस्त्रीव
यः। पंक्तिः। उष्णिक्।।१८।। बृहती। अनुष्टुप्। अनुस्तुबित्यनुऽस्तुप्। विराडिति वि
राट्। गायत्री। त्रिष्टुप्। त्रिस्तुबिति त्रिऽस्तुप्। जगती।।१९।। पृथिवी। अंतरिक्षं।
द्यौः। समाः। नक्षत्राणि। वाक्।।२०।। मनः। कृषिः। हिरण्यं। गौः। अजा। अश्वः। छंदः।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥२१॥ अग्निः। देवता। वातः। सूर्यः। चंद्रमाः। वसवः। रुद्राः। आदित्याः। मरुतः। विश्वे।
देवाः। बृहस्पतिः। इंद्रः। वरुणः। देवता॥२२॥ मूर्द्धा। असि। राट्। ध्रुवा। धरुणा।
धर्त्री। धरणी। आयुषे। वर्चसे। कृष्यै। क्षेमाय॥२३॥ यंत्री। राट्। यंत्री। यमनी। ध्रु
वा। धैर्त्री। धरित्री। इषे। ऊर्ज्जे। रय्यै। पोषाय। त्वा॥२४॥ आशुः। त्रिवृदिति त्रि
२१ ऽवृत्। भांतः। पंचदश इति पंचऽदशः। व्योमेति विऽओम। सप्तदश इति सप्तऽदशः।
धरुणः। एकविंश इत्येकऽविंशः। प्रतूर्तिरिति प्रऽतूर्तिः। अष्टादश इत्यष्टा २१
ऽदशः। तपः। नवदश इति नवऽदशः। अभीवर्त्तः। अभिवर्त्त इत्यभिऽवर्त्तः। सविं
श इति सऽविंशः। वर्च्चः। द्वाविंशः। संभरण इति संऽभरणः। त्रयोविंश इति
त्रयःऽविंशः। योनिः। चतुर्विंश इति चतुःऽविंशः॥२५॥ गर्भाः। पंचविं

श इति पंचऽविंशः। ओजः। त्रिणवः। त्रिणव इति त्रिऽनवः। क्रतुः। एकत्रिं
श इत्येकऽत्रिंशः। प्रतिष्ठा। प्रतिष्ठेति प्रतिऽस्था। त्रयस्त्रिंश इति त्रयःऽत्रि
ंशः। ब्रध्नस्य। विष्टपं। चतुस्त्रिंश इति चतुःऽत्रिंशः। नाकः। षट्त्रिंश इ
ति षट्ऽत्रिंशः। विवर्त्त इति विऽवर्त्तः। अष्टाचत्वारिंश इत्यष्टाऽचत्वारिंशः।
धर्त्रं। चतुष्टोमः। चतुस्तोम इति चतुःऽस्तोमः॥२६॥ अग्नेः। भागः। असि। दी
क्षायाः। आधिपत्यमित्याधिऽपत्यं। ब्रह्म। स्पृतं। त्रिवृदिति त्रिऽवृत्। स्तोमः।
इंद्रस्य। भागः। असि। विष्णोः। आधिपत्यमित्याधिऽपत्यं। क्षत्रं। स्पृतं। पंच
दश इति पंचऽदशः। स्तोमः॥२७॥ नृचक्षसामिति नृऽचक्षसां। भागः। असि।
धातुः। आधिपत्यमित्याधिऽपत्यं। जनित्रं। स्पृतं। सप्तदश इति सप्तऽदशः।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

स्तोमः। मित्रस्य। भागः। असि। वरुणस्य। आधिपत्यमित्याधिऽपत्यं। दिवः।
वृष्टिः। वातः। स्पृतः। एकविंशइत्येकऽविंशः। स्तोमः॥२४॥ वसूनां। भागः।
असि। रुद्राणां। आधिपत्यमित्याधिऽपत्यं। चतुष्पात्। चतुःपादितिचतुःऽ
पात्। स्पृतं। चतुर्विंशइतिचतुःऽविंशः। स्तोमः। आदित्यानां। भागः।
२१ असि। मरुतां। आधिपत्यमित्याधिऽपत्यं। गर्भाः। स्पृताः। पंचविंश
इतिपंचऽविंशः। स्तोमः॥२५॥ अदितेः। भागः। असि। पूष्णः। आधि २६
पत्यमित्याधिऽपत्यं। ओजः। स्पृतं। त्रिणवः। त्रिनवइतित्रिऽनवः। स्तोमः।
देवस्य। सवितुः। भागः। असि। बृहस्पतेः। आधिपत्यमित्याधिऽपत्यं। स
मीचीः। दिशः। स्पृताः। चतुष्टोमः। चतुस्तोमइतिचतुःऽस्तोमः। स्तोमः।२६

यवानां। भागः। असि। अयवानां। आधिपत्यमित्याधिऽपत्यं। प्रजाइतिप्रऽ
जाः। स्पृताः। चतुश्चत्वारिंशइतिचतुःऽचत्वारिंशः। स्तोमः। ऋभूणां। भा
गः। असि। विश्वेषां। देवानां। आधिपत्यमित्याधिऽपत्यं। भूतं। स्पृतं। त्रय
स्त्रिंशइतित्रयःऽत्रिंशः। स्तोमः। सहः। सहस्यः। हैमंतिकौ। ऋतूइत्यृ
तू॥२७॥ एकया। अस्तुवत। प्रजाइतिप्रऽजाः। अधीयंत। प्रजापतिरिति
प्रजाऽपतिः। अधिपतिरित्यधिऽपतिः। आसीत्। तिसृभिरितितिसृऽभिः।
अस्तुवत। ब्रह्म। असृज्यत। ब्रह्मणः। पतिः। अधिपतिरित्यधिऽपतिः।
आसीत्। पंचभिरितिपंचऽभिः। अस्तुवत। भूतानि। असृज्यंत। भूता
नां। पतिः। अधिपतिरित्यधिऽपतिः। आसीत्। सप्तभिरितिसप्तऽभिः।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

४० अस्तुवत। सप्तऋषय इति सप्तःऋषयः। असृज्यंत। धाता। अधिपतिरित्य ४०
धिःपतिः। आसीत्॥३॥ नवभिरिति नवःभिः। अस्तुवत। पितरः। अ
सृज्यंत। अदितिः। अधिपत्नीत्यधिःपत्नी। आसीत्। एकादशभिरित्ये
कादशःभिः। अस्तुवत। ऋतवः। असृज्यंत। आर्तवाः। अधिपतय इ
त्यधिःपतयः। आसन्। त्रयोदशभिरिति त्रयोदशःभिः। अस्तुवत। मा
साः। असृज्यंत। संवत्सरः। अधिपतिरित्यधिःपतिः। आसीत्। पंचदश
भिरिति पंचदशःभिः। अस्तुवत। क्षत्रं। असृज्यत। इंद्रः। अधिपतिरित्य
धिःपतिः। आसीत्॥४॥ सप्तदशभिरिति सप्तदशःभिः। अस्तुवत। ग्रा
म्याः। पशवः। असृज्यंत। बृहस्पतिः। अधिपतिरित्यधिःपतिः। आसीत्।

नवदशभिरिति नवदशःभिः। अस्तुवत। शूद्रार्यौ। असृज्येतां। अहोरात्रे इत्यहो
रात्रे। अधिपत्नी इत्यधिःपत्नी। आस्तां। एकविंशत्येत्येकःविंशत्या। अस्तु
वत। एकशफा इत्येकःशफाः। पशवः। असृज्यंत। वरुणः। अधिपतिरित्यधिः
पतिः। आसीत्। त्रयोविंशत्येति त्रयःविंशत्या। अस्तुवत। क्षुद्राः। पशवः।
असृज्यंत। पूषा। अधिपतिरित्यधिःपतिः। आसीत्॥५॥ पंचविंशत्येति पं
चविंशत्या। अस्तुवत। द्यावापृथिवी इति द्यावापृथिवी। वि। ऐतां। वसवः।
रुद्राः। आदित्याः। अनुव्यायन्नित्यनुःविआयन्। ते। एव। अधिपतय इत्यधिःप
तयः। आसन्। नवविंशत्येति नवःविंशत्या। अस्तुवत। वनस्पतयः। असृ
ज्यंत। सोमः। अधिपतिरित्यधिःपतिः। आसीत्। एकत्रिंशतेत्येकःत्रिंशता।

सप्तविंशत्येति सप्तःविंशत्या।
अस्तुवत।

अस्तुवत। प्रजाः। असृज्यंत। यवाः। च। अयवाः। च। अधि
पतय इत्यधिःपतयः। आसन्॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

४१

अस्तृतवत। प्रजाइतिप्रऽजाः। असृज्यंत। यवाः। च। अयवाः। च। अधिपतीइत्यधिऽपत्
नीयः। आसन्। त्रयस्त्रिंशतेतित्रयःऽत्रिंशता। अस्तृतवत। भूतानि। अश्रा
म्यन्। प्रजापतिरितिप्रजाऽपतिः। परमेष्ठी। परमेष्ठीतिपरमेऽस्थी। अधिपति
रित्यधिऽपतिः। आसीत्॥२५॥७॥ इतिपदपाठेपंचदशोध्यायः॥७॥ हरिः ॐ॥
अग्ने। जातान्। प्र। नुद। नः। सपत्नानितिसऽपत्नान्। प्रति। अजातान्। जातवेद इ
तिजातऽवेदः। नुदस्व। अधि। नः। ब्रूहि। सुमना इतिसुऽमनाः। अहेळन्। तव। स्याम।
शर्मन्। त्रिवरूथइतित्रिऽवरूथे। उद्भाइत्युत्ऽभौ॥१॥ सहसा। जातान्। प्र। नुद। नः।
सपत्नानितिसऽपत्नान्। प्रति। अजातान्। नुद। जातवेद इतिजातऽवेदः। अधि। नः।
ब्रूहि। सुमनस्यमान इतिसुऽमनस्यमानः। वयं। स्याम। प्र। नुद। नः। सपत्नानितिस

पत्नान्। षोळशी। स्तोमः। ओजः। द्रविणं। चतुश्चत्वारिंशइतिचतुःऽचत्वारिंशः।
स्तोमः। वर्चः। द्रविणं॥२॥ अग्नेः। पुरीषं। असि। अप्सः। नाम। तां। त्वा। विश्वे। अभि। गृ
णंतु। देवाः। स्तोमपृष्ठेतिस्तोमऽपृष्ठा। घृतवतीतिघृतऽवती। इह। सीद। प्रजावदि
तिप्रजाऽवत्। अस्मे इत्यस्मे। द्रविणा। आ। यजस्व॥३॥ एवः। छंदः। वरिवः। छंदः। शंभूः
रितिशंऽभूः। परिभूरितिपरिऽभूः। आच्छदित्याऽछत्। मनः। व्यचः॥४॥ सिंधुः। समु
द्रः। सरिरं। ककुप्। त्रिककुबितित्रिऽककुप्। काव्यं। अंकुपं॥५॥ अक्षरपंक्तिरित्यक्ष
रऽपंक्तिः। पदपंक्तिरितिपदऽपंक्तिः। विष्टारपंक्तिः। विस्तारपंक्तिरितिविस्तारऽपंक्तिः।
क्षुरः। भ्रजः। आच्छदित्याऽछत्। प्रच्छदितिप्रऽछत्। संयदितिसंऽयत्। वियदितिवि
यत्॥६॥ बृहत्। रथंतरमितिरथंऽतरं। निकायइतिनिऽकायः। विवध इतिविऽवधः।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

४२ गिरः। अजः॥ सपरस्कृविति सं॥स्कृपूः। अनुष्टुप्। अनुस्कृविस्त्यनु॥स्कृपा॥७॥ एवः।
वरिवः। वयः। वयस्कृत्। वयःकृदिति वयः॥कृत्। विस्पर्धाः। विस्पर्धा इति वि॥स्पर्धाः।
विभ्राष्टुमिति विभ्राष्टुं। स्तुदः। दूरोहणमिति दुः॥रोहणं। तंद्रं। अर्कांकमित्यर्कः॥
अर्कं। अष्टौ। छंदः॥८॥ रश्मिना॥ सेत्याय। सत्यं। जिन्व। प्रेतिनेति प्र॥इतिना। धर्म
णा। धर्मं। अन्वित्येत्यनु॥इत्या। दिवा। दिवं। संधिनेति सं॥धिना। अंतरिक्षेण।
अंतरिक्षं॥९॥ प्रतिधिनेति प्रति॥धिना। पृथिव्या। पृथिवीं। विष्टंभेन। वृष्ट्या। ४२
वृष्टिं। प्रवयेति प्र॥वया। अन्हा। अहः। अनुयेत्यनु॥या। रात्र्या। रात्रीं॥१०॥ उशि
जा। वसुभ्य इति वसु॥भ्यः। वसून्। प्रकेतेनेति प्र॥केतेन। आदित्येभ्यः। आदित्यान्।
तंतुना। रायः। पोषेण। रायः। पोषं। संसर्पेणेति सं॥सर्पेण। श्रुताय। श्रुतं॥११॥

ऐडेन। ओषधीभिः। ओषधीः। उत्तमेनेत्युत्॥तमेन। तनूभिः। तनूः। वयोधसेति
वयः॥धसा। आधीतेनेत्या॥धीतेन। आधीतमित्या॥धीतं। अभिजितेत्यभि॥
जिता। तेजसा। तेजः॥ जिन्व॥१२॥ प्रतिपदिति प्रति॥पत्। असि। प्रतिपद इति
प्रति॥पदे। त्वा। अनुपदित्यनु॥पत्। अनुपद इत्यनु॥पदे। संपदिति सं॥पत्।
संपद इति सं॥पदे। तेजः। तेजसे॥१३॥ त्रिवृदिति त्रि॥वृत्। त्रिवृत इति त्रि॥वृ
ते। प्रवृदिति प्र॥वृत्। प्रवृत इति प्र॥वृते। विवृदिति वि॥वृत्। विवृत इति वि॥
वृते। सवृदिति स॥वृत्। सवृत इति स॥वृते॥१४॥ आक्रम इत्या॥क्रमः। आ
क्रमायेत्या॥क्रमाय। संक्रम इति सं॥क्रमः। संक्रमायेति सं॥क्रमाय। उत्क्रम
इत्युत्॥क्रमः। उत्क्रमायेत्युत्॥क्रमाय। उत्क्रांतिरित्युत्॥क्रांतिः। उत्क्रांत्या

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

इस्मूत्ऽऋक्सै। त्वा। अधिपतिनेत्यधिऽपतिना। ऊर्ज्जा। ऊर्ज्जं। वेष। ओमितिवेष।
ओः। क्षत्राय। क्षत्रं। जिन्व॥१५॥ राज्ञी। असि। प्राची। दिक्। वसवः। ते। देवाः। अ
धिपतय इत्यधिऽपतयः। अग्निः। हेतीनां। प्रतिधर्त्तेति प्रतिऽधर्त्ता॥१६॥ त्रि
वृदिति त्रिऽवृत्। त्वा। स्तोमः। पृथिव्यां। श्रयतु। आज्यं। उक्थं। अव्यथायै। स्त
४२ भ्नातु। रथंतरमिति रथंऽतरं। साम। प्रतिष्ठित्यै। प्रतिस्थित्या इति प्रतिऽस्थि ४२
त्यै। अंतरिक्षे॥१७॥ ऋषयः। त्वा। प्रथमजा इति प्रथमऽजाः। देवेषु। दिवः।
मात्रया। वरिम्णा। प्रथंतु। विधर्त्तेति विऽधर्त्ता। च। अयं। अधिपतिरित्य
धिऽपतिः। च। ते। त्वा। सर्वे। संविदाना इति संऽविदानाः। नाकस्य। पृष्ठे। स्व
र्ग इति स्वःऽगे। लोके। यजमानं। च। सादयंतु॥१८॥ विराळिति विऽराट्।

असि। दक्षिणा। दिक्। रुद्राः। ते। देवाः। अधिपतय इत्यधिऽपतयः। इंद्रः।
हेतीनां। प्रतिधर्त्तेति प्रतिऽधर्त्ता॥१९॥ पंचदश इति पंचऽदशः। त्वा। स्तोमः।
पृथिव्यां। श्रयतु। प्रउगं। उक्थं। अव्यथायै। स्तभ्नातु। बृहत्। साम। प्रतिष्ठि
त्यै। प्रतिस्थित्या इति प्रतिऽस्थित्यै। अंतरिक्षे॥२०॥ सम्राळिति संऽराट्।
असि। प्रतीची। दिक्। आदित्याः। ते। देवाः। अधिपतय इत्यधिऽपतयः।
वरुणः। हेतीनां। प्रतिधर्त्तेति प्रतिऽधर्त्ता॥२१॥ सप्तदश इति सप्तऽदशः।
त्वा। स्तोमः। पृथिव्यां। श्रयतु। मरुत्वतीयं। उक्थं। अव्यथायै। स्तभ्नातु। वैरू
पं। साम। प्रतिष्ठित्यै। प्रतिस्थित्या इति प्रतिऽस्थित्यै। अंतरिक्षे॥२२॥
स्वराळिति स्वऽराट्। असि। उदीची। दिक्। मरुतः। ते। देवाः। अधिपतय इ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अधिऽपतयः। सोमः। हेतीनां। प्रतिधर्तेति प्रतिऽधर्ता॥२३॥ एकविꣳशः इत्ये
कऽविꣳशः। स्तोमः। पृथिव्यां। श्रयतु। निष्केवल्यं। निःकेवल्यमिति निःऽ
केवल्यं। उक्थं। अव्यथायै। स्तभ्नातु। वैराजं। साम। प्रतिष्ठित्यै। प्रतिस्थित्या
इति प्रतिऽस्थित्यै। अन्तरिक्षे॥२४॥ अधिपत्नीत्यधिऽपत्नी। असि। बृह
ते ती। दिक्। विश्वे। त्वा। देवाः। अधिपतय इत्यधिऽपतयः। बृहस्पतिः। हेतीनां।
४४ प्रतिधर्तेति प्रतिऽधर्ता॥२५॥ त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ। त्रिणवत्रयस्त्रिꣳ ४४
शाविति त्रिणवऽत्रयस्त्रिꣳशौ। त्वा। स्तोमौ। पृथिव्यां। श्रयतां। वैश्वदेवाग्नि
मारुते इति वैश्वदेवाग्निमारुते। उक्थे इत्युक्थे। अव्यथायै। स्तभ्नीतां। शा
क्वररैवते इति शाक्वररैवते। सामनी इति सामनी। प्रतिष्ठित्यै। प्रतिस्थि

त्याइति प्रतिऽस्थित्यै। अन्तरिक्षे॥२६॥ अयं। पुरः। हरिकेश इति हरिऽकेशः। सू
र्यरश्मिरिति सूर्यऽरश्मिः। तस्य। रथगृत्स इति रथऽगृत्सः। च। रथौजा इति रथऽ
ओजाः। च। सेनानीग्रामण्यौ। सेनानीग्रामण्याविति सेनानीग्रामण्यौ। पुञ्जि
कस्थलेति पुञ्जिकऽस्थला। च। क्रतुस्थलेति क्रतुऽस्थला। च। अप्सरसौ।
दङ्क्ष्णवः। पशवः। हेतिः। पौरुषेयः। वधः। प्रहेतिरिति प्रऽहेतिः॥२७॥ तेभ्यः।
नमः। अस्तु। ते। नः। मृडयन्तु। ते। नः। अवन्तु। ते। यं। द्विष्मः। यः। च। नः। द्वेष्टि। तं।
एषां। जम्भे। दध्मः॥२८॥ अयं। दक्षिणा। विश्वकर्मेति विश्वऽकर्मा। तस्य।
रथस्वन इति रथऽस्वनः। रथेचित्र इति रथेऽचित्रः। मेनका। सहजन्येति सह
जन्या। अप्सरसौ। यातुधाना इति यातुऽधानाः। हेतिः। रक्षाꣳसि। प्रहेतिरि

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तिप्रऽहेतिः ॥ १९ ॥ अयं पश्चात् । विश्वव्यचा इति विश्वऽव्यचाः । तस्य रथप्रो
तऽइति रथऽप्रोतः । असमरथ इत्यसमऽरथः । प्रम्लोचन्ती प्रऽम्लोचन्ती । अ
नुम्लोचन्तीत्यनुऽम्लोचन्ती । अप्सरसौ । व्याघ्राः । हेतिः । सर्पाः । प्रहेतिरिति
प्रऽहेतिः ॥ २० ॥ अयं । उत्तरात् । संयद्वसुरिति संयत्ऽवसुः । तस्य । तार्क्ष्यः ।
४५ अरिष्टनेमिरित्यरिष्टऽनेमिः । विश्वाची । घृताची । अप्सरसौ । आपः । हेतिः ।
वातः । प्रहेतिरिति प्रऽहेतिः ॥ २१ ॥ अयं । उपरि । अर्वाग्वसुरित्यर्वाक्ऽवसुः । ४५
तस्य । सेनजिदिति सेनऽजित् । सुषेणः । सुषेण इति सुऽसेनः । उर्वशी । पूर्व
चित्तिरिति पूर्वऽचित्तिः । अप्सरसौ । अवस्फूर्जन्नित्यवऽस्फूर्जन् । हेतिः ।
विद्युदिति विऽद्युत् । प्रहेतिरिति प्रऽहेतिः ॥ २२ ॥ अयं । अग्निः । सहस्रिणः ।

वाजस्य । शतिनः । पतिः । मूर्धा । कविः । रयीणां ॥ २३ ॥ अबोधि । अग्निः ।
समिधेति सम्ऽइधा । जनानां । प्रति । धेनुमिवेति धेनुम्ऽइव । आयतीमित्याऽयतीं ।
उषासं । उषसमित्युषसं । यह्वाऽइवेति यह्वाःऽइव । प्र । वयां । उज्जिहाना इत्युत्ऽ
जिहानाः । प्र । भानवः । सिस्रते । नाकं । अच्छ ॥ २४ ॥ अवोचाम । कवये । मेध्या
य । वचः । वन्दारु । वृषभाय । वृष्णे । गविष्ठिरः । नमसा । स्तोमं । अग्नौ । दिवीवे
ति दिविऽइव । रुक्मं । उरुव्यञ्चमित्युरुऽव्यञ्चं । अश्रेत् ॥ २५ ॥ जनस्य । गोपाः । अ
जनिष्ट । जागृविः । अग्निः । सुदक्ष इति सुऽदक्षः । सुविताय । नव्यसे । घृतप्रती
क इति घृतऽप्रतीकः । बृहता । दिविस्पृशेति दिविऽस्पृशा । द्युमदिति द्युऽमत् ।
वि । भाति । भरतेभ्यः । शुचिः ॥ २६ ॥ त्वां । अग्ने । अङ्गिरसः । गुहा । हितं । अनु ।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अविंदन् । शिश्रियाणं । वनेवन इति वनेऽवने । सः । जायसे । मथ्यमानः । सहः । महत् ।
त्वां । आहुः । सहसः । पुत्रं । अंगिरः ॥३७॥ सखायः । सं । वः । सम्यंचं । इषं । स्तोमं । च ।
अग्नये । वर्षिष्ठाय । क्षितीनां । ऊर्जः । नप्त्रे । सहस्वते ॥३८॥ संऽसमिति संऽसं ।
इत् । युवसे । वृषन् । अग्ने । विश्वानि । अर्यः । आ । इळः । पदे । सं । इध्यसे । सः । नः ।
वसूनि । आ । भर ॥३९॥ त्वां । अग्ने । हविष्मंतः । देवं । मर्तासः । ईळते । मन्ये । त्वा ।
४६ जातवेदसमिति जातऽवेदसं । सः । हव्या । वक्षि । आनुषक् ॥४०॥ त्वां । चित्रश्र ४६
वस्तमेति चित्रश्रवःऽतम । हवंते । विक्षु । जंतवः । शोचिष्केशं । शोचिःऽकेशमिति
शोचिःऽकेशं । पुरुप्रियेति पुरुऽप्रिय । अग्ने । हव्याय । वोळ्हवे ॥४१॥ एना । वः ।
अग्निं । नमसा । ऊर्जः । नपातं । आ । हुवे । प्रियं । चेतिष्ठं । अरतिं । स्वध्वरमिति

सुऽअध्वरं । विश्वस्य । दूतं । अमृतं । सः । योजते । अरुषा । विश्वभोजसेति विश्वऽभो
जसा । सः । दुद्रवत् । स्वाहुत इति सुऽआहुतः ॥४२॥ सः । दुद्रवत् । स्वाहुत इति सुऽआ
हुतः । सुब्रह्मेति सुऽब्रह्मा । यज्ञः । सुशमीति सुऽशमी । वसूनां । देवं । राधः । जनानां ॥
॥४३॥ अग्ने । वाजस्य । गोमत इति गोऽमतः । ईशानः । सहसः । यहो इति यहो । अ
स्मे इत्यस्मे । धेहि । जातवेद इति जातऽवेदः । महि । श्रवः ॥४४॥ सः । इधानः । वसुः ।
कविः । अग्निः । ईळेन्यः । गिरा । रेवत् । अस्मभ्यं । पुर्वणीक । पुर्वनीकेति पुरुऽअनी
क । दीदिहि ॥४५॥ क्षपः । राजन् । उत । त्मना । अग्ने । वस्तोः । उत । उषसः । सः । तिग्म
जंभेति तिग्मऽजंभ । रक्षसः । दह । प्रति ॥४६॥ भद्रः । नः । अग्निः । आहुत इत्याऽहुतः ।
भद्रा । रातिः । सुभगेति सुऽभग । भद्रः । अध्वरः । भद्राः । उत । प्रशस्तय इति प्रऽशस्तयः ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

४७॥भद्राः।उत।प्रशस्तयइतिप्रशस्तयः।भद्रं।मनः।कृणुष्व।वृत्रतूर्यइतिवृत्र॰
तूर्ये।येन।समत्स्वितिसमत्ऽसु।सासहः।ससहइतिससहः॥४८॥येन।समत्स्वि
तिसमत्ऽसु।सासहः।ससहइतिससहः।अव।स्थिरा।तनुहि।भूरि।शर्धतां।
वनेम।ते।अभिष्टिभिरित्यभिष्टिऽभिः॥४९॥अग्निं।तं।मन्ये।यः।वसुः।अ
स्तं।यं।यंतिधेनवः।अस्तं।अर्वंतः।आशवः।अस्तं।नित्यासः।वाजिनः।इषं।
स्तोतृभ्यइतिस्तोतृऽभ्यः।आ।भर॥५०॥सः।अग्निः।यः।वसुः।गृणे।सं।यं।
आयंतीत्याऽयंति।धेनवः।सं।अर्वंतः।रघुद्रुवइतिरघुऽद्रुवः।सं।सुजातासइ
तिसुऽजातासः।सूरयः।इषं।स्तोतृभ्यइतिस्तोतृऽभ्यः।आ।भर॥५१॥उभेइत्युभे।
सुश्चंद्र।सुश्चंद्रेतिसुऽचंद्र।सर्पिषः।दर्वीइतिदर्वी।श्रीणीषे।आसनि।उतोइ

त्युतो।नः।उत्।पुपूर्याः।उक्थेषु।शवसः।पते।इषं।स्तोतृभ्यइतिस्तोतृऽभ्यः।आ
भर॥५२॥अग्ने।तं।अद्य।अश्वं।न।स्तोमैः।क्रतुं।न।भद्रं।हृदिस्पृशमितिहृदिऽ
स्पृशं।ऋध्याम।ते।ओहैः॥५३॥अध।हि।अग्ने।क्रतोः।भद्रस्य।दक्षस्य।साधोः।
रथीः।ऋतस्य।बृहतः।बभूथ॥५४॥एभिः।नः।अर्कैः।भव।नः।अर्वाङ्।स्वः।न।
ज्योतिः।अग्ने।विश्वेभिः।सुमनाइतिसुऽमनाः।अनीकैः॥५५॥अग्निं।होतारं।
मन्ये।दास्वंतं।वसुं।सूनुं।सहसः।जातवेदसमितिजातऽवेदसं।विप्रं।न।जात
वेदसमितिजातऽवेदसं।यः।ऊर्ध्वया।स्वध्वरइतिसुऽअध्वरः।देवः।देवाच्या।
कृपा।घृतस्य।विभ्राष्टिमितिविऽभ्राष्टिं।अनु।वष्टि।शोचिषा।आजुह्वान
स्येत्याऽजुह्वानस्य।सर्पिषः॥५६॥येन।ऋषयः।तपसा।सत्रं।आयन्।इंधा

४७

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ना:।अग्निं।स्वः।आभरंतइत्याऽभरंतः।तस्मिन्।अहं।नि।दधे।नाके।अग्निं।
यं।आहुः।मनवः।स्तीर्णबर्हिषमितिस्तीर्णऽबर्हिषं॥५७॥तं।पत्नीभिः।अनु।
गच्छेम।देवाः।पुत्रैः।भ्रातृभिरितिभ्रातृऽभिः।उत।वा।हिरण्यैः।नाकं।गृभ्णा
नाः।सुकृतस्येतिसुऽकृतस्य।लोके।तृतीये।पृष्ठे।अधि।रोचने।दिवः॥५८॥
४६ आ।वाचः।मध्यं।अरुहत्।भुरण्युः।अयं।अग्निः।सत्पतिरितिसत्ऽपतिः। ४६
चेकितानः।पृष्ठे।पृथिव्याः।निहितइतिनिऽहितः।दविद्युतत्।अधस्पदं।अ
धःपदमित्यधःऽपदं।कृणुतां।ये।पृतन्यवः॥५९॥अयं।अग्निः।वीरतमइति
वीरऽतमः।वयोधाइतिवयःऽधाः।सहस्रियः।द्योततां।अप्रयुच्छन्नित्यप्रऽयुच्छ
न्।विभ्राजमानइतिविऽभ्राजमानः।सरिरस्य।मध्ये।उप।प्र।याहि।दिव्यानि।

धाम॥६०॥संप्रच्यवध्वमितिसंऽप्रच्यवध्वं।उप।संप्रयातेतिसंऽप्रयात।अग्ने।प
थः।देवयानानितिदेवऽयानानान्।कृणुध्वं।पुनरितिपुनः।कृण्वाना।पितरा।यु
वाना।अन्वातांसीदित्यनुऽआतांसीत्।त्वयि।तंतुं।एतं॥६१॥उद्।बुध्य
स्व।अग्ने।प्रति।जागृहि।त्वं।इष्टापूर्तेइतीष्टाऽपूर्ते।सं।सृजेथां।अयं।च।अस्मि
न्।सधस्थइतिसधऽस्थे।अधि।उत्तरस्मिन्नित्युत्ऽतरस्मिन्।विश्वे।देवाः।
यजमानः।च।आसीदत॥६२॥येन।वहसि।सहस्रं।येन।अग्ने।सर्ववेदसमिति
सर्वऽवेदसं।तेन।इमं।यज्ञं।नः।नय।स्वः।देवेषु।गंतवे॥६३॥तपः।तपस्यः।शै
शिरौ।परमेष्ठी।परमेष्ठीतिपरमेऽस्थी।दिवः।सूर्यः॥६४॥प्रोथत्।अश्वः।
न।यवसे।अविष्यन्।यदा।महः।संवरणादितिसंऽवरणात्।वि।अस्थात्।आ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तु।अस्य।वातः।अनु।वाति।ज्योतिः।अघ।स्याते।अजनं।कण्ठं।असि॥६५॥आ
योः।त्वा।सदने।सादयामि।अवतः।छायायां।समुद्रस्य।हृदये।रश्मि।वतीं।
रश्मिवतीमितिरश्मिऽवतीं।भास्वतीं।आ।या।द्यां।भासि।आ।पृथिवीं।आ।
उरु।अंतरिक्षं।दिवं॥६४॥सहस्रस्य।प्रमेतिप्रऽमा।प्रतिमेतिप्रतिऽमा।उन्मे
४१ त्युत्ऽमा।साहस्रः।असि।सहस्राय।त्वा॥६५॥६५॥इतिपदपाठे पञ्चदशोध्या
यः॥६७॥६७॥६७॥हरिः ॐ॥नमः।ते।रुद्र।मन्यवे।उतो इति।ते।इषवे। ४९
नमः।बाहुभ्यामितिबाहुऽभ्यां।उत।ते।नमः॥१॥या।ते।रुद्र।शिवा।तनूः।अघो
रा।अपापकाशिनीत्यपापऽकाशिनी।तया।नः।तन्वा।शंतमयेतिशंऽतमया।
गिरिशंतेतिगिरिऽशंत।हस्ते।बिभर्षि।अस्तवे।शिवां।गिरित्रेतिगिरिऽत्र।

तां।कुरु।मा।हिंसीः।पुरुषं।जगत्॥२॥शिवेन।वचसा।त्वा।गिरिशेतिगिरिऽ
श।अच्छ।वदामसि।यथा।नः।सर्वं।इत्।जगत्।अयक्ष्मं।सुमना इतिसुऽमनाः॥
असत्॥३॥अधि।अवोचत्।अधिवक्तेत्यधिऽवक्ता।प्रथमः।दैव्यः।भिषक्।
अहीन्।च।सर्वान्।जंभयन्।सर्वाः।च।यातुधान्य इतियातुऽधान्यः।अधराचीः।
परा।सुव॥४॥असौ।यः।ताम्रः।अरुणः।उत।बभ्रुः।सुमंगल इतिसुऽमंगलः।
ये।च।एनं।रुद्राः।अभितः।दिक्षु।श्रिताः।सहस्रश इतिसहस्रऽशः।अव।एषां।
हेडः।ईमहे॥५॥असौ।यः।अवसर्पतीत्यवऽसर्पति।नीलग्रीव इतिनीलऽ
ग्रीवः।विलोहित इतिविऽलोहितः।उत।एनं।गोपाः।अदृश्रन्।अदृश्रन्।
उदहार्य इत्युदऽहार्यः।सः।दृष्टः।मृडयाति।नः॥६॥नमः।अस्तु।नीलग्रीवाय।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तिनीलऽग्रीवाय।।सहस्राक्षायेतिसहस्रऽअक्षाय।मीढुषे।अथोइत्यथो।ये।
अस्य।सत्वानः।अहं।तेभ्यः।अकरं।नमः।।८।।प्रमुंच।धन्वनः।त्वं।उभयोः।आ
र्त्न्योः।ज्यां।याः।च।ते।हस्ते।इषवः।परा।ताः।भगवइतिभगऽवः।वप।।९।।विज्यमि
तिविऽज्यं।धनुः।कपर्दिनः।विशल्यइतिविऽशल्यः।बाणवानितिबाणऽवान्।
५० उत।अनेशन्।अस्य।याः।इषवः।आभुः।अस्य।निषंगधिरितिनिषंगऽधिः।।१०
परि।ते।धन्वनः।हेतिः।अस्मान्।वृणक्तु।विश्वतः।अथोइत्यथो।यः।इषुधिरि ५०
तीषुऽधिः।तव।आरे।अस्मत्।नि।धेहि।तं।।११।।या।ते।हेतिः।मीढुष्टम।मी
ढुस्तमेतिमीढुःऽतम।हस्ते।बभूव।ते।धनुः।तया।अस्मान्।विश्वतः।त्वं।
अयक्ष्मया।परि।भुज।।१२।।अवतत्येत्यवऽतत्य।धनुः।त्वं।सहस्राक्षेतिस

हस्रऽअक्ष।शतेषुधइतिशतऽइषुधे।निशीर्येतिनिऽशीर्य।शल्यानां।मुखा।शि
वः।नः।सुमनाइतिसुऽमनाः।भव।।१३।।नमः।ते।आयुधाय।अनातताय।धृ
ष्णवे।उभाभ्यां।उत।ते।नमः।बाहुभ्यामितिबाहुऽभ्यां।तव।धन्वने।।१४।।मा।नः।
महांतं।उत।मा।नः।अर्भकं।मा।नः।उक्षंतं।उत।मा।नः।उक्षितं।मा।नः।वधीः।
पितरं।मा।उत।मातरं।मा।नः।प्रियाः।तन्वः।रुद्र।रीरिषः।रिरिषइतिरीरि
षः।।१५।।तोके।तनये।आयुषु।गोषु।अश्वेषु।रीरिषः।रिरिषइतिरिरिषः।
वीरान्।रुद्र।भामिनः।वधीः।हविष्मंतः।सदं।इत्।त्वा।हवामहे।।१६।।८।।
हिरण्यबाहवइतिहिरण्यऽबाहवे।सेनान्यइतिसेनाऽन्ये।दिशां।च।पतये।
नमः।नमः।वृक्षेभ्यः।हरिकेशेभ्यइतिहरिऽकेशेभ्यः।पशूनां।शष्पिंजराय।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

त्विषीमते। त्विषिमत इति त्विषिऽमते। पथीनां। हरिकेशायेति हरिऽकेशाय। उ
पवीतिन इत्युपऽवीतिने। पुष्टानां॥१७॥ बभ्लुशाय। आव्याधिन इत्याऽव्या
धिने। अन्नानां। भवस्य। हेत्यै। जगतां। रुद्राय। आततायिन इत्याततऽआ
यिने। क्षेत्राणां। सूताय। अहंत्यै। वनानां॥१८॥ रोहिताय। स्थपतये। वृक्षा
५३ णां। भुवंतये। वारिवस्कृताय। वारिवःकृतायेति वारिवःऽकृताय। ओष ५३
धीनां। मंत्रिणे। वाणिजाय। कक्षाणां। उच्चैर्घोषायेत्युच्चैःऽघोषाय। आ
क्रंदयत इत्याऽक्रंदयते। पत्तीनां॥१९॥ कृत्स्नायतायेति कृत्स्नऽआयताय।
धावते। सत्वनां। सहमानाय। निव्याधिन इति निऽव्याधिने। आव्याधिनीनामि नी
त्याऽव्याधिनीनां। ककुभाय। निषंगिणे। स्तेनानां। निचेरव इति निऽचेरवे।

परिचरायेति परिऽचराय। अरण्यानां॥२०॥ वंचते। परिवंचत इति परिऽवंच
ते। स्तायूनां। निषंगिणे। इषुधिमत इतीषुधिऽमते। तस्कराणां। सृकायिभ्य
इति सृकायिऽभ्यः। जिघांसद्भ्य इति जिघांसत्ऽभ्यः। मुष्णतां। असिमद्भ्य
इत्यसिमत्ऽभ्यः। नक्तं। चरद्भ्य इति चरत्ऽभ्यः। भ्यः। विकृंतानामिति विऽकृं
तानां॥२१॥ उष्णीषिणे। गिरिचरायेति गिरिऽचराय। कुलुंचानां। इषुमद्भ्य
इतीषुमत्ऽभ्यः। धन्वायिभ्य इति धन्वायिऽभ्यः। वः। आतन्वानेभ्य इत्याऽत
न्वानेभ्यः। प्रतिदधानेभ्य इति प्रतिऽदधानेभ्यः। आयच्छद्भ्य इत्याऽयच्छत्ऽ
भ्यः। अस्यद्भ्य इत्यस्यत्ऽभ्यः॥२२॥ विसृजद्भ्य इति विसृजत्ऽभ्यः। विध्य
द्भ्य इति विध्यत्ऽभ्यः। स्वपद्भ्य इति स्वपत्ऽभ्यः। जाग्रद्भ्य इति जाग्रत्ऽभ्यः। माया।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

नेभ्यः। आसीनेभ्यः। तिष्ठद्भ्य इति तिष्ठत्ऽभ्यः। धावद्भ्य इति धावत्ऽभ्यः।२३।
सभाभ्यः। सभापतिभ्य इति सभापतिऽभ्यः। अश्वेभ्यः। अश्वपतिभ्य इत्यश्वप
तिऽभ्यः। आव्याधिनीभ्य इत्याऽव्याधिनीभ्यः। विविध्यन्तीभ्य इति विऽविध्यन्ती
भ्यः। उगणाभ्यः। तृंहतीभ्यः।२४। गणेभ्यः। गणपतिभ्य इति गणपतिऽभ्यः।
व्रातेभ्यः। व्रातपतिभ्य इति व्रातपतिऽभ्यः। गृत्सेभ्यः। गृत्सपतिभ्य इति गृत्सप
तिऽभ्यः। विरूपेभ्य इति विऽरूपेभ्यः। विश्वरूपेभ्य इति विश्वऽरूपेभ्यः।२५। से
नाभ्यः। सेनानिभ्य इति सेनानिऽभ्यः। रथिभ्य इति रथिऽभ्यः। अरथेभ्यः। क्षत्तृ
भ्य इति क्षत्तृऽभ्यः। संग्रहीतृभ्य इति संग्रहीतृऽभ्यः। महद्भ्य इति महत्ऽभ्यः। अ
र्भकेभ्यः।२६। तक्षभ्य इति तक्षऽभ्यः। रथकारेभ्य इति रथऽकारेभ्यः। कुलालेभ्यः। ॥५२॥

कर्मारेभ्यः। निषादेभ्यः। निसादेभ्य इति निऽसादेभ्यः। पुंजिष्टेभ्यः। श्वनिभ्य इति
श्वनिऽभ्यः। मृगयुभ्य इति मृगयुऽभ्यः।२७। श्वभ्य इति श्वऽभ्यः। श्वपतिभ्य इति
श्वपतिऽभ्यः। भवाय। रुद्राय। शर्वाय। पशुपतय इति पशुऽपतये। नीलग्रीवाये
ति नीलऽग्रीवाय। शितिकंठायेति शितिऽकंठाय।२८। कपर्दिने। व्युप्तकेशा
येति व्युप्तऽकेशाय। सहस्राक्षायेति सहस्रऽअक्षाय। शतधन्वन इति शतऽध
न्वने। गिरिशायेति गिरिऽशयाय। शिपिविष्टायेति शिपिऽविष्टाय। मीढु
ष्टमाय। मीढुस्तमायेति मीढुःऽतमाय। इषुमत इतीषुऽमते।२९। ह्रस्वाय। वा
मनाय। बृहते। वर्षीयसे। वृद्धाय। संवृद्ध इति संऽवृधे। अग्र्याय। प्रथमाय। आ
शवे। अजिराय। शीघ्र्याय। शीभ्याय। ऊर्म्याय। अवस्वन्यायेत्यवऽस्वन्याय।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

नादेयाय। द्वीप्याय॥ ३१॥ ज्येष्ठाय। कनिष्ठाय। पूर्वजायेति पूर्वऽजाय। अपर
जायेत्यपरऽजाय। मध्यमाय। अपगल्भायेत्यपऽगल्भाय। जघन्याय। बु
ध्न्याय॥ ३२॥ सोभ्याय। प्रतिसर्यायेति प्रतिऽसर्याय। याम्याय। क्षेम्याय।
श्लोक्याय। अवसान्यायेत्यवऽसान्याय। उर्वर्याय। खल्याय॥ ३३॥ वन्याय।
५२ कक्ष्याय। श्रवाय। प्रतिश्रवायेति प्रतिऽश्रवाय। आशुषेणाय। आशुसेना
येत्याशुऽसेनाय। आशुरथायेत्याशुऽरथाय। शूराय। अवभेदिन इत्यवऽभे
दिने॥ ३४॥ बिल्मिने। कवचिने। वर्मिणे। वरूथिने। श्रुताय। श्रुतसेनाये ५२
ति श्रुतऽसेनाय। दुंदुभ्याय। आहनन्यायेत्याऽहनन्याय॥ ३५॥ धृष्णवे। प्रमृशा
येति प्रऽमृशाय। निषंगिणे। इषुधिमत इतीषुधिऽमते। तीक्ष्णेषव इति तीक्ष्ण

इषवे। आयुधिने। स्वायुधायेति सुऽआयुधाय। सुधन्वन इति सुऽधन्वने॥ ३६॥ स्रु य
त्याय। पथ्याय। काट्याय। नीप्याय। कुल्याय। सरस्याय। नादेयाय। वैशंताय॥ ३७॥
कूप्याय। अवट्याय। ईध्र्याय। आतप्यायेत्याऽतप्याय। मेघ्याय। विद्युत्यायेति
विऽद्युत्याय। वर्ष्याय। अवर्ष्याय॥ ३८॥ वात्याय। रेष्म्याय। वास्तव्याय। वास्तु
पायेति वास्तुऽपाय। सोमाय। रुद्राय। ताम्राय। अरुणाय॥ ३९॥ शंगव इति शं
गवे। पशुपतय इति पशुऽपतये। उग्राय। भीमाय। अग्रेवधायेत्यग्रेऽवधाय। दू
रेवधायेति दूरेऽवधाय। हंत्रे। हनीयसे॥ ४०॥ वृक्षेभ्यः। हरिकेशेभ्य इति हरि
केशेभ्यः। ताराय। शंभव इति शंऽभवे। मयोभव इति मयःऽभवे। शंकरायेति शं
कराय। मयस्कराय। मयःकरायेति मयःऽकराय। शिवाय। शिवतरायेति शिवऽ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तराय ॥४१॥ पार्याय । अवार्याय । प्रतरणायेति प्र॰तरणाय । उत्तरणायेत्युत्॰त
रणाय । आतार्याय । आलाद्याय । शष्प्याय । फेन्याय ॥४२॥ सिकत्याय । प्रवाह्यायेति
प्र॰वाह्याय । किंशिलाय । क्षयणाय । कपर्दिने । पुलस्तये । इरिण्याय । प्रप
थ्यायेति प्र॰पथ्याय ॥४३॥ व्रज्याय । गोष्ठ्याय । गोस्थ्यायेति गोः॰स्थ्याय । त
५४ ल्प्याय । गेह्याय । हृद्याय । निवेष्प्यायेति नि॰वेष्प्याय । काट्याय । गह्वरेष्ठाय । ५४
गह्वरेस्थायेति गह्वरे॰स्थाय ॥४४॥ शुष्क्याय । हरित्याय । पांसव्याय । रज
स्याय । लोप्याय । उलप्याय । ऊर्व्याय । सूर्व्यायेति सु॰ऊर्व्याय ॥४५॥ पर्णाय । प
र्णशदायेति पर्ण॰शदाय । अपगुरमाणायेत्यप॰गुरमाणाय । अभिघ्नत इत्यभि॰
घ्नते । आखिदत इत्या॰खिदते । प्रखिदत इति प्र॰खिदते । इषुकृद्भ्य इतीषुकृत्॰

भ्यः । धनुष्कृद्भ्यः । धनुःकृद्भ्य इति धनुः॰कृद्भ्यः । चावः । किरिकेभ्यः । देवानां ।
हृदयेभ्यः । विचिन्वत्केभ्य इति वि॰चिन्वत्केभ्यः । विक्षिणत्केभ्य इति वि॰क्षिणत्के
भ्यः । आनिर्हतेभ्य इत्यानिः॰हतेभ्यः ॥४६॥ द्रापे । अंधसः । पते । दरिद्र । नीललोहि
तेति नील॰लोहित । आसां । प्रजानामिति प्र॰जानां । एषां । पशूनां । मा । भेः । मा । रु
इति मो । रोक् । मो इति मो । च । नः । किं । चन । आमम्त् ॥४७॥ इमाः । रुद्राय । तवसे । क
पर्दिने । क्षयद्वीरायेति क्षयत्॰वीराय । प्र । भरामहे । मतीः । यथा । नः । असत् । द्विप
द इति द्वि॰पदे । चतुष्पदे । चतुःपद इति चतुः॰पदे । विश्वं । पुष्टं । ग्रामे । अस्मिन् । अना
तुरं ॥४८॥ या । ते । रुद्र । शिवा । तनूः । शिवा । विश्वाहा । भेषजी । शिवा । रुतस्य । भेष
जी । तया । नः । मृड । जीवसे ॥४९॥ परि । नः । हेतिः । रुद्रस्य । वृज्यात् । परि । त्वेष

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

५५

स्य । दुर्मतिरिति दुःऽमतिः । मही । गात् । अव । स्थिरा । मघवद्भ्य इति मघवत्ऽभ्यः । तनु
ष्व । मीढ्वः । तोकाय । तनयाय । मृळ ॥५०॥ मीढुष्टम । मीढुस्तमेति मीढुःऽत
म । शिवतमेति शिवऽतम । शिवः । नः । सुमना इति सुऽमनाः । भव । परमे । वृक्षे । आ
युधं । निधायेति निऽधाय । कृत्तिं । वसानः । आ । चर । पिनाकं । बिभ्रत् । आ । गहि ॥५१
विकिरिद्रेति विऽकिरिद्र । विलोहितेति विऽलोहित । नमः । ते । अस्तु । भगव इति भ
गऽवः । याः । ते । सहस्रं । हेतयः । अन्यं । अस्मत् । नि । वपंतु । ताः ॥५२॥ सहस्राणि ।
सहस्रश इति सहस्रऽशः । बाह्वोः । तव । हेतयः । तासां । ईशानः । भगव इति भगऽवः ।
पराचीना । मुखा । कृधि ॥५३॥ असंख्याता इत्यसंऽख्याता । सहस्राणि । ये । रुद्राः । अ
धि । भूम्यां । तेषां । सहस्रयोजन इति सहस्रऽयोजने । अव । धन्वानि । तन्मसि ॥५४

अस्मिन् । महति । अर्णवे । अंतरिक्षे । भवाः । अधि ॥५५॥ नीलग्रीवा इति नीलऽ
ग्रीवाः । शितिकंठा इति शितिऽकंठाः । दिवं । रुद्राः । उपश्रिता इत्युपऽश्रिताः ॥५६॥
शर्वाः । अधः । क्षमाचरा इति क्षमाऽचराः ॥५७॥ वृक्षेषु । शष्पिंजराः । नीलग्रीवा
इति नीलऽग्रीवाः । विलोहिता इति विऽलोहिताः ॥५८॥ भूतानां । अधिपतय इत्य
धिऽपतयः । विशिखास इति विऽशिखासः । कपर्दिनः ॥५९॥ पथां । पथिरक्षय इति
पथिऽरक्षयः । ऐलबृदाः । आयुर्युध इत्यायुःऽयुधः ॥६०॥ तीर्थानि । प्रचरंतीति
प्रऽचरंति । सृकाहस्ता इति सृकाऽहस्ताः । निषंगिणः ॥६१॥ अन्नेषु । विविध्यंतीति
विऽविध्यंति । पात्रेषु । पिबतः । जनान् ॥६२॥ एतावंतः । च । भूयांसः । च । दिशः ।
रुद्राः । वितस्थिर इति विऽतस्थिरे ॥६३॥ नमः । अस्तु । रुद्रेभ्यः । ये । दिवि । येषां । व

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

र्वे। इषवः। तेभ्यः। दश। प्राचीः। दक्षिणा। प्रतीचीः। उदीचीः। ऊर्ध्वाः। अंतरिक्षे। वातः।
पृथिव्यां। अन्नं॥६४॥७॥ इति पदपाठे षोडशोध्यायः॥७॥७॥७॥ हरिः ॐ॥
अश्मन्। ऊर्जं। पर्वते। शिश्रियाणां। अद्भ्य इत्यत्ऽभ्यः। ओषधीभ्यः। वनस्पति-
भ्य इति वनस्पतिऽभ्यः। अधि। संभृतमिति संऽभृतं। पयः। तां। नः। इषं। ऊर्जं। धत्त।
मरुतः। संरराणा इति संऽरराणाः। अश्मन्। ते। क्षुत्। मयि। ते। ऊर्क्। यं। द्विष्मः। तं।
ते। शुक्। ऋच्छतु॥१॥ इमाः। मे। अग्ने। इष्टकाः। धेनवः। संतु। एका। च। दश। शतं। स-
हस्रं। अयुतं। नियुतमिति निऽयुतं॥२॥ अर्बुदं। न्यर्बुदमिति निऽअर्बुदं। समुद्रः।
मध्यं। अंतः। परार्द्ध इति पराऽअर्द्धः। एताः। मे। अग्ने। इष्टकाः। धेनवः। संतु। अमुत्र।
अमुष्मिन्। लोके। ऋतवः। स्थ। ऋतावृधः। ऋतवृध इत्यृतऽवृधः। ऋतुस्थाः। ऋ-

तुस्था इति ऋतुऽस्थाः। स्थ। ऋतावृधः। ऋतवृध इत्यृतऽवृधः। घृतश्चुत इति
घृतऽश्चुतः। मधुश्चुत इति मधुऽश्चुतः। विराज इति विऽराजः। नाम। कामदुघा इति
कामऽदुघाः। अक्षीयमाणाः॥४॥ समुद्रस्य। त्वा। अवकया। अग्ने। परि। व्ययाम-
सि। पावकः। अस्मभ्यं। शिवः। भव॥५॥ हिमस्य। त्वा। जरायुणा। अग्ने। परि। व्य-
यामसि। पावकः। अस्मभ्यं। शिवः। भव॥६॥ उप। ज्मन्। उप। वेतसे। अव। तर।
नदीषु। आ। अग्ने। पित्तं। अपां। असि। मंडूकि। ताभिः। आ। गहि। सः। इमं। नः।
यज्ञं। पावकवर्णमिति पावकऽवर्णं। शिवं। कृधि॥७॥ अपां। इदं। न्ययनमि-
ति निऽअयनं। समुद्रस्य। निवेशनमिति निऽवेशनं। अन्यान्। ते। अस्मत्।
तपंतु। हेतयः। पावकः। अस्मभ्यं। शिवः। भव॥८॥ अग्ने। पावक। रोचिषा। मं-

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

५७

रया। देवान्। जुह्वया। आ। देवान्। वक्षि। यक्षि। च॥ ९॥ सः। नः। पावक। दीदिव इति दी
दिऽवः। अग्ने। देवान्। इह। आ। वह। उप। यज्ञं। हविः। च। नः॥ १०॥ पावकया। यः। य
चितयंत्या। कृपा। क्षामन्। रुरुचे। उषसः। न। भानुना। तूर्वन्। न। यामन्। एतस्य।
नु। रणे। आ। यः। घृणे। न। ततृषाणः। अ जरः॥ ११॥ नमः। ते। हरसे। शोचिषे।
नमः। ते। अस्तु। अर्चिषे। अन्यान्। ते। अस्मत्। तपंतु। हेतयः। पावकः। अस्म
भ्यं। शिवः। भव॥ नृषदे। नृसद इति नृऽसदे। वेट्। अप्सुषदे। अप्सुसद इत्यप्सु
ऽसदे। बर्हिषदे। बर्हिसद इति बर्हिःऽसदे। वनसद इति वनऽसदे। स्वर्विद इति
स्वःऽविदे। वेट्॥ १२॥ ये। देवाः। देवानां। यज्ञियाः। यज्ञियानां। संवत्सरीणं। उप।
भागं। आसते। अहुताद इत्यहुतऽअदः। हविषः। यज्ञे। अस्मिन्। स्वयं। पिबंतु।

मधुनः। घृतस्य॥ १३॥ ये। देवाः। देवेषु। अधि। देवत्वमिति देवऽत्वं। आयन्। ये। ब्र
ह्मणः। पुरएतार इति पुरःऽएतारः। अस्य। येभ्यः। न। ऋते। पवते। धाम। किं। चन। न।
ते। दिवः। न। पृथिव्याः। अधि। स्नुषु॥ १४॥ प्राणदा इति प्राणऽदाः। अपानदा इत्य
पानऽदाः। व्यानदा इति व्यानऽदाः। वर्चोदा इति वर्चःऽदाः। वरिवोदा इति वरिवः
ऽदाः। अन्यान्। ते। अस्मत्। तपंतु। हेतयः। पावकः। अस्मभ्यं। शिवः। भव॥ १५॥
अग्निः। तिग्मेन। शोचिषा। यासत्। विश्वं। नि। अत्रिणं। अग्निः। नः। वनुते।
रयिं॥ १६॥ यः। इमा। विश्वा। भुवनानि। जुह्वत्। ऋषिः। होता। नि। असीदत्।
पिता। नः। सः। आशिषेत्याऽशिषा। द्रविणं। इच्छमानः। प्रथमच्छदिति प्र
थमऽछत्। अवरान्। आ। विवेश॥ १७॥ किं। स्वित्। आसीत्। अधिष्ठानं।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अधिष्ठानमित्यधिऽस्थानं। आरंभणमित्याऽरंभणं। कतमत्। स्वित्। कथा।
आसीत्। यतः। भूमिं। जनयन्। विश्वकर्मेति विश्वऽकर्मा। वि। द्यां। और्णो
त्। महिना। विश्वचक्षा इति विश्वऽचक्षाः॥१८॥ विश्वतश्चक्षुरिति विश्वतःऽ
चक्षुः। उत। विश्वतोमुख इति विश्वतःऽमुखः। विश्वतोबाहुरिति विश्वतःऽबाहुः।
५६ उत। विश्वतस्पात्। विश्वतःपादिति विश्वतःऽपात्। सं। बाहुभ्यामिति बाहुऽ ५६
भ्यां। धमति। सं। पतत्रैः। द्यावाभूमी इति द्यावाभूमी। जनयन्। देवः। ए
कः॥१९॥ किं। स्वित्। वनं। कः। ऊं इति। सः। वृक्षः। आस। यतः। द्यावापृथि
वी इति द्यावापृथिवी। निष्टतक्षुः। निस्ततक्षुरिति निःऽततक्षुः। मनीषिणः।
मनसा। पृच्छत। इत्। ऊं इति। तत्। यत्। अध्यतिष्ठदित्यधिऽअतिष्ठत्।

भुवनानि। धारयन्॥२०॥ या। ते। धामानि। परमाणि। या। अवमा। या। मध्यमा।
विश्वकर्मन्निति विश्वऽकर्मन्। उत। इमा। शिक्ष। सखिभ्य इति सखिऽभ्यः। हविषि।
स्वधाव इति स्वधाऽवः। स्वयं। यजस्व। तन्वं। वृधानः॥२१॥ चक्षुषः। पिता। मनसा।
हि। धीरः। घृतं। एने इत्येने। अजनयत्। नम्नमाने इति नम्नमाने। यदा। इत्। अंताः
अदृहंत। पूर्वे। आत्। इत्। द्यावापृथिवी इति द्यावापृथिवी। अप्रथेतां॥२२॥
विश्वकर्मेति विश्वऽकर्मा। विमना इति विऽमनाः। आत्। विहाया इति विऽहायाः।
धाता। विधातेति विऽधाता। परमा। उत। संदृगिति संऽदृक्। तेषां। इष्टानि। सं।
इषा। मदंति। यत्र। सप्तऋषीनिति सप्तऽऋषीन्। परः। एकं। आहुः॥२३॥ यः।
नः। पिता। जनिता। यः। विधातेति विऽधाता। धामानि। वेद। भुवनानि। विश्वा।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

यः । देवानां । नामधा इति नामऽधाः । एकः । एव । तं । संप्रश्नमिति संऽप्रश्नं । भुवना ।
यंति । अन्या ॥ २४ ॥ ते । आ । अयजंत । द्रविणं । सं । अस्मै । ऋषयः । पूर्वे । जरि
तारः । न । भूना । असूर्ते । सूर्ते । रजसि । निऽसत्ते । निसत्त इति निऽसत्ते । ये । भूतानि ।
समकृण्वन्निति संऽअकृण्वन् । इमानि ॥ २५ ॥ परः । दिवा । परः । एना । पृथि
५९ व्या । परः । देवेभिः । असुरैः । यत् । अस्ति । कं । स्वित् । गर्भं । प्रथमं । दध्रे । आपः । ५९
यत्र । देवाः । समपश्यंतेति संऽअपश्यंत । पूर्वे ॥ २६ ॥ तं । इत् । गर्भं । प्रथमं । दध्रे ।
आपः । यत्र । देवाः । समगच्छंतेति संऽअगच्छंत । विश्वे । अजस्य । नाभौ । अधि ।
एकं । अर्पितं । यस्मिन् । विश्वानि । भुवनानि । तस्थुः ॥ २७ ॥ न । तं । विदाथ । यः ।
इमा । जजान । अन्यत् । युष्माकं । अंतरं । बभूव । नीहारेण । प्रावृताः । जल्प्या ।

असुतृप इत्यसुऽतृपः । उक्थशासः । उक्थशास इत्युक्थऽशासः । चरंति ॥ २८ ॥ वि
श्वकर्मेति विश्वऽकर्मा । हि । अजनिष्ट । देवः । आत् । इत् । गंधर्वः । अभवत् । द्वि
तीयः । तृतीयः । पिता । जनिता । ओषधीनां । अपां । गर्भं । वि । अदधात् । पुरु
त्रेति पुरुऽत्रा ॥ २९ ॥ आशुः । शिशानः । वृषभः । न । भीमः । घनाघनः । क्षोभणः ।
चर्षणीनां । संक्रंदन इति संऽक्रंदनः । अनिमिष इत्यनिऽमिषः । एकवीर इत्ये
कऽवीरः । शतं । सेनाः । अजयत् । साकं । इंद्रः ॥ ३० ॥ संक्रंदनेनेति संऽक्रंदनेन ।
अनिमिषेणेत्यनिऽमिषेण । जिष्णुना । युत्कारेणेति युत्ऽकारेण । दुश्च्यवने
नेति दुःऽच्यवनेन । धृष्णुना । तत् । इंद्रेण । जयत । तत् । सहध्वं । युधः । नरः । इ
षुहस्तेनेतीषुऽहस्तेन । वृष्णा ॥ ३१ ॥ सः । इषुहस्तैरितीषुऽहस्तैः । सः । निषंगिभि

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

७

ङ्गिभिरिति निषङ्गिऽभिः। वशी। संस्रष्टेति संऽस्रष्टा॥ सः। युधः। इन्द्रः। गणेन। संसृष्टजि
दिति संसृष्टऽजित्। सोमपा इति सोमऽपाः। बाहुशर्द्धीति बाहुऽशर्द्धी। उग्रधन्वेत्युग्र
ऽधन्वा। प्रतिहिताभिरिति प्रतिऽहिताभिः। अस्ता॥ २२॥ बृहस्पते। परि। दीय।
रथेन। रक्षोहेति रक्षःऽहा। अमित्रान्। अपबाधमान इत्यपऽबाधमानः। प्रभञ्ज
न्निति प्रऽभञ्जन्। सेनाः। प्रमृण इति प्रऽमृणः। युधा। जयन्। अस्माकम्। एधि। अ
विता। रथानाम्॥ २३॥ बलविज्ञाय इति बलऽविज्ञायः। स्थविरः। प्रवीर इति प्रऽवीरः।
सहस्वान्। वाजी। सहमानः। उग्रः। अभिवीर इत्यभिऽवीरः। अभिसत्वेत्यभिऽ
सत्वा। सहोजा इति सहःऽजाः। जैत्रम्। इन्द्र। रथम्। आ। तिष्ठ। गोविदिति गोऽवित्॥ २४॥
गोत्रभिदमिति गोत्रऽभिदम्। गोविदमिति गोऽविदम्। वज्रबाहुमिति वज्रऽबाहुम्। ज

यन्तम्। अज्म। प्रमृणन्तमिति प्रऽमृणन्तम्। ओजसा। इमम्। सजाता इति सऽजाताः। अनु।
वीरयध्वम्। इन्द्रम्। सखायः। अनु। सम्। रभध्वम्॥ २५॥ अभि। गोत्राणि। सहसा। गाहमानः।
अदयः। वीरः। शतमन्युरिति शतऽमन्युः। इन्द्रः। दुश्च्यवन इति दुःऽच्यवनः। पृतना
षाट्। अयुध्यः। अस्माकम्। सेनाः। अवतु। प्र। युत्स्विति युत्ऽसु॥ २६॥ इन्द्रः। आसाम्।
नेता। बृहस्पतिः। दक्षिणा। पुरः। यज्ञः। पुरः। एतु। सोमः। देवसेनानामिति देवऽ
सेनानाम्। अभिभञ्जतीनामित्यभिऽभञ्जतीनाम्। जयन्तीनाम्। मरुतः। यन्तु। अग्रम्॥ २७
इन्द्रस्य। वृष्णः। वरुणस्य। राज्ञः। आदित्यानाम्। मरुताम्। शर्द्धः। उग्रम्। महामनसा
मिति महाऽमनसाम्। भुवनच्यवानामिति भुवनऽच्यवानाम्। घोषः। देवानाम्। जय
ताम्। यन्तु। घोष उत्। अस्थात्॥ २८॥ उत्। हर्षय। मघवन्निति मघऽवन्। आयु

७

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

धानि। उत्। सत्वनां। मामकानां। मनांऽसि। उत्। वृत्रहन्निति वृत्रऽहन्। वाजिनां। वा
जिनानि। उत्। रथानां। जयतां। यंतु। घोषाः॥४२॥ अस्माकं। इंद्रः। समृतेष्विति सं
ऽऋतेषु। ध्वजेषु। अस्माकं। याः। इषवः। ताः। जयंतु। अस्माकं। वीराः। उत्तरऽइत्युत्
ऽतरे। भवंतु। अस्मान्। ऊं इत्यूं। देवाः। अवत। हवेषु॥४३॥ अमीषां। चित्तं। प्रतीलो
भयंतीति प्रतिऽलोभयंती। गृहाण। अंगानि। अप्वे। परा। इहि। अभि। प्र। इहि
६१ निः। दह। हृत्स्विति हृत्ऽसु। शोकैः। अंधेन। अमित्राः। तमसा। सचंतां॥४४॥ अ ६१
वसृष्टेत्यवऽसृष्टा। परा। पत। शरव्ये। ब्रह्म। संऽशिते। संशितेति संऽशिते।
गच्छ। अमित्रान्। प्र। पद्यस्व। मा। अमीषां। कं। चन। उत्। शिषः॥४५॥ प्र। इत। जय
त। नरः। इंद्रः। वः। शर्म। यच्छतु। उग्राः। वः। संतु। बाहवः। अनाधृष्याः। यथा। असथ॥

४६॥ असौ। या। सेना। मरुतः। परेषां। अभि। आ। एति। नः। ओजसा। स्पर्द्धमा
ना। तां। गुहत। तमसा। अपव्रतेनेत्यपऽव्रतेन। यथा। अमी इत्यमी। अन्यः। अ
न्यं। न। जानन्॥४७॥ यत्र। बाणाः। संपतंतीति संऽपतंति। कुमाराः। विशिखा इ
वेति विशिखाःऽइव। तत्। नः। इंद्रः। बृहस्पतिः। अदितिः। शर्म। यच्छतु। विश्वाहा।
शर्म। यच्छतु॥४८॥ मर्माणि। ते। वर्मणा। छादयामि। सोमः। त्वा। राजा। अमृतेन।
अनु। वस्तां। उरोः। वरीयः। वरुणः। ते। कृणोतु। जयंतं। त्वा। अनु। देवाः। मदंतु॥४९॥
उत्। एनं। उत्तरामित्युत्ऽतरां। नय। अग्ने। घृतेन। आहुतेत्याऽहुत। रायः। पोषेण। सं।
सृज। प्रजयेति प्रऽजया। च। बहुं। कृधि॥५०॥ इंद्र। इमं। प्रतरामिति प्रऽतरां। नय।
सजातानामिति सऽजातानां। असत्। वशी॥ सं। एनं। वर्चसा। सृज। देवानां। भाग

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

दाऽइति भागऽदाः। असत्। ४८। यस्य। कुर्मः। गृहे। हविः। तं। अग्ने। वर्द्धय। त्वं। तस्मै।
देवाः। अधि। ब्रवन्। अयं। च। ब्रह्मणः। पतिः। ४९। पंच। दिशः। देवीः। यज्ञं। अवंतु
देवीः। अप। अमतिं। दुर्मतिमिति दुःऽमतिं। बाधमानाः। रायः। पोषे। यज्ञपतिमि
६२ तियज्ञऽपतिं। आभजंतीत्याऽभजंतीः। रायः। पोषे। यज्ञपतिमिति यज्ञऽपतिं। अधि।
यज्ञे। अस्थात्। ५०। समिद्धऽइति संऽइद्धे। अग्नौ। अधि। मामहानऽइति
ममहानः। उक्थपत्रऽइत्युक्थऽपत्रः। ईड्यः। गृभीतः। तप्तं। घर्मं। परिगृह्येति परिऽगृ ६३
ह्य। अयजंत। ऊर्जा। यत्। यज्ञं। अयजंत। देवाः। ५१। दैव्याय। धर्त्रे। जोष्ट्रे। देवश्री
रिति देवऽश्रीः। श्रीमणाः। श्रीमनाऽइति श्रीऽमनाः। शतपयाऽइति शतऽपयाः। प
रिगृह्येति परिऽगृह्य। देवाः। यज्ञं। आयन्। देवाः। देवेभ्यः। अध्वर्यन्तः। अस्थुः। ५२।

वीतं। हविः। शमितं। शमिता। यजध्यै। तुरीयः। यज्ञः। यत्र। हव्यं। एति। ततः। वाकाः।
आशिषऽइत्याऽशिषः। नः। जुषंतां। ५३। सूर्यरश्मिरिति सूर्यऽरश्मिः। हरिकेशऽइति
हरिऽकेशः। पुरस्तात्। सविता। ज्योतिः। उत्। अयान्। अजस्रं। तस्य। पूषा। प्रसवऽइति
प्रऽसवे। याति। विद्वान्। संपश्यन्निति संऽपश्यन्। विश्वा। भुवनानि। गोपाः। ५४। वि
मानऽइति विऽमानः। एषः। दिवः। मध्ये। आस्ते। आपप्रिवानित्याऽपप्रिवान्। रोद
सीऽइति रोदसी। अंतरिक्षं। सः। विश्वाचीः। अभि। चष्टे। घृताचीः। अंतरा। पूर्वं।
अपरं। च। केतुं। ५५। उक्षा। समुद्रः। अरुणः। सुपर्णऽइति सुऽपर्णः। पूर्वस्य। योनिं।
पितुः। आ। विवेश। मध्ये। दिवः। निहितऽइति निऽहितः। पृश्निः। अश्मा। वि। चक्रमे।
रजसः। पाति। अंतौ। ५६। देवहूरिति देवऽहूः। यज्ञः। आ। च। वक्षत्। सुम्नहूरिति

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सुम्नऽयूः। यद्वः। आ। च। वक्षत्। यक्षत्। अग्निः। देवः। देवान्। आ। च। वक्षत्॥६३॥
वाजस्य। मा। प्रसवइतिप्रऽसवः। उद्ग्राभेणेत्युत्ऽग्राभेण। उत्। अग्रभीत्। अध
सपत्नानिति सऽपत्नान्। इन्द्रः। मे। निग्राभेणेति निऽग्राभेण। अधरान्। अकरिति
अकः॥६४॥ उद्ग्राभमित्युत्ऽग्राभं। च। निग्राभमिति निऽग्राभं। च। ब्रह्म। देवाः।
६२ अवीवृधन्। अध। सपत्नानिति सऽपत्नान्। इन्द्राग्नी इतीन्द्राग्नी। मे। विषूचीनान्।
वि। अस्यतां॥६५॥ क्रमध्वं। अग्निना। नाकं। उख्यं। हस्तेषु। बिभ्रतः। दिवः। पृष्ठं। ६२
स्वः। गत्वा। मिश्राः। देवेभिः। आध्वं। प्राचीं। अनु। प्रदिशमिति प्रऽदिशं। प्र। इहि।
विद्वान्। अग्नेः। अग्ने। पुरोअग्निरिति पुरःऽअग्निः। भव। इह। विश्वाः। आशाः।
दीद्यानः। वि। भाहि। ऊर्जं। नः। धेहि। द्विपद इति द्विऽपदे। चतुष्पदे। चतुःपद इति

चतुःऽपदे॥६६॥ पृथिव्याः। अहं। उत्। अन्तरिक्षं। आ। अरुहं। अन्तरिक्षात्। दिवं।
आ। अरुहं। दिवः। नाकस्य। पृष्ठात्। स्वः। ज्योतिः। अगाम्। अहं॥६७॥ स्वः। यन्तः।
न। अप। ईक्षन्ते। आ। द्यां। रोहन्ति। रोदसी इति रोदसी। यज्ञं। ये। विश्वतोधारमि
ति विश्वतःऽधारं। सुविद्वांस इति सुऽविद्वांसः। वितेनिर इति विऽतेनिरे॥६८॥
अग्ने। प्र। इहि। प्रथमः। देवयतामिति देवऽयतां। चक्षुः। देवानां। उत। मर्त्यानां।
इयक्षमाणाः। भृगुभिरिति भृगुऽभिः। सजोषा इति सऽजोषाः। स्वः। यन्तु। यजमा
नाः। स्वस्ति॥६९॥ अग्ने। सहस्राक्षेति सहस्रऽअक्ष। शतमूर्द्धन्निति शतऽमूर्द्ध
न्। शतं। ते। प्राणाः। सहस्रं। व्याना इति विऽआनाः। त्वं। साहस्रस्य। रायः। ईशिषे।
तस्मै। ते। विधेम। वाजाय। स्वाहा॥७०॥ सुपर्ण इति सुऽपर्णः। असि। गरुत्मान्।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

पृष्ठे। पृथिव्याः। सीद। भासा। अन्तरिक्षं। आ। पृण। ज्योतिषा। दिवं। उत्। स्तभान।
तेजसा। दिशः। उत्। दृंह॥ ६७॥ आजुह्वानइत्याऽजुह्वानः। सुप्रतीकइतिसुऽप्रती
कः। पुरस्तात्। अग्ने। स्वं। योनिं। आ। सीद। साधुयेति साधुऽया॥ ६८॥ तां। सवि
तुः। वरेण्यस्य। चित्रां। आ। अहं। वृणे। सुमतिमिति सुऽमतिं। विश्वजन्यामिति वि
६४ श्वऽजन्यां। यां। अस्य। कण्वः। अदुहत्। प्रपीनामिति प्रऽपीनां। सहस्रधारामि ६४
ति सहस्रऽधारां। पयसा। महीं। गां॥ ६९॥ विधेम। ते। परमे। जन्मन्। अग्ने। वि
धेम। स्तोमैः। अवरे। सधस्थ इति सधऽस्थे। यस्मात्। योनेः। उदारिथेत्युत्। आ
रिथ। यजे। तं। प्र। त्वे इति त्वे। हवींषि। जुहुरे। समिद्ध इति संऽइद्धे॥ ७०॥ प्रेद्ध इ
ति प्रऽइद्धः। अग्ने। दीदिहि। पुरः। नः। अजस्रया। सूर्म्या। यविष्ठ। त्वां। शश्वंतः।

उपायंति। वाजाः॥ ७१॥ चित्तिं। जुहोमि। मनसा। घृतेन। यथा। देवाः। इह। आगमन्नित्याऽ
गमन्। वीतिहोत्रा इति वीतिऽहोत्राः। ऋतावृधः। ऋतवृध इत्यृतऽवृधः। पत्ये। विश्वस्य।
भूमनः। जुहोमि। विश्वकर्मण इति विश्वऽकर्मणे। विश्वाहा। अदाभ्यं। हविः॥ ७२॥ स
प्त। ते। अग्ने। समिध इति संऽइधः। सप्त। जिह्वाः। सप्त। ऋषयः। सप्त। धाम। प्रियाणि।
सप्त। होत्राः। सप्तधा। त्वा। यजंति। सप्त। योनीः। आ। पृणस्व। घृतेन। स्वाहा॥ ७३
शुक्रज्योतिरिति शुक्रऽज्योतिः। च। चित्रज्योतिरिति चित्रऽज्योतिः। सत्यज्योति
रिति सत्यऽज्योतिः। ज्योतिष्मान्। शुक्रः। ऋतपा इत्यृतऽपाः। अत्यंहा इत्यतिऽअं
हाः॥ ७४॥ ईदृङ्। अन्यादृङ्। सदृङ्ङिति सऽदृङ्। प्रतिसदृङ्ङिति प्रतिऽसदृङ्।
मितः। संमित इति संऽमितः। सभरा इति सऽभराः॥ ७५॥ ऋतजिदित्यृतऽजित्। सत्ये

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

जिदितिसत्यऽजित्।सेनजिदितिसेनऽजित्।सुषेणः।सुषेणइतिसुऽसेनः।अंति
मित्रइत्यंतिऽमित्रः।दूरेऽअमित्रइतिदूरेऽअमित्रः।गणः॥७९॥ऋतः।सत्यः।ध्रुवः।
धरुणः।धर्ता।विधर्तेतिविऽधर्ता।विधारयइतिविऽधारयः॥८०॥ईदृक्षासः।
एतादृक्षासः।ऊंइतिसु।सुनः।सदृक्षासइतिसऽदृक्षासः।प्रतिसदृक्षासइतिप्रति॒ऽ
६५ सदृक्षासः।आ।इतन।मितासः।संमितासइतिसंऽमितासः।नः।अद्य।सभरसइ ६५
तिसऽभरसः।मरुतः।यज्ञे।अस्मिन्॥८१॥स्वतवानितिस्वऽतवान्।प्रघासीति
प्रऽघासी।सांतपनइतिसांऽतपनः।गृहमेधीतिगृहऽमेधी।क्रीळी।शाकी।उज्जे
षीत्युत्ऽजेषी॥८२॥इंद्रं।दैवीः।विशः।मरुतः।अनुवर्त्मानइत्यनुऽवर्त्मानः।अ
भवन्।यथा।इंद्रं।दैवीः।विशः।मरुतः।अनुवर्त्मानइत्यनुऽवर्त्मानः।अभवन्।

एवं।इमं।यजमानं।दैवीः।च।विशः।मानुषीः।च।अनुवर्त्मानइत्यनुऽवर्त्मानः।भवंतु।
॥८०॥१७॥इतिपदपाठेअष्टादशोध्यायः॥१७॥१७॥१७॥हरिःॐ॥इमं।स्तनं।ऊर्ज
स्वंतं।धय।अपां।प्रपीनमितिप्रऽपीनं।अग्ने।सरिरस्य।मध्ये।उत्सं।जुषस्व।शत
धारमितिशतऽधारं।अर्वन्।समुद्रियं।सदनं।आ।विशस्व॥१॥घृतं।मिमिक्षे।घृ
तं।अस्य।योनिः।घृते।श्रितः।घृतं।ऊंइतिउ।अस्य।धाम।अनुष्वधमित्यनुऽस्वधं।आ।वह।मादयस्व।स्वाहाकृतमितिस्वाहाऽकृतं।वृषभ।वक्षि।हव्यं
॥२॥समुद्रात्।ऊर्मिः।मधुमानितिमधुऽमान्।उत्।आरत्।उप।अंशुना।सं।अ
मृतत्वमित्यमृतऽत्वं।आनट्।घृतस्य।नाम।गुह्यं।यत्।अस्ति।जिह्वा।देवानां।अ
मृतस्य।नाभिः॥३॥वयं।नाम।प्र।ब्रवाम।घृतस्य।अस्मिन्।यज्ञे।धारयाम।नमो

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

भिरितिनमःऽभिः।उप।ब्रह्म।शृणवत्।शस्यमानं।चतुःशृंगइतिचतुःऽशृंगः।अव
मीत्।गौरः।एतत्॥४॥चत्वारि।शृंगा।त्रयः।अस्य।पादाः।द्वेइतिद्वे।शीर्षेइतिशी
र्षे।सप्त।हस्तासः।अस्य।त्रिधा।बद्धः।वृषभः।रोरवीति।महः।देवः।मर्त्यान्।आ
विवेश॥५॥त्रिधा।हितं।पणिभिरितिपणिऽभिः।गुह्यमानं।गवि।देवासः।घृ
तं।अनु।अविंदन्।इंद्रः।एकं।सूर्यः।एकं।जजान।वेनात्।एकं।स्वधया।निः।
६६ ततक्षुः॥६॥एताः।अर्षंति।हृद्यात्।समुद्रात्।शतऽव्रजाइतिशतऽव्रजाः।रिपु ६६
णा।न।अवऽचक्षइत्यवऽचक्षे।घृतस्य।धाराः।अभि।चाकशीमि।हिरण्ययः।
वेतसः।मध्ये।आसां।एते।अर्षंति।ऊर्मयः।घृतस्य।मृगाःइवेतिमृगाःऽइव।क्षि
पणोः।ईषमाणाः॥७॥सिंधोरिवेतिसिंधोःऽइव।प्राध्वनइतिप्रऽअध्वने।शू

घनासः।वातप्रमियइतिवातऽप्रमियः।पतयंति।यह्वाः।घृतस्य।धाराः।अरुषः।न
वाजी।काष्ठाः।भिंदन्।ऊर्मिभिरित्यूर्मिऽभिः।पिन्वमानः॥८॥अभि।प्रवंत।समने
वेतिसमनाःऽइव।योषाः।कल्याण्यः।स्मयमानासः।अग्निं।घृतस्य।धाराः।समि
धइतिसंऽइधः।नसंत।ताः।जुषाणः।हर्यति।जातवेदाइतिजातऽवेदाः॥९॥कन्या
इवेतिकन्याःऽइव।वहतुं।एतवै।ऊँइत्यूँ।अंजि।अंजानाः।अभि।चाकशीमि।यत्र
सोमः।सूयते।यत्र।यज्ञः।घृतस्य।धाराः।अभि।तत्।पवंते॥१०॥अभि।अर्षत
सुष्टुतिं।सुस्तुतिमितिसुऽस्तुतिं।गव्यं।आजिं।अस्मासु।भद्रा।द्रविणानि।धत्त
इमं।यज्ञं।नयत।देवता।नः।घृतस्य।धाराः।मधुमदितिमधुऽमत्।पवंते॥११॥
धामन्।ते।विश्वं।भुवनं।अधि।श्रितं।अंतः।समुद्रे।हृदि।अंतः।आयु

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

षि। अपां। अनीके। समिथ इति सम्ऽइथे। युधः। आभृत इत्याऽभृतः। ऋतं। अश्यामा। मधु
मंतमिति मधुऽमंतं। तेऽऊर्मिं॥१२॥ वाजः। च। मे। प्रसव इति प्रऽसवः। प्रयतिरि
ति प्रऽयतिः। प्रसितिरिति प्रऽसितिः। धीतिः। क्रतुः। स्वरः। श्लोकः। श्रावः। श्रुतिः।
ज्योतिः। स्वरिति स्वः। च। मे। यज्ञेन। कल्पंतां॥१३॥ प्राणः। अपान इत्यपऽआ
नः। व्यान इति विऽआनः। असुः। चित्तं। आधीतमित्याऽधीतं। वाक्। मनः। चक्षुः। ६७
६७ श्रोत्रं। दक्षः। बलं॥१४॥ ओजः। सहः। आत्मा। तनूः। शर्म। वर्म। अंगानि। अस्थी
नि। परूंषि। शरीराणि। आयुः। जरा॥१५॥ ज्यैष्ठ्यं। आधिपत्यमित्याधिऽपत्यं।
मन्युः। भामः। अमः। अंभः। जेमा। महिमा। वरिमा। प्रथिमा। वर्षिमा। द्राघिमा।
वृद्धं। वृद्धिः॥१६॥ सत्यं। श्रद्धा। जगत्। धनं। विश्वं। महः। क्रीडा। मोदः। जातं। ज

निष्यमाणं। सूक्तमिति सुऽउक्तं। सुकृतमिति सुऽकृतं॥१७॥ वित्तं। वेद्यं। भूतं। भवि
ष्यत्। सुगमिति सुऽगं। सुपथ्यमिति सुऽपथ्यं। ऋद्धं। ऋद्धिः। क्लृप्तं। क्लृप्तिः। मतिः। सु
मतिरिति सुऽमतिः॥१८॥ यंता। धर्ता। क्षेमः। धृतिः। विश्वं। महः। संविदिति संऽवि
त्। ज्ञात्रं। सीरं। लयः। सूः। प्रसूरिति प्रऽसूः॥१९॥ शं। मयः। प्रियं। अनुकाम इत्यनु
ऽकामः। कामः। सौमनसः। भगः। द्रविणं। भद्रं। श्रेयः। वसीयः। यशः॥२०॥ ऊर्क्।
सूनृता। पयः। रसः। घृतं। मधु। सग्धिः। सपीतिरिति सऽपीतिः। कृषिः। वृष्टिः। जैत्रं।
औद्भिद्यमित्यौत्ऽभिद्यं॥२१॥ ऋतं। अमृतं। अयक्ष्मं। अनामयत्। जीवातुः।
दीर्घायुत्वमिति दीर्घायुऽत्वं। अनमित्रं। अभयं। सुगमिति सुऽगं। शयनं। सूषा इ
ति सुऽउषाः। सुदिनमिति सुऽदिनं॥२२॥ रयिः। रायः। पुष्टं। पुष्टिः। विभ्विति विऽ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

मुअभिवितिप्रऽमुपूर्णं।पूर्णतममितिपूर्णऽतमं।कुयवं।अक्षितं।अन्नं।अक्षुत्।
॥२३॥व्रीहयः।यवाः।माषाः।तिलाः।मुद्गाः।खल्वाः।प्रियंगवः।अणवः।श्यामा
काः।नीवाराः।गोधूमाः।मसूराः॥२४॥अश्मा।मृत्तिका।गिरयः।पर्वताः।सिकताः।
वनस्पतयः।हिरण्यं।अयः।सीसं।त्रपु।श्यामं।लोहं॥२५॥अग्निः।आपः।वी
रुधः।ओषधयः।कृष्टपच्या इति कृष्टऽपच्याः।अकृष्टपच्या इत्यकृष्टऽपच्याः।
६६ ग्राम्याः।पशवः।आरण्याः।वित्तं।वित्तिः।भूतं।भूतिः॥२६॥वसु।वसतिः।कर्म। ६६
शक्तिः।अर्थः।एमः।इत्यागतिः॥२७॥अग्निः।इंद्रः।सोमः।सविता।सरस्वती।
पूषा।बृहस्पतिः॥२८॥मित्रः।वरुणः।धाता।त्वष्टा।मरुतः।विश्वेदेवाः॥२९॥
पृथिवी।अंतरिक्षं।द्यौः।समाः।नक्षत्राणि।दिशः।इंद्रः॥३०॥अंशुः।रश्मिः

अदाभ्यः।अधिपतिरित्यधिऽपतिः।उपांशुरित्युपऽअंशुः।अंतर्याम इत्यंतःऽयामः।
ऐंद्रवायवः।मैत्रावरुणः।आश्विनः।प्रतिप्रस्थान इति प्रतिऽप्रस्थानः।शुक्रः।मंथी॥३१॥
आग्रयणः।वैश्वदेव इति वैश्वऽदेवः।ध्रुवः।वैश्वानरः।ऐंद्राग्नः।महावैश्वदेव इति महाऽ
वैश्वदेवः।मरुत्वतीयः।निष्केवल्यः।निःकेवल्य इति निःऽकेवल्यः।सावित्रः।सारस्व
तः।पात्नीवत इति पात्नीऽवतः।हारियोजन इति हारिऽयोजनः॥३२॥स्रुचः।चमसाः।
वायव्यानि।द्रोणकलश इति द्रोणऽकलशः।ग्रावाणः।अधिषवणे।अधिसव
न इत्यधिऽसवने।पूतभृदिति पूतऽभृत्।आधवनीय इत्याऽधवनीयः।वेदिः।बर्हिः।
स्वगाकार इति स्वगाऽकारः।अवभृथ इत्यवऽभृथः॥३३॥अग्निः।घर्मः।अर्कः।
सूर्यः।प्राणः।अश्वमेध इत्यश्वऽमेधः।पृथिवी।अदितिः।दितिः।द्यौः।अंगुलयः।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

शक्वरयः। दिशः॥२३॥ व्रतम्। ऋतवः। संवत्सरः। तपः। अहोरात्रे इत्यहोरात्रे। ऊर्व
ष्ठीवे इत्यूर्वष्ठीवे। बृहद्रथंतरे इति बृहत्ऽरथंतरे॥२४॥ एका। तिस्रः। पंच। सप्त।
नव। एकादश। त्रयोदशेति त्रयःऽदश। पंचदशेति पंचऽदश। सप्तदशेति सप्तऽ
दश। नवदशेति नवऽदश। एकविंशतिरित्येकऽविंशतिः। त्रयोविंशतिरि
ति त्रयःऽविंशतिः। पंचविंशतिरिति पंचऽविंशतिः। सप्तविंशतिरिति ६९
सप्तऽविंशतिः। नवविंशतिरिति नवऽविंशतिः। एकत्रिंशदित्येकऽत्रि
ंशत्। त्रयस्त्रिंशदिति त्रयःऽत्रिंशत्॥२५॥ चतस्रः। अष्टौ। द्वादश। षो
डश। विंशतिः। चतुर्विंशतिरिति चतुःऽविंशतिः। अष्टाविंशतिरित्यष्टऽवि
ंशतिः। द्वात्रिंशत्। षट्त्रिंशदिति षट्ऽत्रिंशत्। चत्वारिंशत्। चतुश्च

त्वारिंशदिति चतुःऽचत्वारिंशत्। अष्टाचत्वारिंशदित्यष्टाऽचत्वारिंश
त्॥२६॥ त्र्यविरिति त्रिऽअविः। त्र्यवीति त्रिऽअवी। दित्यवाडिति दित्यऽवाट्।
दित्यौही। पंचाविरिति पंचऽअविः। पंचावीति पंचऽअवी। त्रिवत्स इति त्रिऽ
वत्सः। त्रिवत्सेति त्रिऽवत्सा। तुर्यवाडिति तुर्यऽवाट्। तुर्यौही॥२७॥ पष्ठवाडि
ति पष्ठऽवाट्। पष्ठौही। उक्षा। वशा। ऋषभः। वेहत्। अनड्वान्। धेनुः। च। मे। यज्ञे
न। कल्पंताम्॥२८॥ वाजाय। स्वाहा। प्रसवायेति प्रऽसवाय। अपिजायेत्यपिऽजा
य। क्रतवे। वसवे। अहर्पतये। अहःपतय इत्यहःऽपतये। अन्हे। मुग्धाय। मुग्धा
य। वैनंशिनाय। विनंशिन इति विऽनंशिने। आंत्यायनायेत्यांत्यऽआ
यनाय। अंत्याय। भौवनाय। भुवनस्य। पतये। अधिपतय इत्यधिऽपतये। प्रजा

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

पतयइतिप्रजाऽपतये॥ ॥इयंते।राट्।मित्राय।यंता।असि।यमनः।ऊर्जे।त्वा।वृ
ष्ट्यै।त्वा।प्रजानामितिप्रऽजानां।त्वा।आधिपत्यायेत्याधिऽपत्याय॥४०॥आयुः।
यज्ञेन।कल्पतां।प्राणः।चक्षुः।श्रोत्रं।वाक्।मनः।आत्मा।पृष्ठं।ब्रह्म।यज्ञः।ज्योतिः।स्वः।
यज्ञेन।कल्पतां॥४१॥स्तोमः।यजुः।ऋक्।साम।बृहत्।रथंतरमितिरथंऽतरं।च।
७० स्वः।देवाः।अगन्म।अमृताः।अभूम।प्रजापतेरितिप्रजाऽपतेः।प्रजाइतिप्रऽजाः।अ ७०
भूम।वेट्।स्वाहा॥४२॥इतिपदपाठेएकोनविंशतिमोध्यायः॥७॥७॥७॥७॥
हरिः ॐ॥वाजस्यनु॥१॥विश्वे।अद्य।मरुतः।विश्वे।ऊती।विश्वे।भवंतु।अग्नयः।
समिद्धाइतिसंऽइद्धाः।विश्वे।नः।देवाः।अवसा।आ।गमंतु।विश्वं।अस्तु।द्रविणं।
वाजः।अस्मेइत्यस्मे॥२॥वाजः।नः।सप्त।प्रदिशाइतिप्रऽदिशः।चतस्रः।वा।परा

वतइतिपराऽवतः।वाजः।नः।विश्वैः।देवैः।धनसातावितिधनऽसातौ।इह।अवतु॥३॥वा
जः।नः।अद्य।प्र।सुवाति।दानं।वाजः।देवान्।ऋतुभिरित्यृतुऽभिः।कल्पयाति।वाजः।
हि।मा।सर्ववीरमितिसर्वऽवीरं।चकार।सर्वाः।आशाः।वाजपतिरितिवाजऽपतिः।
भवेयं॥४॥वाजः।पुरस्तात्।उत।मध्यतः।नः।वाजः।देवान्।हविषा।वर्द्धयाति।वा
जः।हि।मा।सर्ववीरमितिसर्वऽवीरं।चकार।विश्वाः।आशाः।वाजपतिरितिवाजऽ
पतिः।जयेयं॥५॥सं।मा।सृजामि।पयसा।पृथिव्याः।सं।मा।सृजामि।अद्भिरि
त्यत्ऽभिः।ओषधीभिः।सः।अहं।वाजं।सनेयं।अग्ने॥६॥पयः।पृथिव्यां।पयः।
ओषधीषु।पयः।दिवि।अंतरिक्षे।पयः।धाः।पयस्वतीः।प्रदिशइतिप्रऽदिशः।सं
तु।मह्यं।सरस्वत्यै।वाचः।यंतुः।यंत्रेण।अग्नेः।साम्राज्येनेतिसांऽराज्येन।अभि

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सिंचामि॥ ७॥ ऋताषाट्। ऋतधामेत्यृतऽधामा। अग्निः। गंधर्वः। तस्य। ओषध
यः। अप्सरसः। मुदः। नाम। सः। नः। इदं। ब्रह्म। क्षत्रं। पातु। तस्मै। स्वाहा। वाट्।
ताभ्यः। स्वाहा॥ ८॥ संहित इति संऽहितः। विश्वसामेति विश्वऽसामा। सूर्यः।
गंधर्वः। तस्य। मरीचयः। अप्सरसः। आयुवः। नाम॥ ९॥ सुषुम्णः। सुषुम्ण इति
सुऽसुम्नः। सूर्यरश्मिरिति सूर्यऽरश्मिः। चंद्रमाः। गंधर्वः। तस्य। नक्षत्राणि। अ ७१
७१ प्सरसः। नाम। भेकुरयः। नाम॥ १०॥ इषिरः। विश्वव्यचा इति विश्वऽव्यचाः। वा
तः। गंधर्वः। तस्य। आपः। अप्सरसः। ऊर्जः। नाम॥ ११॥ भुज्युः। सुपर्ण इति सु
पर्णः। यज्ञः। गंधर्वः। तस्य। दक्षिणाः। अप्सरसः। स्तावाः। नाम॥ १२॥ प्रजाप
तिरिति प्रजाऽपतिः। विश्वकर्मेति विश्वऽकर्मा। मनः। गंधर्वः। तस्य। ऋक्सा

मानीत्यृक्ऽसामानि। अप्सरसः। एष्टयः इत्याऽइष्टयः। नाम॥ १३॥ सः। नः। भुवनस्य।
पते। प्रजापत इति प्रजाऽपते। यस्य। ते। उपरि। गृहाः। यस्य। वा। इह। अस्मै। ब्रह्म
णे। क्षत्राय। महि। शर्म। यच्छ। स्वाहा॥ १४॥ समुद्रः। असि। नभस्वान्। आर्द्रदानु
रित्यार्द्रऽदानुः। शंभूरिति शंऽभूः। मयोभूरिति मयःऽभूः। अभि। मा। वाहि। स्वा
हा। मारुतः। मरुतां। गणः। अवस्युः। दुवस्वान्॥ १५॥ यास्ते॥ १६॥ यावः॥ १७
रुचं। नः। धेहि। ब्राह्मणेषु। रुचं। राजस्विति राजऽसु। नः। कृधि। रुचं। विश्येषु।
शूद्रेषु। मयि। धेहि। रुचा। रुचं॥ १८॥ तत्। त्वा। यामि। ब्रह्मणा। वंदमानः। तत्।
आ। शास्ते। यजमानः। हविर्भिरिति हविःऽभिः। अहेळमानः। वरुण। इह। बो
धि। उरुशंसेत्युरुऽशंस। मा। नः। आयुः। प्र। मोषीः॥ १९॥ स्वः। न। घर्मः। अर्कः।

शुक्रः। ज्योतिः। सूर्यः। स्वाहा॥२०॥ अग्निं। युनज्मि। शवसा। घृतेन। दिव्यं। सुपर्णमिति सु
पर्णं। वयसा। बृहंतं। तेन। गमेम। ब्रध्नस्य। विष्टपं। स्वरिति स्वः। रुहाणाः। अधि। नाकं।
उत्तममित्युत्ऽतमं॥२१॥ इमौ। ते। पक्षौ। अजरौ। पतत्रिणः। याभ्यां। रक्षांऽसि। अपह
ंसीत्यपऽहंऽसि। अग्ने। ताभ्यां। पतेम। सुकृतामिति सुऽकृतां। ऊँ इत्यूँ। लोकं। यत्र। ऋ
षयः। जग्मुः। प्रथमजा इति प्रथमऽजाः। पुराणाः॥२२॥ इंदुः। दक्षः। श्येनः। ऋतावा। ऋत
७२ वेत्यृतऽवा। हिरण्यपक्ष इति हिरण्यऽपक्षः। शकुनः। भुरण्युः। महान्। सधस्थ इति स ७२
धऽस्थे। ध्रुवः। आ। निषत्त इति निऽसत्तः। नमः। ते। अस्तु। मा। मा। हिंसीः॥
॥२३॥ दिवः। मूर्द्धा। असि। पृथिव्याः। नाभिः। ऊर्क्। अपां। ओषधीनां। विश्वायुरिति
विश्वऽआयुः। शर्म। सप्रथा इति सऽप्रथाः। नमः। पथे॥२४॥ विश्वस्य। मूर्द्धन्। अधि।

तिष्ठसि। श्रितः। समुद्रे। ते। हृदयं। अप्स्वित्यप्ऽसु। आयुः। अपः। दत्त। उदधि
मित्युदऽधिं। भिंत। दिवः। पर्जन्यात्। अंतरिक्षात्। पृथिव्याः। ततः। नः। वृष्ट्या।
अव॥२५॥ इष्टः। यज्ञः। भृगुभिरिति भृगुऽभिः। आशीर्दा इत्याशीःऽदाः। व
सुभिरिति वसुऽभिः। तस्य। नः। इष्टस्य। प्रीतस्य। द्रविणा। इह। आ। गमेः॥२६॥
इष्टः। अग्निः। आहुत इत्याऽहुतः। पिपर्तु। नः। इष्टं। हविः। स्वगेति स्वऽगा। इ
दं। देवेभ्यः। नमः॥२७॥ यत्। आकूतादित्याऽकूतात्। समसुस्रोदिति संऽअ
सुस्रोत्। हृदः। वा। मनसः। वा। संभृतमिति संऽभृतं। चक्षुषः। वा। तत्। अनु
प्रेतेत्यनुऽप्रेत। सुकृतामिति सुऽकृतां। ऊँ इत्यूँ। लोकं। यत्र। ऋषयः। जग्मुः।
प्रथमजा इति प्रथमऽजाः। पुराणाः॥२८॥ एतं। सधस्थेति सधऽस्थ। परि।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तो द्रष्टामित्यं। आवह। दित्या ऽवहान्। त्रोव धि मि ति त्रोवः ऽधिं। जातवेदा इति
जातः ऽवेदाः। अन्वागंतेत्यनु ऽआगंता। यज्ञपतिरिति यज्ञ ऽपतिः। वः। अत्र।
तं। स्म। जानीत। परमे। व्योमन्निति वि ऽओमन्। १९। एतं। जानाथ। परमे।
व्योमन्निति वि ऽओमन्। देवाः। सधस्था इति सध ऽस्थाः। विद। रूपं। अस्य।
यत्। आगच्छादित्या ऽगच्छात्। पथिभिरिति पथि ऽभिः। देवयानैरिति दे
७२ व ऽयानैः। इष्टापूर्त्ते इतीष्टा ऽपूर्त्ते। कृणवथ। आविः। अस्मै। २०। उद्बुध्यस्व ७२
२१। येन वहसि। २२। प्रस्तरेणेति प्र ऽस्तरेण। परिधिनेति परि ऽधिना।
स्रुचा। वेद्या। च। बर्हिषि। अस्वा। इमं। यज्ञं। नः। नय। स्वः। देवेषु। गंतवे।
२३। यत्। दत्तं। यत्। परादानमिति परा ऽदानं। यत्। पूर्त्तं। याः। च। दक्षिणाः।

तत्। अग्निः। वैश्वकर्मणा इति वैश्व ऽकर्मणः। स्वः। देवेषु। नः। दधत्। २४
यत्र। धाराः। अनपेता इत्यनप ऽइताः। मधोः। घृतस्य। च। याः। तत्। अग्निः।
वैश्वकर्मण इति वैश्व ऽकर्मणः। स्वः। देवेषु। नः। दधत्। २५। ये। अग्नयः। पां
चजन्या इति पांच ऽजन्याः। अस्यां। पृथिव्यां। अधि। तेषां। असि। त्वं। उत्
म इत्युत् ऽतमः। प्र। नः। जीवातवे। सुव। २६। वार्त्रहत्यायेति वार्त्र ऽहत्या
य। शवसे। पृतनाषाह्याय। पृतनासह्यायेति पृतनो ऽसह्याय। च। इंद्र
त्वा। आ। वर्त्तयामसि। २७। सहदानुमिति सह ऽदानुं। पुरुहूतेति पुरु ऽहू
त। क्षियंतं। अहस्तं। इंद्र। सं। पिणक्। कुणारुं। अभि। वृत्रं। वर्द्धमानं। पि
यारुं। अपादं। इंद्र। तवसा। जघंथ। २८। वि। नः। २९। मृगः। न। भीमः। कुच

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

रः। गिरिऽस्थाः। गिरिस्था इति गिरिऽस्थाः। परावतऽइति पराऽवतः। आ। जग
थ। परस्याः॥ सृकं। संऽशाय। इति संऽशाय। पविं। इंद्र। तिग्मं। वि। शत्रून्। ऽ
ताळ्हि। वि। मृधः। नुदस्व॥४०॥ वैश्वानरः। नः। ऊतये। आ। प्र। यातु। परा
वतऽइति पराऽवतः। अग्निः। नः। सुष्टुतीः। सुस्तुतीरिति सुऽस्तुतीः। उप॥४१
७४ पृष्टः। दिवि। पृष्टः। अग्निः। पृथिव्यां। पृष्टः। विश्वाः। ओषधीः। आ। विवे ७४
श। वैश्वानरः। सहसा। पृष्टः। अग्निः। सः। नः। दिवा। सः। रिषः। पातु। नक्तं॥
४२॥ अश्याम। ते। कामं। अग्ने। तव। ऊती। अश्याम। रयिं। रयिवऽइति रयि
वः। सुवीरमिति सुऽवीरं। अश्याम। वाजं। अभि। वाजयंतः। अश्याम। द्युम्नं।
अजर। अजरं। ते॥४३॥ वयं। ते। अद्य। ररिम। हि। कामं। उत्तानहस्ताऽइत्यु

त्तानऽहस्ताः। नमसा। उपऽसद्य। इत्युपऽसद्य। यजिष्ठेन। मनसा। यक्षि। देवान्। अ
स्रेधता। मन्मना। विप्रः। अग्ने॥४४॥ धामऽछत् इति धामऽछत्। अग्निः। इंद्रः। ब्र
ह्मा। देवः। बृहस्पतिः। सऽचेतसः इति सऽचेतसः। विश्वे। देवाः। यज्ञं। प्र। अवंतु। नः।
शुभे॥४५॥ त्वं। यविष्ठ॥४६॥ इति पदपाटे विंशतिमो ध्यायः॥छ॥छ॥छ॥छ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=22.07.19 13:46
,TRANSFERRED=2019/07/22 at 14:18:51
,PAGES=76
,TYPE=STD
,NAME=S0001067
,Book Name=M-1970-SHUKLAYJUVEDKANV PADPATH CHAPTER 11-20
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF
,FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE27=00000027.TIF
,FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF
,FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF
,FILE32=00000032.TIF
,FILE33=00000033.TIF
,FILE34=00000034.TIF
,FILE35=00000035.TIF
,FILE36=00000036.TIF
,FILE37=00000037.TIF
,FILE38=00000038.TIF
,FILE39=00000039.TIF
,FILE40=00000040.TIF
,FILE41=00000041.TIF
,FILE42=00000042.TIF
,FILE43=00000043.TIF
,FILE44=00000044.TIF
,FILE45=00000045.TIF
,FILE46=00000046.TIF
,FILE47=00000047.TIF
,FILE48=00000048.TIF
,FILE49=00000049.TIF
,FILE50=00000050.TIF
,FILE51=00000051.TIF
,FILE52=00000052.TIF
,FILE53=00000053.TIF
,FILE54=00000054.TIF
,FILE55=00000055.TIF
,FILE56=00000056.TIF
,FILE57=00000057.TIF
,FILE58=00000058.TIF
,FILE59=00000059.TIF
,FILE60=00000060.TIF
,FILE61=00000061.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE62=00000062.TIF
,FILE63=00000063.TIF
,FILE64=00000064.TIF
,FILE65=00000065.TIF
,FILE66=00000066.TIF
,FILE67=00000067.TIF
,FILE68=00000068.TIF
,FILE69=00000069.TIF
,FILE70=00000070.TIF
,FILE71=00000071.TIF
,FILE72=00000072.TIF
,FILE73=00000073.TIF
,FILE74=00000074.TIF
,FILE75=00000075.TIF
,FILE76=00000076.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection